भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 315 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार 10 नवम्बर 2021 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

राजस्थान से अपहरण कर मथुरा और बरेली में रेप, धर्म परिवर्तन की कोशिश

बरेली, एजेंसी)। एक युवक ने अपने दोस्तों के साथ राजस्थान से युवती को अगवा कर लिया। मथुरा में कमरा लेकर उसे बंधक बनाकर रखा। उसके साथ रेप किया। जबरदस्ती धर्म परिवर्तन कराने की कोशिश की। उनके चंगुल से छूटने के बाद युवती ने मामले की शिकायत पुलिस से की लेकिन कार्रवाई नहीं हुई। इसके बाद युवती ने कोर्ट में शिकायत की। कोर्ट के आदेश पर कैंट थाने में मुकदमा दर्ज किया गया है। कैंट इलाके की रहने वाली युवती जून 2020 में अपने परिवार के साथ राजस्थान के भिवाड़ी अलवर में गई थी। युवती जिस मकान में रहती थी। उसी मकान में मथुरा का दिनेश भी रहता था। युवती का आरोप है कि दिनेश उसके साथ आये दिन छेड़खानी करता था। दिनेश ने अपने दोस्तों के साथ युवती का राजस्थान से अपहरण कर लिया। वह उसे लेकर अपने घर मथुरा गया। वहां पर दिनेश के पिता पप्पू, मां बीना और भाई गौरव ने जबरदस्ती युवती का धर्म परिवर्तन कराने की कोशिश की।

एसकेएम ने किया ऐलान

शीत सत्र के हर दिन 500 किसान संसद तक निकालेंगे ट्रैक्टर रैली

नई दिल्ली, एजेंसी)। संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान किसान आंदोलन और जोर पकड़ने वाला है। मंगलवार को संयुक्त किसान मोर्चा ने ऐला किया कि 29 नवंबर से शुरू हो रहे शीतकालीन सत्र की शुरूआत के साथ ही हर दिन 500 किसान ट्रैक्टर और ट्रॉलियों के साथ संसद तक रैली निकालेंगे।

संयुक्त किसान मोर्चे की ओर से जारी बयान में कहा गया, '29 नवंबर से संसद का शीतकालीन सत्र शुरू हो रहा है। संयुक्त किसान मोर्चा ने यह फैसला लिया है कि 29 नवंबर से लेकर सत्र के अंत तक हर दिन 500 चयनित

किसान ट्रैक्टर और ट्रॉलियों के साथ संसद तक रैली निकालेंगे। यह रैली पूरी तरह से अनुशासित और शांतिपूर्ण होगी।

संयुक्त किसान मोर्चे में शामिल तमाम संगठनों के नेताओं की मंगलवार को सिंघु बॉर्डर में मीटिंग हुई, जिसमें यह फैसला लिया गया। इसके अलावा 26 नवंबर को किसान आंदोलन के एक साल पूरा होने के मौके पर देश भर में, राज्यों की सीमाओं पर और दिल्ली में प्रदर्शन किए जाएंगे। संयुक्त किसान मोर्चा ने कहा कि इस मौके पर पंजाब, हरियाणा, यूपी, उत्तराखंड, राजस्थान समेत कई राज्यों के किसान दिल्ली बॉर्डर की ओर कूच करेंगे। किसान संगठनों के ऐलान से साफ है कि नवंबर के आखिरी सप्ताह और शीतकालीन सत्र के दौरान दिल्ली और आसपास के इलाकों में आंदोलन का असर देखने को मिल सकता है।

इसके चलते दिल्ली-एनसीआर, हरियाणा, पंजाब, पश्चिम यूपी में सड़कों पर जाम और रेल ट्रैफिक बाधित होने की आशंका है। गौरतलब है कि बीते एक साल से जारी किसान आंदोलन का अब तक कोई हल नहीं निकल सका है। भारतीय किसान यूनियन के राकेश टिकैत समेत कई नेता यह दोहरा चुके हैं कि वे तीन नए कृषि कानूनों की वापसी और एमएसपी कानून लागू हुए बिना वापस नहीं लौटेंगे। बता दें कि किसान आंदोलनकारियों की हरियाणा के कई इलाकों में भाजपा नेताओं से झड़प के मामले भी सामने आए हैं।

दिल्ली में डेंगू हो रहा बेकाबू? एचसी ने नॉर्थ एमसीडी और आप सरकार को भेजे नोटिस

नई दिल्ली, एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने डेंगू को फैलने से रोकने के लिए दायर याचिका पर मंगलवार को उत्तरी दिल्ली नगर निगम को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। याचिका में अदालत से अनुरोध किया गया है कि स्थानीय इलाके में डेंगू को फैलने से रोकने के लिए नियमित रूप से धुआं छोड़ने, मच्छरों को पनपने से रोकने के लिए जांच टीम बनाने और नियमों का उल्लंघन करने वालों पर जुमार्ना लगाने जैसे उपाय करने के निर्देश प्राधिकारियों को दिए जाएं। जस्टिस रेखा पल्ली की एकल पीठ ने डेंगू से पीड़ित मॉडल टाउन निवासी अनन्य कुमार की याचिका पर यह नोटिस जारी किया। अदालत ने अधिकारियों को इस मामले में एक सप्ताह के भीतर स्थिति रिपोर्ट सौंपने का निर्देश दिया है। इस याचिका पर अब 18 नवंबर को आगे सुनवाई होगी। याचिका में कहा गया है कि उक्त क्षेत्र में डेंगू का प्रकोप है और अधिकारियों की लापरवाही के कारण हर दिन कई मामले सामने आ रहे हैं तथा अस्पताल के बिस्तर जल्दी भर रहे हैं। कुमार ने याचिका के माध्यम से अनुरोध किया है कि उसके घर के आसपास के इलाके में डेंगू को फैलने से रोकने के लिए उचित कदम उठाए जाएं तथा क्षेत्र में नियमित धुआं छोड़ा जाए, घर-घर जागरूकता अभियान चलाया जाए, इलाके में डेंगू के मच्छर पनपने से रोकने के लिए टीमें बनाने और नियमों का उल्लंघन करने वालों पर जुमार्ना लगाने के निर्देश दिए जाएं।

आज से शुरू होगा कानपुर मेट्रो का ट्रायल रन, सीएम योगी करेंगे शुभारंभ

कानपुर, एजेंसी)। आखिरकार वो घड़ी आ ही गई जिसका हर किसी को इंतजार था। बुधवार सुबह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मेट्रो डिपो में बटन दबाकर ट्रायल रन का शुभारंभ करेंगे। आयोजन को भव्य बनाने के लिए डिपो परिसर को फूल-मालाओं से सजाया गया है। सीएम योगी आदित्यनाथ सुबह 9:50 बजे कानपुर पहुंचेंगे। इसके बाद मेट्रो ट्रेन का निरीक्षण कर बाहर बने मंच पर आकर बटन दबाएंगे। इस दौरान यूपीएमआरसी यूपीएमआरसी के चेयरमैन एवं केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय के सचिव दुर्गा शंकर मिश्र, प्रदेश के प्रमुख सचिव आवास एवं नगर नियोजन दीपक कुमार और यूपी मेट्रो के प्रबंध निदेशक कुमार केशव भी मौजूद रहेंगे। मंगलवार को ट्रेन की फाइनल टेस्टिंग यार्ड में ही बने उन रेल लाइनों पर हुई जिनकी अभी तक टेस्टिंग नहीं हुई थी। एलीवेटेड ट्रैक पर अब सीधे ट्रायल रन ही होगा। सारी तैयारियां पूरी कर ली गईं हैं।

शुभारंभ के बाद भी छह हफ्ते तक मेट्रो ट्रेन का ट्रायल रिसर्च डिजाइन स्टैंडर्स ऑगेर्नाइजेशन (आरडीएसओ) के साथ जारी रहेगा। इस समयावधि में ट्रेन के सस्पेंशन और परिचालन के दौरान ट्रेन की बॉडी में आने वाले वाइब्रेशन, ब्रेक्स और गति आदि के संबंध में परीक्षण होगा। परीक्षण पूरा होने के बाद मुख्य रेल संरक्षा आयुक्त से अनुमोदन प्राप्त करने की कवायद होगी।

यूपी के बदायूं जिले का भी बदलेगा नाम? सीएम योगी आदित्यनाथ बोले- पहले कहा जाता वेदामऊ

बदायूं, एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में अब तक कई शहरों और रेलवे स्टेशनों के नाम तब्दील किए जा चुके हैं। अब शायद पश्चिम यूपी के बदायूं जिले का नाम सीएम योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली सरकार की ओर से बदला जा सकता है। मंगलवार को बदायूं में ही एक कार्यक्रम के दौरान सीएम योगी आदित्यनाथ ने इस बात के संकेत दे दिए। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल में बदायूं को वेदामऊ नाम से जाना जाता था और यहां वेदों का अध्ययन हुआ करता था।

भाजपा बताए कि नोटबंदी से देश को क्या फायदा हुआ : अखिलेश यादव

लखनऊ, एजेंसी)। समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा बताए आखिर नोटबंदी से देश को क्या मिला? जिस नोटबंदी को मास्टरस्ट्रोक बताया गया था, वह ब्रेन स्ट्रोक साबित हुआ और जनता को परेशान करने के लिए जानबूझकर नोटबंदी की गई थी। अब जनता अगले साल चुनाव में वोटबंदी कर भाजपा का सफाया करेगी। अखिलेश यादव ने यह बात मंगलवार को सपा मुख्यालय में प्रेस कांफ्रेंस कर कही। सपा प्रमुख ने कहा कि नोटबंदी के कारण बड़ी संख्या में नौजवानों, व्यापारियों और किसानों ने आत्महत्या की है। सरकार ने बड़े लोगों को फायदा पहुंचाने के लिए नोटबंदी की।

मायावती ने सीएम योगी से की खुद की तुलना, कहा-

मेरा भी अपना खुद का परिवार नहीं

लखनऊ, एजेंसी)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) अध्यक्ष मायावती ने मंगलवार को उत्तर प्रदेश में सत्तारूढ़ भाजपा और मुख्य विपक्षी दल सपा पर मिलीभगत का आरोप लगाते हुए कहा कि इन दोनों ही पार्टियों की राजनीति हमेशा एक दूसरे की पूरक रही है। मायावती ने खुद की तुलना सीएम योगी से करते हुए कहा कि योगी जी को मैं बता देना चाहती हूं कि आप की तरह मेरा अपना परिवार खुद का नहीं है, उन्होंने दिखावा करने के लिए सन्यासी होने का चोला पहन लिया है लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया, हमने अपनी सरकार में सभी धर्म के लोगों को ज्यादा ध्यान दिया है, योगी जी ने एक धर्म के लोगों के कुछ विशेष जातियों का ध्यान रखा है। लखनऊ में आयोजित पत्रकार वार्ता में

मायावती ने कहा कि अभी मैं पार्टी में काम करने के लिए स्वस्थ हूं। समय आएगा तब उत्तराधिकारी कौन होगा। इसका जवाब भी मिल जाएगा। अभी लोग चाहते हैं,कि पाँचवीं बार वो मुझे मुख्यमंत्री बनाये। मायावती ने आरोप लगाया कि भाजपा खासकर उत्तर प्रदेश में अपनी सरकार की घोर विफलताओं पर पर्दा डालने और ध्यान बंटाने के लिए सपा से अंदरूनी मिलीभगत और सांठगांठ करके जिन्ना और अयोध्या पुलिस गोलीबारी जैसे अनेक अन्य नए-नए गढ़े हुए सांप्रदायिक और धार्मिक मुद्दों को उठाने का पूरा प्रयास कर रही है।

सामूहिक बलात्कार के मामले में गायत्री प्रजापति पर फैसला आज

लखनऊ, एजेंसी)। लखनऊ के गौतमपल्ली थाने से संबंधित सामूहिक दुराचार के मामले में पूर्व खनन मंत्री गायत्री प्रसाद प्रजापति सहित सात लोगों पर एमपी/एमएलए कोर्ट के विशेष न्यायाधीश पवन कुमार राय 10 नवंबर को अपना फैसला सुनाएंगे। इस मामले में सभी आरोपी जेल में हैं।

मंगलवार को मामले की सुनवाई के समय कुछ आरोपियों की ओर से लिखित बहस दाखिल की जानी थी। इसी दौरान आरोपी गायत्री प्रसाद प्रजापति की ओर से एक स्थगन प्रार्थना पत्र देकर मुकदमे की तिथि बढ़ाए जाने का अनुरोध किया गया। इस अर्जी में कहा गया है कि मुकदमे को किसी दूसरे प्रदेश में स्थानांतरित किए जाने की मांग को लेकर उच्चतम न्यायालय में विशेष अनुमति याचिका दायर की गई है। इसके अलावा यह भी कहा गया था कि इस न्यायालय के उस आदेश को उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ में चुनौती दी गई है जिसमें बचाव साक्ष्य पेश करने की अर्जी को खारिज कर दिया गया था।

वहीं दूसरी ओर 8 नवंबर को अभियोजन की ओर से सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता एसएन राय ने एक प्रार्थना पत्र देकर न्यायालय से अनुरोध किया था कि गवाह अंशु गौड़ ने अपने बयान में स्पष्ट कहा है कि पीड़िता को कई प्लाटों की रजिस्ट्री एवं नगद धनराशि का प्रलोभन देकर न्यायालय के समक्ष सही गवाही न देने के लिए राजी किया गया है। लिहाजा, अदालत रजिस्ट्री को साबित करने के लिए रजिस्ट्रार लखनऊ एवं पीड़िता द्वारा दिल्ली की एक अदालत में दिए गए कलम बन्द बयान को तलब करने का आदेश दिया, क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं।

पत्रावली के अनुसार 18 फरवरी, 2017 को सुप्रीमकोर्ट के आदेश पर गायत्री प्रसाद प्रजापति, विकास वर्मा, अमरेंद्र सिंह,चंद्रपाल, रूपेश्वर एवं अशोक तिवारी के विरुद्ध राजधानी के गौतमपल्ली थाने पर सामूहिक बलात्कार एवं जानमाल की धमकी के अलावा पॉक्सो एक्ट के आरोपों में मुकदमा दर्ज हुआ था। सुप्रीमकोर्ट ने यह आदेश पीड़िता की अर्जी पर दिया था। जिसमें पीड़िता ने पूर्व खनन मंत्री गायत्री प्रजापति समेत उसके साथियों पर गैंगेरप एवं उसकी नाबालिग बेटी के साथ दुष्कर्म के प्रयास करने का आरोप लगाया था।

सिद्धू के आगे चन्नी ने डाले हथियार, एजी का इस्तीफा मंजूर, डीजीपी भी बदलने की तैयारी

नई दिल्ली, एजेंसी)। पंजाब की चरणजीत सिंह चन्नी सरकार ने राज्य के महाधिवक्ता अमर प्रीत सिंह देओल का इस्तीफा मंजूर कर लिया है। महाधिवक्ता के इस्तीफे के बाद अब पुलिस महानिदेशक को भी बदलने की तैयारी शुरू हो गई है। बता दें कि पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू ने देओल की नियुक्ति का पुरजोर तरीके से विरोध किया था। जिसके देओल ने 1 नवंबर को इस्तीफा दे दिया था। जिसे अब मंजूरी किया गया है। पंजाब सरकार ने 27 सितंबर को देओल को राज्य का महाधिवक्ता नियुक्त किया था। सरकारी नियुक्तियों को लेकर पंजाब पीसीसी चीफ नवजोत सिंह सिद्धू और सीएम चरणजीत सिंह चन्नी के बीच शुरू से ही तनातनी चल रही है। कई बार सार्वजनिक तौर सिद्ध प्रदेश सरकार के खिलाफ नाराजगी जाहिर कर चुके हैं। यही विवाद कांग्रेस पार्टी के लिए सिरदर्द बना हुआ है। सिद्धू अपनी सरकार और पार्टी को निशाने पर लेने का कोई मौका नहीं छोड़ते।

प्रवक्ता और मीडिया संयोजकों के लिए परीक्षा लेगी कांग्रेस, बनें यूपी की आवाज नाम से होगा कंपीटिशन

लखनऊ, एजेंसी)। कांग्रेस प्रदेश में युवाओं को जोड़ने के लिए नया अभियान चलाएगी। बनें यूपी की आवाज अभियान के तहत जिला स्तर पर प्रवक्ता और मीडिया कोआर्डिनेटर चुने जाएंगे। यह जानकारी प्रदेश कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन व पूर्व मंत्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी ने दी। इस अभियान के संयोजक प्रदेश प्रवक्ता डा. उमाशंकर पाण्डेय होंगे। लखनऊ मंडल की तारीखों की घोषणा कर दी गई हैं, बाकी की तारीखों की घोषणा डॉ. पाण्डेय करेंगे। पत्रकारों से बात करते हुए नसीमुद्दीन सिद्दीकी ने कहा कि महासचिव प्रियंका गांधी बराबर अन्याय के खिलाफ संघर्षरत हैं। उनके इस तेवर से युवा पार्टी से जुड़ना चाहते हैं। इस अभियान के जरिए अनुभवी कांग्रेसजनों के साथ-साथ युवाओं को प्रवक्ता और मीडिया कोआर्डिनेटर की ज़िम्मेदारी सौंपेगी। योग्यता, क्षमता एवं जनसंपर्क उनके चयन का आधार होगा। इसके लिए जिला स्तर पर लिखित व मौखिक परीक्षा ली जाएगी।

लखनऊ मण्डल से इसकी शुरूआत की जाएगी। 15 नवम्बर को उन्नाव में पहली परीक्षा व साक्षात्कार का आयोजन किया जाएगा। 16 नवम्बर को लखनऊ, 17 को सीतापुर, 18 को हरदोई, 20 को रायबरेली और 21 नवंबर को लखीमपुर में परीक्षा आयोजित की जाएगी। जिले के प्रभारी सचिव, जिला एवं शहर अध्यक्ष और प्रदेश प्रवक्ता परीक्षाएं करवाएंगे।

आप सांसद संजय सिंह का यूपी के शिक्षामंत्री को चैलेंज, भेजा 11 सौ का चेक, बोले-ड्रेस और जूता-मोजा के साथ बैग खरीदकर दिखाइये

लखनऊ, एजेंसी)। आम आदमी पार्टी के यूपी प्रभारी व राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने मंगलवार को कहा है कि सरकार प्राइमरी स्कूलों के बच्चों की यूनिफार्म, स्वेटर, जूता-मोजा व स्कूल बैग के लिए न्यूनतम 2600 रुपये भेजे जाएं। सरकार 1100 रुपये भेजने का दिखावा न करें। लखनऊ में आयोजित प्रेस वार्ता में वह सभी सामान खरीद कर पहुंचे और उनकी रसीद भी दिखाई। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी की तरफ से बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री को इस संबंध में 1100 रुपये का चेक भेजा जा रहा है और वह इससे सामान खरीद कर दिखा दें। संजय सिंह ने कहा कि इस रकम से एक बच?चे के लिए पूरा सामान नहीं खरीदा जा सकता। ऐसे में बच्चों के पास ठंड में ठिठुरने के अलावा कोई अन?य विकल्प नहीं है। संजय सिंह ने कहा कि मैं तीन हजार रुपये भेजने की मांग कर रहा था। इसके आकलन के लिए आज मैं खुद बाजार गया और ये सामान खरीदा। एक सामान्य शर्ट का मूल्य 358 रुपये है और 398 रुपये की एक पैंट है। पैंट और शर्ट के दो सेट का मूल्य 1512 रुपये हुआ। वहीं सामान्य क्वालिटी का एक स्वेटर 428 रुपये, एक जोड़ी जूता 250 रुपये और दो जोड़ी मोजा 96 रुपये का पड़ा। एक स्कूल बैग 350 रुपये का पड़ा।

खबर संक्षेप

करछना में रिटायर रेल कर्मी से अस्सी हजार की लूट

करछना। मंगलवार को एसबीआई करछना से पैसा निकाल कर घर जा रहें सेवानिवृत्त एक रेलवे कर्मचारी से अज्ञात उचक्कों ने थाने के महज कुछ दूरी पर लूट को अंजाम देकर फरार हो गये, मामले में पुलिस छान बीन करने में जुटी है ।जानकारी के अनुसार तहसील क्षेत्र के माही गांव का गौरी शंकर गौड 65 वर्ष ने मंगलवार को करछना भारतीय स्टेट बैंक से अस्सी हजार रुपये अपने एकाउंट से निकाल कर घर वापस जा रहा था कि करछना थाने के महज सौ गज की दूरी पर शिव मंदिर तिराहे पर कुछ अज्ञात उचक्कों ने रेल कर्मचारी से बातों बात में उलझा कर उससे अस्सी हजार रुपये छीन कर फरार हो गये ।शोर मचाने पर आस पास के लोगों ने उचक्कों को पकड़ने का प्रयास किया लेकिन वे तेज रफ्तार वाईक से फरार हो गये ।मौके पर पहुची पुलिस ने छान बीन करने में जुट गयी, भुक्त भोगी की तहरीर पर अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

राम के अस्तित्व को नकारने वालों को दुनिया में नहीं मिलेगी जगह : स्वतंत्र देव सिंह

अखंड भारत

न गुंडागर्दी न भ्रष्टाचार फिर से चाहिए योगी सरकार, पहले सैफई से आती थी पुलिस भर्ती की सूची औरअब जम्मू में देश के जवानों पर पत्थर नहीं फूल बरसते हैं

यमुनापार के डिहार खीरी के श्री परमानंद महाविद्यालय में "स्वाभिमान जन सभा के मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने जनसभा को किया सम्बोधित व उनका स्वागत करते बीजेपी कार्यकर्तो

लेडियारी। भारत माता की जय जयकार पूरी दुनिया में हो, महापुरुषों का सम्मान हो इस लिए प्रदेश और देश में राष्ट्रवादी सरकार चाहिए आम जन के लिए चाहिए। उक्त बातें यमुनापार के डिहार खीरी के श्री परमानंद महाविद्यालय में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती समारोह स्वाभिमान जन सभाद्द के मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने आम जन व कार्यकर्ताओ को संबोधित करते हुए कही। आगे उन्होंने वहां मौजूद जनता से पूछा कि देश व प्रदेश का नेता कैसा होना चाहिए क्या परिवारवाद, जातिवाद, वंशवाद वाला चाहिए या इससे उपर उठकर जनता का सेवक चाहिएं। मोदी योगी जैसा राष्ट्र भक्त और विकास पुरूष नेता जनता को चाहिए जिन्होंने अपने कार्यो से जनता के बीच अपने को सिद्ध करके दिखाया है। जिसने प्रदेश की सेवा के लिए अपने पिता की अंतिम संस्कार मे भी नहीं पहुंचें और प्रदेश की जनता की सेवा में निरंतर लगे रहे। ऐसे ही राज्य की सेवा के लिए फिर से योगी सरकार चाहिए कि नहीं चाहिए जिस पर मौजूद जन समूह ने हाथ उठाकर कहा कि न गुंडागर्दी न भ्रष्टाचार फिर से चाहिए योगी सरकार के नारे बुलंद कर समर्थन किया। प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने आगे कहा कि पहले पुलिस भर्ती की पूरी सूची सैफई से आती थी योग्य अभ्यर्थी हांथ मलते रह जाते थे। योगी सरकार बनने के बाद योग्य अभ्यर्थी अब अपने काबिलियत पर भर्ती हो रहे हैं। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि राम के आस्तित्व को नकारने वालों को पूरे देश में कोई जगह नहीं मिलेगी। भारतीय जनता पार्टी सरदार पटेल ,श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीन दयाल उपाध्याय के पद चिन्हों पर चलकर उनके अधूरे कार्यों को पूरा कर रही है। कुछ खास परिवार की गंदी नीति के वजह से जम्मू में देश की सेना के उपर पत्थर बरस रहा था। अब मोदी की नीतियों की वजह से उसी सेना पर फूल बरस रहा है। आगे कहा कि आगामी वर्ष 2024 तक प्रदेश के सभी गरीबो का पक्का मकान होगा। पहले बिजली, पानी के लिए लोग तरसते थे। अब 24 घंटे बिजली और पानी घर घर तक पहुंच रहा है। अब कोई गरीब इलाज के बगैर नहीं मरेगा। उनका आयुष्मान कार्ड के तहत पांच लाख का बीमा की सुविधा सरकार ने दी है। प्रदेश अध्यक्ष ने जनता को पांच मंत्र दिए कहा कि आज से सभी लोग नन्हे मुन्ने बच्चो से गुटका ना मंगाना, शाम को बूढ़े मां बाप का पैर दबाना, पत्नी पर कभी हाथ न उठाना, शाम को जूस पीकर घर जाना। कार्यक्रम की अध्यक्षता यमुनापार जिला अध्यक्ष विभव नाथ भारती ने करते हुए कार्यक्रम संयोजक ज़िला महामंत्री पुष्पराज सिंह पटेल व कार्यक्रम सह संयोजक युवा मोर्चा जिला महांमंत्री अशोक पांडेय ने संयुक्त रूप से प्रदेश अध्यक्ष व अतिथियों को बुके व अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह भेंट कर 51 किलो की बड़ी माला से समस्त पदाधिकारियों का स्वागत अभिनन्दन किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रुप में सांसद प्रयागराज डॉ. रीता बहुगुणा जोशी ने मौजूद जनता का आभार जताया, भाजपा काशी क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष महेश चंद्र श्रीवास्तव, जिला प्रभारी ओंकार केशरी, कोराव विधायक राज मणी कोल, बारा विधायक डॉ. अजय कुमार, मेजा विधायक नीलम करवरिया, एमएलसी सुरेंद्र चौधरी,पूर्व जिला अध्यक्ष विभूति नारायण सिंह, नरेंद्र देव पांडेय, शिव दत्त पटेल,विजय शंकर शुक्ल, विक्रमादित्य मौर्य, राजेश शुक्ल,शोभ नारायण द्विवेदी, जिला मीडिया प्रभारी दिलीप चतुवेर्दी,जिला सह मीडिया प्रभारी आर के शर्मा, प्रदीप कुमार मिश्र, किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष अरुण सिंह, पिछड़ा मोर्चा जिला अध्यक्ष सुभाष सिंह पटेल, जिला महामंत्री संजय पाल, मंडल अध्यक्ष श्याम बाबू केशरी, विश्व नाथ प्रसाद पांडेय, मुकेश कोल, रोहित केसरी, दिव्यांशू आदि मौजूद रहे।उक्त जानकारी भाजपा के जिला सह संयोजक के के मिश्रा ने दिया है।

किसानों,मजदूरों ने कृषि कानून के खिलाफ निकाली रैली व महिलाओं ने मंडी समिति में दिया धरना

अखंड भारत संदेश

कृषि कानून के खिलाफ किसान व मजदूर रैली निकालते

कौंधियारा । आज जारी बाजार में संयुक्त किसान मोर्चा के बैनर तले इलाके के लगभग दो सौ की संख्या में किसानों, मजदूरों ने मंगलवार को जारी पावर हाउस से जारी मंडी तक जूलूस निकाला । संयुक्त किसान मोर्चा का बैनर लिए इंकलाब जिंदाबाद, खेती के काले कानून, नया बिजली कानून 2021 रद्द कराने, एम एस पी 1940 रू पर छोटे बड़े किसानों का धान की सभी किस्मों को खरीदने की गारंटी करो, किसानों की हत्या का षडयंत्र रचने वाले केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री अजय मिश्रा टेनी की बर्खास्त करो गिरफ्तार करो आदि नारों से जारी बाजार गूंज उठा। यह जूलूस गल्ला मंडी पहुंच कर सभा में बदल गया। एआई के एम एस के हीरालाल महासचिव यू पी, राम कैलाश कुशवाहा अध्यक्ष प्रयागराज विनोद निषाद शैलानी एवं भारतीय किसान यूनियन टिकैट अवध राज सिंह, भूमिहीन किसान संघर्ष समिति के गिरीश सिंह ने मोदी नेतृत्व वाली भाजपा सरकार द्वारा कारपोरेट को खेती को देने की निंदा करते हुए अपने विचार रखे। संचालन राजकुमार पथिक जिला सचिव एआईकेएमएस ने किया तथा सभा मे मौजूद किसान व मजदूर सभा के पदाधिकारियों ने उपजिलाधिकारी बारा को 9 सूत्रीय मांग पत्र सौंप कर धरने का समापन किया गया।

संदिग्ध परिस्थितियों में खेत में रखा धान जलकर हुआ खाक

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। मेजा थाना क्षेत्र के ग्राम सभा पकरी सेवार के शंभूचक में धान के खलिहान में संदिग्ध परिस्थितियों में आग लग जाने से हजारों का नुकसान हो गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार बबलू सिंह व कैलाश सिंह निवासी पकरी के द्वारा धान की कटाई कर खलिहान में रखा गया था जहां बीती देर रात्रि संदिग्ध परिस्थितियों में आग लग जाने से लगभग 20 हजार का धान जलकर खाक हो गया। मामले की जानकारी जैसे ही ग्रामीणों को हुई घटनास्थल की ओर दौड़ पड़े। जब तक ग्रामीण आग पर काबू पाते तब तक धान की फसल जलकर खाक हो चुकी थी। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि मिथिलेश पांडे मौके पर पहुंच पीड़ित को हर संभव मदद का भरोसा दिलाया।

न्यूज झरोखा

जसरा में निकला कलश यात्रा

जसरा। श्री कैलाश धाम मंदिर खटंगिया जसरा में शिवशक्ति महायज्ञ से पूर्व मंगलवार को ब्रह्मर्षि आचार्य महेश जी महाराज के निर्देशन में कलशयात्रा निकालकर पूरे जसरा बाजार में भ्रमण किया गया। कलशयात्रा में सैकड़ों महिला व पुरुषों ने गाजे बाजे के साथ कलश यात्रा निकाली। कलश यात्रा को जगह जगह रोककर बाजार के लोगों ने फूलवर्षा किया। कलशयात्रा में स्वामी माधवाचार्य जी महाराज, आचार्य धीरेन्द्र जी,पंडित राम महायज्ञ शास्त्री, ऋषिकेश वेदांत शास्त्री, चन्द्रमणि शास्त्री आगे आगे चलते हुए शंखध्वनि कर रहे थे। कार्यक्रम में यजमान सुरेन्द्र कुमार केसरवानी सोनू,मातादीन मिश्र, अजय मिश्र, मनीष पांडेय, सुरेश पांडेय, गंगा सिंह, अविनाश त्रिपाठी, विजयकांत मिश्र, श्रीकांत, लक्ष्मी कांत पांडेय,लालचंद्र, श्याम बिहारी,धर्मराज विश्वकर्मा सहित सैकड़ों बाजार वासी सममिलत रहे।

चुनावी रंजिश के चलते दबंगों ने मंदिर में जड़ा ताला

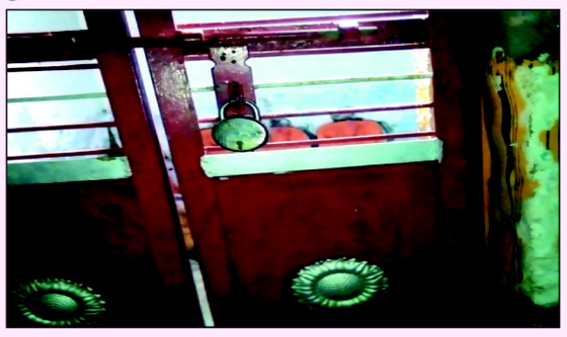

सिरसा। प्रयागराज मेजा थाना क्षेत्र के ग्राम गडेवरा में चुनावी रंजिश को लेकर कल सोमवार को एक मंदिर में कब्जा करने के नियत से ताला जड़ दिया गया। पीड़ित ने मेजा थाने में तहरीर देकर न्याय की गुहार लगाई है। उसी गांव में पीडित लल्लन शुक्ला की बातों को सच माना जाए तो विपक्षी अशोक कुमार तिवारी पुत्र शालिराम तिवारी व कृष्ण चंद्र तिवारी पुत्र स्वर्गीय राम तिवारी व हिमांशु व सुधांशु तिवारी पुत्रगण कृष्ण चंद्र तिवारी पूर्व योजना तरीके से एक राय होकर अपने अपने हाथों में लाठी डंडा व देशी तमंचा लिए भद्दी भद्दी गालियां और जान से मारने की धमकी देते हुए मारने पीटने लगे तथा यह धमकी दिए कि तुम लोग प्रधानी के चुनाव में हमें वोट नहीं दिया था। कहते हुए उसके लगभग 50 - 69 दशक में बने मंदिर में ताला जड़ दिया। पीड़ित ने बताया कि जब वह मेजा थाने में जाने के लिए निकला तो सभी लोगों ने धमकी दिया कि यदि शिकायत करने थाने में जाओगे तो तुम जान से हाथ धो बैठोगे। पीड़ित डर बस घर में ही रह गया। आज वह लगभग 7:00 बजे सुबह स्नान करने अपने कुए पर जैसे ही पहुंचा पूर्व से घात लगाए बैठे उपरोक्त सभी लोगों लात घुसा से लगे पीटने लगे शोर सुनकर अगल-बगल के लोगों के बीच बचाव से उसकी जान बची हैं। पीड़ित का कहना है कि पुलिस के द्वारा दबंगों से मन्दिर का ताला नही खुलवाया गया और कब्जा नही हटाया गया तो मैं न्याय के लिए मुख्यमंत्री जी से भी मिलेंगे और अपनी समस्याओं को उनके सामने रखेगे।

समाज सेवियों ने निरिया गांव में चलाया स्वच्छता अभियान

करछना। विकास खंड के निरिया गांव में विनय कुमार यादव के नेतृत्व में चलाया स्वच्छता अभियान ।ग्रामीणों के अनुसार ग्राम पंचायत निरिया में नियुक्त सफाई कर्मी विगत वर्षों से गांव में सफाई कार्य नहीं किया और न कभी गांव में दिखाई दिया ।जिसको लेकर गांव में गंदगी का अंमार लगा हुआ है, सफाई कर्मी को लेकर ग्रामीणों ने अनगिनत बार शिकायत संक्षम अधिकारियों से किया लेकिन कोई कारवाई नहीं की गयी ।गांव में गंदगी को लेकर संक्रमण जैसी समस्या न उतपन्न हो लेकर विनय कुमार यादव के नेतृत्व में ग्रामीणों ने मिलकर गांव में स्वच्छता अभियान चलाया, जिसको लेकर ग्रामीणों ने इस कार्य को लेकर लोगों का उत्साह वर्धन किया ।

किन्नर अखाड़ा आज निकालेगा मतदाता जागरुकता रैली

प्रयागराज। किन्नर अखाड़ा मंगलवार दोपहर एक बजे मतदाता जागरुकता रैली निकालेगा। संगम क्षेत्र में निकाली जाने वाली रैली के माध्यम से लोगों को मतदाता बनने के लिए जागरुक किया जाएगा। किन्नर अखाड़ा की प्रदेश अध्यक्ष टीना मां रैली का नेतृत्व करेंगी। रैली के माध्यम से मतदाता बनने के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत ऑनलाइन तथा 13, 21 व 28 नवंबर को बूथों पर जाकर मतदाता बनने के लिए जागरुक किया जाएगा। रैली में आम लोगों से भी भाग लेने का आह्वान किया गया है। छठ पूजा के कारण संगम क्षेत्र में होने वाली भीड़ को देखते हुए रैली के लिए मंगलवार का दिन चुना गया।

समितियों में डीएपी उर्वरक की कमी पर आप पार्टी ने भाजपा सरकार को बताया जिम्मेदार

अखंड भारत संदेस

करछना। आम आदमी पार्टी के कार्यकताओं ने सरकार से माँग की है की गेहूँ और आलू की बुआई का समय बीतता जा रहा है , परन्तु साधन सहकारी समिति पर डीएपी खाद की ऐसी किल्लत आ गई है की इस वर्ष किसानों की बुआई अधर में लटक जायेगी। पार्टी की जिला उपाध्यक्ष नेहा सिंह ने कहा की भारत एक कृषि प्रधान देश है। सरकार झूठी आश्वासन दे रही है कि जिले की सभी समितियों में खाद पहूंच गई है पर जब बुआई का समय बीत जायेगा तो डीएपी मिलने से क्या फायदा। यमुनापार के अधिकतर समितियों में डीएपी दूर दूर तक नजर नहीं आ रही है यह सरकार किसानों पर ऐसा प्रलय ला दी है की किसानों को चारों तरफ से नुकसान दे रही है जिस किसान ने सरकार बनायी उन्हीं किसानों पर अंग्रेजों से ज्यादा अत्याचार कर रही है। एक तरफ डीएपी की कालाबाजारी हो रही है तो दूसरी तरफ प्राइवेट दुकानों पर तय कीमत से ज्यादा पैसे वसूल रहें हैं। जिले के कई समितियों पर किसान जब डीएपी लेने जा रहे हैं तो सरकार पूलिस बल लगा कर किसानों पर घोर अपराध हो रहा है । पार्टी के किसान कार्यकताओं ने कहा की जल्द से जल्द सरकार जिले के सभी समितियों में डीएपी की उपलब्धता सुनिश्चित करे जिससे किसान सही समय पर बुआई कर सकें। किसानों पर जीविका का संकट टल जाऐ । इस मौके पर शेर बहादुर पटेल, हबीब अहमद, रवि भारतीय, सतेंद्र, गायत्री, सुनीता आदि उपस्थित रहे।

पीडीए बोर्ड सदस्यों के चुनाव में कांग्रेस का सपा प्रत्याशियों को समर्थन

प्रयागराज। प्रयागराज विकास प्राधिकरण बोर्ड के चार पार्षद सदस्यों के चुनाव में समाजवादी पार्टी के दो प्रत्याशियों का समर्थन कांग्रेस करेगी। शहर कांग्रेस कमेटी ने मंगलवार सुबह चुनाव को लेकर बैठक की। प्रदीप मिश्र अंशुमान की अध्यक्षता में हुई बैठक में तय किया गया कि समान विचारधारा वाली पार्टी के प्रत्याशियों का समर्थन किया जाएगा। चुनाव में कांग्रेस ने प्रत्याशी नहीं उतारा है। नौ साल बाद हो रहे चुनाव में भाजपा के तीन और सपा के दो प्रत्याशी मैदान में हैं। कांग्रेस के 10 पार्षद हैं। नगर निगम के सदन कक्ष में सुबह 11 बजे से चुनावी प्रक्रिया शुरू हो गई। चुनाव में 77 पार्षद व पदेन सदस्य मतदानकरेंगे। शाम पांच बजे मतगणना होगी।

88 शुआट्स छात्रों ने एएसआरबी नेट पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण की

कुलपति प्रो. आर.बी. लाल ने दी सफल उम्मीदवारों व संकाय सदस्यों को बधाई

अखंड भारत संदेश

नैनी। सैम हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय (शुआट्स), प्रयागराज के 88 छात्र-छात्राओं ने कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड (एएसआरबी) आईसीएआर, नई दिल्ली द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण की। कुलपति मोस्ट रेव्ह. प्रो. राजेंद्र बी लाल ने एएसआरबी-नेट के सभी सफल उम्मीदवारों एवं गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने वाले संकाय सदस्यों को बधाई दी। बता दें कि अगस्त 2021 के महीने में कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड (एएसआरबी) आईसीएआर , नई दिल्ली ने लेक्चरशिप / असिस्टेंट प्रोफेसरशिप (नेट) के लिए अखिल भारतीय राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा आयोजित की थी जिसका परिणाम 26 अक्टूबर को घोषित हुआ। पूरे भारत में कृषि और संबद्ध विषयों में कृषि महाविद्यालयों / विश्वविद्यालयों में व्याख्याता / सहायक प्रोफेसर के रूप में काम करने में सक्षम होने के लिए योग्यता नेट एक आवश्यक मानदंड है। यह परीक्षा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), नई दिल्ली द्वारा एएसआरबी के माध्यम से प्रतिवर्ष आयोजित की जाती है। यह परीक्षा उन इच्छुक वैज्ञानिकों के लिए भी एक कदम है जो आईसीएआर में शामिल होना चाहते हैं। शुआट्स के नैनी कृषि संस्थान (एनएआई) से प्रतिस्पर्धा करने वाले कृषि में विभिन्न विषयों में से 29 ने कृषि विज्ञान विभाग में, 12 बागवानी विज्ञान में, 12 जेनेटिक्स और प्लांट ब्रीडिंग में, 12 एंटोमोलॉजी में, 06 कृषि प्रसार और कम्यूनिकेशन में और 02 मृदा विज्ञान में उत्तीर्ण किया है। . इसके अलावा जैकब इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी से दो और कॉलेज ऑफ फॉरेस्ट्री से 13 छात्रों ने यह परीक्षा उत्तीर्ण की। शुआट्स के लिए यह सफलता एक गौरव के रूप में है, जो भारत और पूर्वी उत्तर प्रदेश में ज्ञान केंद्र होने की एक सदी से भी अधिक पुरानी परंपरा के साथ एक संस्थान है, जैसा कि शुआट्स, प्रयागराज के नोडल अधिकारी, आईसीएआर द्वारा सूचित किया गया। प्रति कुलपति (शैक्षिक) प्रो. ए.के.ए. लॉरेन्स और कुलसचिव प्रो. रॉबिन एल. प्रसाद ने भी छात्रों और विभागाध्यक्षों को उनकी कड़ी मेहनत और सक्षम मार्गदर्शन के लिए बधाई दी।

पूर्व मंत्री राकेशधर त्रिपाठी ने किया श्री राम डिजिटल लाइब्रेरी हंडिया का उदघाटन

अखंड भारत संदेश

डिजिटल लाइब्रेरी का फीता काटकर उद्घाटन करते राकेश धर त्रिपाठी।

हंडिया। नगर पंचायत के वार्ड नं0 8 में स्थित श्री राम डिजिटल लाइब्रेरी का फीता काट कर पूर्व मंत्री डॉ राकेशधर त्रिपाठी ने उदघाटन किया उक्त औसर पर राकेशधर त्रिपाठी ने कहा कि आज के युग मे जितनी भी शिक्षा ग्रहण की जाए वह आने वाले दिनों में नई नई टेक्नोलॉजी को सीखने में आसानी पैदा होगी ।शिक्षा का कोई अंत नही होता है बचपन से लेकर बुढ़ापे तक शिक्षा ग्रहण करना ज्ञान को ही बढ़ावा देता है और नई नई चीजें के बारे में जानकारी मिलती है। आज के युग मे कम्प्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट, वाई फाई तमाम टेक्नोलॉजी शिक्षा की ही देन है ।मैंने हँडिया विधानसभा में ही नहीं अपने उच्च शिक्षा मंत्री कार्यकाल में जितना भी हो सका सभी गाँव से लेकर शहर तक छात्र छात्राओं के लिए हर तरह की शिक्षा के लिए मैंने महाविद्यालय, डिग्री कॉलेज, पॉलिटेक्निक तमाम ऐसी शिक्षा बच्चों को मिल सके छात्र छात्राओं को आसानी ने शिक्षा ग्रहण कर सके इसके लिए मैंने सारे शिक्षा संसाधनों की व्यवस्था कराई।उक्त औसर पर डायरेक्टर राम जी मिश्रा, श्री कृष्ण शुक्ला, विकाश मिश्रा, बुलबुल त्रिपाठी,अरविन्द शुक्ला आदि लोग उपस्थित थे।

एमपीएमएलए कोर्ट : पूर्व विधायक विजमा यादव सहित 15 पर आरोप तय

प्रयागराज। स्पेशल कोर्ट एमपी एमएलए ने सोमवार को बलवा और पुलिस बल पर हमला करने, सार्वजनिक संपत्ति को क्षति पहुंचाने के मामले में पूर्व विधायक विजमा यादव सहित 15 अभियुक्तों के खिलाफ आरोप तय किए हैं। अभियुक्तों ने आरोप से इनकार कर विचारण किए जाने की याचना की है। स्पेशल कोर्ट के जज आलोक कुमार श्रीवास्तव ने विशेष लोक अभियोजक वीरेंद्र कुमार सिंह और एडीजीसी राजेश कुमार गुप्ता को सुनकर आरोप तय किया है।घटना 21 सितंबर 2000 की थाना सराय इनायत के सहसों कस्बे की है। वादी मुकदमा कृपाशंकर दीक्षित थाना प्रभारी सराय इनायत ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी। आरोप है कि श्याम बाबू केसरवानी के पुत्र आनंद जी केसरवानी (7 वर्ष) की अंदावा रोड पर हुई दुर्घटना से मृत्यु हो गई थी। जिसके बाद पूर्व विधायक विजमा यादव सहित सभी लोगों ने उसके शव को सड़क पर रखकर बलवा किया। घातक हथियारों से लैस होकर सड़क पर बल्ली ईट रखकर जाम लगाया। ईट पत्थर चलाकर पुलिस बल पर जानलेवा हमला किया, जिससे कई को चोटें आईं। अभियुक्त गणों पर यह भी आरोप तय किया गया कि उन्होंने भय का माहौल उत्पन्न किया, जिससे अफरा-तफरी मच गई और लोक शांति भंग हुई। अभियुक्तों द्वारा गाली देकर जान से मारने की धमकी दी गई। वाहनों को क्षतिग्रस्त किया और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाया गया। स्पेशल कोर्ट ने इस प्रकरण में पूर्व विधायक विजमा यादव, विनोद कुमार, पवन कुमार, चंद्र प्रकाश उर्फ कलेक्टर, दुर्गेश सिंह, जगन्नाथ, हरी लाल पाल, शिवदास, शिवप्रताप, अभय राज यादव, अशोक पाल,राजू सिंह, श्याम बाबू केसरवानी, जंग बहादुर प्रजापति और राजेश कुमार के खिलाफ आईपीसी की धाराओं में आरोप तय किया है।

खबर संक्षेप

2022 की बोर्ड परीक्षा देंगे 51 लाख परीक्षार्थी

प्रयागराज। यूपी बोर्ड की हाईस्कूल और इंटरमीडिएट परीक्षा 2022 में 51 लाख से अधिक छात्र-छात्राएं शामिल होंगे। यूपी बोर्ड की 10वीं-12वीं परीक्षा के फॉर्म और कक्षा नौ व 11 के अग्रिम पंजीकरण की अंतिम तिथि 8 नवंबर थी। हाईस्कूल के लिए 27,70,772 लाख छात्र-छात्राओं ने पंजीकरण कराया है जबकि इंटर में 23,56,971 लाख कुल 51,27,743 लाख विद्यार्थियों का रजिस्ट्रेशन हुआ है। कक्षा नौ में 3178305 और 11 में 2662303 कुल 58,40,608 विद्यार्थियों का अग्रिम पंजीकरण हुआ है। पिछले साल की तुलना में बोर्ड परीक्षार्थियों की संख्या में पौने पांच लाख की कमी आई है। पिछले साल 12वीं के 29,94,312 और 10वीं के 26,09,501 कुल 56,03,813 परीक्षार्थियों ने पंजीकरण कराया था। कोरोना महामारी के मद्देनजर यूपी बोर्ड को दो बार पंजीकरण की अंतिम तिथि बढ़ानी पड़ी थी। इससे पहले 19 अक्तूबर तक बोर्ड परीक्षा फॉर्म और अग्रिम पंजीकरण के आवेदन लिए गए थे।

भाजपा नेता पर जानलेवा हमला, नकाबपोश बदमाशों ने मारी 6 गोली, हालत गंभीर

अखंड भारत संदेश

फाफामऊ। फाफामऊ थाना क्षेत्र के लेहरा गांव निवास भाजपा नेता एवं पॉपर्टी डीलर पर कार और बाइक सवार बदमाशों ने जानलेवा हमला कर दिया। भाजपा नेता को ताबड़तोड़ छह गोलियां मारी गईं। आननफानन में उन्हें एसआरएन अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनकी हालत नाजुक बनी हुई है। घटना से पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर घटना स्थल का जायजा लिया।

घटनास्थल का मुआयना करते पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी

भाजपा किसान मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष अजय शर्मा (35) पुत्र राजकुमार शर्मा सोमवार रात करीब 10 बजे घर से कुछ दूर स्थित अपने पाही पर जा रहे थे कि रास्ते में घात लगाए बाइक और कार सवार करीब आधा दर्जन बदमाशों ने उनपर ताबड़तोड़ गोलियां बरसानी शुरू कर दी। अजय को छह गोलियां लगी हैं। गोली चलने की आवाज सुनकर गांव और परिवार के लोग मौके पर पहुंच गए। उन्हें तत्काल पहले एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां हालत नाजुक देख उन्हें स्वरूपरानी नेहरू अस्पताल रेफर कर दिया गया। उनकी हालत नाजुक बनी हुई है। गोली अजय शर्मा के गर्दन और पेट में लगी है। इस घटना से गांव में अफरातफरी मची रही। गोली मारने वाले कौन लोग थे और किसलिए यह हमला किया गया, इसका पता लगाने में पुलिस जुट गई है। परिवार के लोगों का कहना है कि उनकी किसी से कोई दुश्मनी नहीं है। घटना को प्रापर्टी डीलिंग के विवाद से जोड़कर भी देखा जा रहा है। फिलहाल पुलिस कई बिंदुओं पर जांच कर रही है। देर शाम तक थाने में घटना को लेकर परिजनों की ओर से तहरीर नहीं दी गई थी। घटना की जानकारी मिलने के बाद घटना स्थल पर आईजी राकेश सिंह, और डीआईजी और एसएसपी सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी पहुंच गए। अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण कर कई लोगों से पूछताछ की। अधिकारियों का कहना है कि हमलावरों को जल्द ही पकड़ लिया जाएगा।

न्यूज झरोखा

अयोध्या में प्रभु श्री राम का मंदिर त्रेता के जैसे होगा : डिप्टी सीएम

प्रयागराज। श्री कटरा रामलीला कमेटी प्रयागराज के तत्वावधान में आयोजित सम्मान समारोह व स्मारिका के विमोचन कार्यक्रम में यूपी के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या ने कहा कि शीघ्र ही लोग त्रिवेणी संगम से जल मार्ग से श्रृंगवेरपुर तक पर्यटक यात्रा कर सकेंगे। आज ही के दिन नौ नवंबर 1989 को अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि पर विशाल आंदोलन व शिला पूजन हुआ था और आज वहां भव्य प्रभु श्री रामलला का मंदिर निर्माण का कार्य चल रहा है।कहा कि प्रभु श्रीराम राष्ट्रीयता के प्रतीक हैं और राम मंदिर एवं राष्ट्र मंदिर एक दूसरे के पूरक हैं। बिना राम के राष्ट्र की कल्पना हो ही नहीं सकती। राम मंदिर के निर्माण को लेकर कहा कि अयोध्या में भगवान श्री राम का मंदिर त्रेता के जैसे होगा और हमारी सरकार प्रभु श्री राम जी से जुड़े हर पर्यटन स्थल को विकसित करने का कार्य तीव्रता से कर रही है।

पूर्व समाज कल्याण अधिकारी डीएन राम की डेंगू से मौत,परिवार में मचा कोहराम

प्रयागराज। जनपद प्रयागराज से सेवानिवृत्त जिला समाज कल्याण अधिकारी दीना नाथ राम की मंगलवार को लखनऊ के एक निजी अस्पताल में इलाज के दौरान मृत्यु हो गयी। उनके मृत्यु की सूचना मिलते ही उनके परिजनों व शुभचिंतकों तथा विभागीय अधिकारियों,कर्मचारियों में मातम पसर गया। मिली जानकारी के अनुसार बहुत ही मिलनसार बलिया निवासी डीएन राम जनपद प्रयागराज समाज कल्याण विभाग से वर्ष 2019 में सेवानिवृत्त हो गए थे और रिटायरमेंट के बाद अपने परिवार के साथ इलाहाबाद के सिविल लाइंस में रह रहे थे। पिछले दिनों डेंगू की चपेट में आने से अस्वस्थ हो गए और इलाज के लिए लखनऊ के निजी अस्पताल में भर्ती थे। विकास भवन के अधिकारियों व कर्मचारियों ने उनके निधन पर गहरा दुःखद प्रकट कर उनकी आत्मा की शांति की ईश्वर से प्रार्थना की। समाज कल्याण के शिक्षकों व संगठन के पदाधिकारियों ने उनके असामयिक निधन पर गहरा शोक प्रकट किया है।

छात्रसंघ बहाली के लिए केंद्रीय शिक्षा मंत्री को सौंपा ज्ञापन

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्रसंघ बहाली के लिए अनशन कर रहे छात्रों ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद प्रधान से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा। छात्रनेता अजय यादव सम्राट ने बताया कि शिक्षा मंत्री ने आश्वासन दिया है कि भ्रष्टाचार के मामले की जांच कराई जाएगी। किसी भी दोषियों को बख्शा नहीं जायेगा। उन्होंने छात्रसंघ बहाली पर भी विचार करने का आश्वासन भी दिया। इस मौके पर छात्र नेता नवनीत यादव, राहुल पटेल, मुबाशिर हारून, शिव शंकर सरोज, मो. सलमान, अजय राज त्रिपाठी आदि उपस्थित रहे।

छोटे महंत की सुनवाई टली, आज हो सकती है सुनवाई

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। महंत नरेंद्र गिरि की संदिग्ध हाल में हुई मौत के मामले में छोटे महंत के नाम से प्रसिद्ध आनंद गिरी की जमानत पर मंगलवार को सुनवाई नहीं हो सकी। इस मामले की बुधवार की सुबह 11:30 बजे से विशेष न्यायाधीश मृदुल कुमार मिश्रा की कोर्ट में सुनवाई होगी।

सीबीआई कर रही मामले की जांच

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष और श्री मठ बाघंबरी गद्दी के महंत नरेंद्र गिरी कि 20 सितंबर 2021 को श्री बाघमबारी गद्दी मठ अल्लापुर के गेस्ट हाउस में संदिग्ध दशा में मौत हो गई थी। नरेंद्र गिरी का शव गेस्ट हाउस के पंखे के चूल्हे से फंदे पर लटकता मिला था। प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने पहले विशेष जांच दल का गठन किया था पर बाद में इस मामले की सीबीआई जांच की केंद्र सरकार से सिफारिश की थी। अब इस मामले को विशेष जांच दल से लेकर सीबीआई को सौंप दिया गया है। सीबीआई इस मामले की जांच कर रही है।

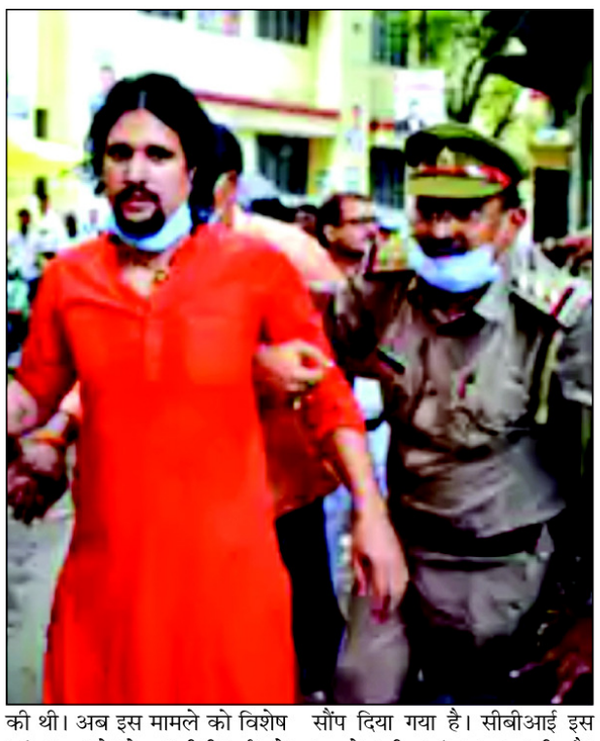

दो बार खारिज हो चुकी है जमानत अर्जी

आनंद गिरि ने इससे पूर्व भी सीजेएम कोर्ट में दो बार जमानत की अर्जी दाखिल की थी। सुनवाई के बाद और विपक्ष के अधिवक्ता की दलीलों को सुनने के बाद कोर्ट ने आनंद गिरि को जमानत देने से मना कर दिया था। कोर्ट का कहना था कि अभी इस मामले की सीबीआई जांच कर रही है और आनंद, आद्या प्रसाद तिवारी व संदीप तिवारी न्यायिक अभिरक्षा में है, लिहाजा जमानत नहीं दी जा सकती।

आरोपियों, नरेंद्र गिरि के सेवादारों व मठ से जुड़े शिष्यों से कई राउंड की पूछताछ भी हो चुकी है। सुसाइड नोट में नरेंद्र गिरी के रहे आनंद गिरि, लेटे हनुमान मंदिर के मुख्य पुजारी प्रसाद तिवारी, उनके बेटे संदीप तिवारी को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। रिमांड पर कई दौर की पूछताछ के बाद वर्तमान में तीनों आरोपी नैनी सेंट्रल जेल में बंद है।

सहायक अध्यापिका ने खंड शिक्षा अधिकारी को पीटा, बीएसए ने किया निलंबित

अखंड भारत संदेश

सैदाबाद। सैदाबाद विकास खंड के सविलियन विद्यालय मलेथुआ की सहायक अध्यापिका कविता कुमारी के द्वारा खंड शिक्षा अधिकारी सैदाबाद की पिटाई कर दी गई। इस घटना से शिक्षा विभाग में हड़कंप मच गया। बीईओ सैदाबाद की आख्या पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रवीण कुमार तिवारी ने सहायक अध्यापिका को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। मामले की जांच खंड शिक्षा अधिकारी हंडिया ममता सरकार को सौंपी गई है।बताया जाता है कि मंगलवार को विद्यालय की जांच करने पहुंचे सैदाबाद के खंड शिक्षा अधिकारी के साथ सहायक अध्यापिका कविता कुमारी के द्वारा पिटाई कर दी गई। इस मामले में बीएसए ने उन्हें निलंबित कर दिया। इसके अलावा उनके ऊपर कई और अनियमितता के आरोप पाए गए। जांच रिपोर्ट में कहा गया है कि शिक्षिका कविता कुमारी के द्वारा शिक्षण कार्य में कोई रुचि नहीं ली जाती है। साथ ही उच्चाधिकारियों के आदेश की अवहेलना सहित कई दायित्वों के प्रति भी लापरवाही का आरोप है, जो अध्यापक आचरण सेवा नियमावली के विपरीत है। निलंबन की अवधि में सहायक अध्यापिका प्राथमिक विद्यालय मवैया विकास खंड सैदाबाद में अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगी। बीएसए ने मामले की जांच खंड शिक्षा अधिकारी हंडिया ममता सरकार को सौंपी है। रिपोर्ट आने के बाद उनके खिलाफ और भी सख्त कार्रवाई की जा सकती है।

भ्रष्टाचार की दलदल में फंसा विकासखंड

हंडिया,प्रधानों से की जा रही है 40% कमीशन की मांग

अखंड भारत संदेश

हंडिया। हंडिया विकास खंड सभागार में आज हंडिया विकासखंड क्षेत्र के सभी ग्राम प्रधानों की बैठक हुई बैठक के बाद सभी प्रधानों ने प्रधान संघ अध्यक्ष जयप्रकाश यादव की अगुवाई में विकासखंड हंडिया का घेराव करते हुए खंड विकास अधिकारी देव कुमार को एक ज्ञापन सौंपते हुए बताया कि विकासखंड के अधिकारियों के द्वारा प्रधानों का शोषण किया जा रहा है। ग्राम प्रधानों ने बताया कि सचिव, ए.पी.ओ. व टी.ए. के द्वारा ग्राम प्रधानों का शोषण किया जा रहा है प्रधानों ने यह भी बताया कि राज्य वित्त एवं केंद्रीय वित्त से किए गए कार्यों में सचिवों के द्वारा 40% कमीशन का मांग किया जाता है तथा मनरेगा की फाइल व आईडी बनाने के नाम पर ए.पी.ओ. के द्वारा 5% कमीशन मांगा जाता है वही टी.ए. के द्वारा भी कमीशन का मांग किया जाता है।

प्रधानों ने यह भी बताया कि अगर ग्राम प्रधानों का शोषण बंद नहीं किया जाएगा तो हम ग्राम प्रधान किसी भी प्रकार का कोई विकास कार्य करने में सक्षम नहीं होंगे और इसके जिम्मेदार ब्लॉक के संबंधित अधिकारी व कर्मचारी गण होंगे प्रधानों ने यह भी बताया कि अगर 40 से 50% का कमीशन ब्लॉक के कर्मचारियों को दे दिया जाएगा तो विकास कैसे हो पाएगा जब उक्त मामले में खंड विकास अधिकारी देव कुमार से बात किया गया तो उन्होंने बताया कि मैं अभी-अभी पदभार संभाला हूं मुझे मामले की कोई जानकारी नहीं है प्रधानों के द्वारा मुझे आज ज्ञापन दिया गया है उसकी जांच किया जाएगा जो सत्य सत्य होगा उसके आधार पर दोषी कर्मचारियों के ऊपर कारवाई किया जाएगा।इस मौके पर हंडिया विकासखंड क्षेत्र के प्रधान संघ अध्यक्ष जय प्रकाश यादव सचिव जय शंकर यादव ग्राम प्रधान भेलसी, नंदलाल गुप्ता ग्राम प्रधान किहुनी राजेश कुमार यादव ग्राम प्रधान तारागांव, राजीव कुमार ग्राम प्रधान पूरे मथुरादास सहित सभी ग्राम प्रधान वह प्रतिनिधि मौजूद रहे।

सीजनल संग्रह अमीन को पेंशन और रिटायरमेंट के अन्य लाभ दे सरकार

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सीजनल संग्रह अमीन के पद पर कार्यरत याचीगण को नियमित सेवा में माना है। कोर्ट ने उनकी नियुक्ति की तारीख से सेवा जोड़कर पेंशन व अन्य सेवानिवृत्ति लाभ देने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने मंगलवार को कहा कि ये लाभ देने में यह देखना महत्वपूर्ण है कि कर्मचारी की सेवा की प्रकृति क्या है। न कि वह किस पद नाम से नियुक्त किया गया है। यह बात मायने नहीं रखती कि वह वर्कचार्ज कर्मचारी है या सीजनल संग्रह अमीन है। वह चाहे दैनिक वेतन भोगी, अस्थाई या किसी और नाम से नियुक्त थे। कोर्ट का कहना था कि याचीगण दशकों से सीजनल अमीन के तौर पर वही सेवाएं दे रहे हैं, जो नियमित संग्रह अमीन देते हैं। उनको यह सभी लाभ भी दिए गए, जो नियमित कर्मचारी को मिलते हैं। ऐसे में उनको पेंशन देने से इनकार करना मनमाना है। यह संविधान में दिए गए समानता के अधिकार के खिलाफ है। महाराजगंज तहसील में नियुक्त कौशल किशोर चौबे व चार अन्य की याचिका पर यह आदेश न्यायमूर्ति सरल श्रीवास्तव ने दिया है।

डीएम की अध्यक्षता में 50 लाख रुपए से अधिक लागत वाले निर्माण कार्यों की हुई समीक्षा

अखंड भारत संदेश

आरईडी के अधिशाषी अभियंता एवं यूपीपीसीएल के प्रोजेक्ट मैनेजर से स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने के दिए निर्देश

निर्माण कार्यों की समीक्षा करते जिलाधिकारी व अन्य

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में मंगलवार को 50 लाख रुपए से अधिक लागत वाले निर्माण कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने सभी कार्यदायी संस्थाओं को समयबद्धता एवं गुणवत्ता के साथ कार्यों को पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने निर्माण कार्यों की अद्यतन स्थिति के बारे में जानकारी ली। कार्यों को समय से पूर्ण न कराये जाने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए जिलाधिकारी ने सम्बंधित अधिकारियों को कार्यों में तेजी लाये जाने के निर्देश दिये है। उन्होंने बैठक में बिना सूचना के अनुपस्थित रहने पर आरईडी के अधिशाषी अभियंता दिलीप कुमार शुक्ला से स्पष्टीकरण प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है तथा यूपीपीसीएल के प्रोजेक्ट मैनेजर से कार्यों में लापरवाही पाये जाने पर स्पष्टीकरण तलब किया है। जिलाधिकारी ने स्पष्ट रूप से निर्देशित किया है कि कार्यों को ससमय पूर्ण करा लिया जाये, इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता कतई क्षम्य नहीं होगा। इस अवसर पर मुख्य राजस्व अधिकारी, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी श्री जितेन्द्र कुमार सहित सभी कार्यदायी संस्थाओं के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

कांग्रेस कार्यकताओं ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर एडीएम सिटी को सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। त्रिपुरा में राज्य की भाजपा सरकार द्वारा मुस्लिम विरोधी हिंसा को लेकर कांग्रेसियों ने नाराजगी जाहिर की। जिला मुख्यालय पर मंगलवार को जिला एवं शहर कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग के अध्यक्ष परवेज सिद्दीकी एवं अरशद अली के संयुक्त नेतृत्व में पदाधिकारियों ने सांकेतिक प्रदर्शन कर विरोध जताया। अध्यक्ष ने कहा कि मुस्लिम समाज की इबादतगाहों और संपत्तियों पर आरएसएस, बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद जैसे आतिवादी संगठनों द्वारा कायरतापूर्ण हमले निंदनीय हैं। आरोप लगाया कि सीएम विप्लव देव के खुले संरक्षण में सूबे में मस्जिदों, मजारों और दुकानों को क्षति पहुंचाई गई। कांग्रेस जनों ने दोषियों के खिलाफ कार्रवाई , गिरफ्तारी व जांच की मांग के साथ सच को देश के सामने उजागर करने वाले सुप्रीम कोर्ट के वकीलों, पत्रकारों, सामाजिक कार्यकर्ता पर सूबे की सरकार द्वारा थोपे गए फर्जी मुकदमों को वापस लेने की मांग की गई।

जिला मुख्यालय पर ज्ञापन सौंपते कांग्रेश के कार्यकर्ता

त्रिपुरा के मुख्यमंत्री की बर्खास्तगी की मांग

इस संबंध में प्रभारी डॉ. मुमताज सिद्दीकी ने राष्ट्रपति को संबोधित एक ज्ञापन एडीएम सिटी मदन कुमार को सौंपा। राज्य कार्य समिति के सदस्य किशोर वार्ष्णेय ने बांग्लादेशी नागरिक और राज्य के मुख्यमंत्री विप्लव देव के बर्खास्तगी की मांग की। जावेद उर्फी, कमाल अली, नुरूल कुरैशी, शमसुलहसन एडवोकेट, तालिब अहमद, गुलरेज अहमद, महफूज अहमद, गुलाम वारिस, मो. आरिफ, आमिर हुदा समेत अन्य मौजूद रहे।

36वीं अखिल भारतीय इंदिरा मैराथन की तैयारियों के सम्बंध में बैठक सम्पन्न

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में 19 नवम्बर, 2021 को होने वाली 36वीं अखिल भारतीय प्राइजमनी इंदिरा मैराथन की तैयारियों के सम्बंध में संगम सभागार में बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने मैराथन रेस मार्गों की मरम्मत एवं साफ-सफाई कराने का निर्देश दिया है। उन्होंने मुख्य चिकित्साधिकारी को निर्देशित किया कि मार्गों पर आवश्यक दवा की किटों के साथ-साथ एम्बुलेंस की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करा ली जाये। उन्होंने क्षेत्राधिकारी यातायात को निर्देशित किया कि जिन मार्गों पर दौड़ किया जाना है, उसमें टैजफिक की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करा ली जाये तथा मार्ग का भ्रमण कर आवश्यक व्यवस्थायें भी पहले से दुरूस्त करा लिया जाये। उन्होंने ए0आर0टी0ओ0 को वाहनों की व्यवस्था कराने के निर्देश दिये है। जिलाधिकरी ने जिला विद्यालय निरीक्षक को निर्देशित किया कि विद्यालयों के बच्चों की सहभागिता एवं समापन के अवसर पर समापन समारोह में सम्मिलित किया जाये तथा अपर जिलाधिकारी (नगर) को निर्देशित किया कि सेक्टर वाइज सेक्टर मजिस्टेटों की तैनाती सुनिश्चित करा ली जाये तथा पी0ए0सी0 आदि की समुचित व्यवस्था करा ली जाये। इस पूरे कार्यक्रम के लिए उपजिलाधिकारी सदर को नोडल नामित किया गया है। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी नगर श्री मदन कुमार, क्षेत्रीय क्रीड़ा अधिकारी श्री अनिल तिवारी सहित अन्य सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

मैराथन रूट मार्गों पर भ्रमण कर सभी आवश्यक व्यवस्थायें दुरूस्त कराये जाने का दिए निर्देश, डीएम ने मैराथन रूट मार्गों पर दवाओं की किट के साथ एम्बुलेंस की व्यवस्था कराये जाने का दिए निर्देश

नीलाम भवन के खरीदार को कब्जा सौंपने का यूनियन बैंक को निर्देश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा है कि बैंक की नीलामी में बोली राशि के भुगतान पर विक्रय प्रमाणपत्र जारी होने के बाद यह निरस्त नहीं किया जा सकता। बैंक का दायित्व है कि वह खरीदार को नीलाम भवन का कब्जा सौंपे। कोर्ट ने कहा कि भूमि खरीदने वाले को भी धारा 14 के तहत कब्जा लेने का दावा करने का अधिकार है। कोर्ट ने कहा कि बैंक जबरन कब्जा जमाए कर्जदार से कब्जा वापस लेने की कार्रवाई की है। प्रक्रियात्मक देरी के कारण खरीदार को कब्जा नहीं दिया जा सका है।कोर्ट ने यूनियन बैंक ऑफ इंडिया वाराणसी को निर्देश दिया है कि वह एडीएम वित्त एवं राजस्व को एक हफ्ते में कब्जा दिलाने की अर्जी दे। जिसे सुनकर एडीएम 30 दिन में आदेश दें। साथ ही इसके 30 दिन के भीतर बैंक को कब्जा दिलाने की कार्यवाही पूरी की जाए। कोर्ट ने कहा यदि अन्य किसी का दावा भी है, तो उसे भी 30 दिन में तय किया जाए। कोर्ट ने कहा कि कर्जदार की आपत्ति पर किसी वजह से फैसला नहीं हो पाता, तो बैंक याची की जमा राशि को ब्याज समेत वापस करे।यह आदेश न्यायमूर्ति नाहिद आरा मुनीस और न्यायमूर्ति एसडी सिंह की खंडपीठ ने अंशु अग्रवाल की याचिका को निस्तारित करते हुए दिया है।

मदरसा रहमानिया इस्लामिया सिंगरौर आनापुर प्रयागराज

आवश्यकता है

मदरसा में इंग्लिश, गणित ,विज्ञान ,हिंदी अध्यापकों की आवश्यकता है। शैक्षिक योग्यता ग्रेजुएट ,पोस्ट ग्रेजुएट, बी एड आयु 18 वर्ष सेअधिक मानदेव शासन द्वारा दिया जाएगा। अंतिम तिथि 16/11/2021 साक्षात्कारः 19/11/2021 सुबह10:00बजे।
स्थान : मदरसा रहमानिया इस्लामिया नूर नगर सिंगरौर आनापुर प्रयागराज
नोट : आवेदन पत्र डाक द्वारा भी भेज सकते हैं।
प्रबंधक - 9628271177 , 9198492559

प्रतापगढ़ संदेश

आईएएस के भाई की हत्या पर उबला आक्रोश

डीएम व एसपी ने दिलाया शासन की ओर से मदद का भरोसा

आईएएस राकेश के भाई की हत्या पर गांव मे गम का माहौल

व्यापारी की हत्या पर संवेदना जताते डीएम व एसपी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़ /परियावां। महेशगंज थाना के पूरे हरिकेश गांव में आईएएस के भाई अश्विनी कुमार शुक्ला की सोमवार को हुई हत्या को लेकर मंगलवार को ग्रामीणों तथा राजापुर बाजार के व्यापारियों मे गहरा आक्रोश देखा गया। वहीं कुण्डा के अधिवक्ता महेश शुक्ल के भाई होने के नाते भी अश्विनी की जघन्य हत्या को लेकर वकीलों मे भी गुस्सा पनप उठा। उधर पुलिस ने अश्विनी कुमार के एक हत्याभियुक्त को महेशगंज पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

इधर आईएएस राकेश शुक्ला के भाई की हत्या के बाद मंगलवार की सुबह प्रशासन को जैसे ही जानकारी हुई कि परिजनों ने आर्थिक सहायता समेत कई मांगो को लेकर शव का अंतिम संस्कार करने से मना कर दिया है। जानकारी होते ही पुलिस व प्रशासन के हाथ पांव फूल गये। सुबह से दोपहर तक अफसरों का घरवालों के साथ ग्रामीणों को मनाने का प्रयास तब जाकर सफल हुआ जब परिजनों की जिद को देख जिले के डीएम व एसपी स्वयं मृतक अश्विनी के घर पहुंचे। जिलाधिकारी डा. नितिन बंसल तथा एसपी सतपाल अंतिल ने घटना को दुखद ठहराते हुए परिजनो को हर संभव सरकारी सहायता का भरोसा दिलाया। मृतक की पत्नी प्रमिला देवी ने मुख्यमंत्री को संबोधित मांग पत्र डीएम को सौंपते हुए परिवार की सुरक्षा की गुहार लगाई है। वहीं प्रमिला ने सरकार से आर्थिक सहायता तथा परिवार मे शस्त्र लाइसेंस व एक सदस्य को नौकरी के साथ मुकदमें की सुनवाई फास्टटैज्क कोर्ट मे कराए जाने की भी मांग उठाई है। बता दें मृतक अश्विनी के पीछे पुत्र आशीष कुमार 14, अभिषेक 20 तथा पुत्री प्रगति 22 निराश्रित हो उठे है। डीएम डा. नितिन बंसल ने परिजनों की बात सुनने के बाद मांगो को लेकर शासन को संस्तुति किये जाने का भरोसा दिलाया। वहीं डीएम नितिन एसडीएम कुण्डा सतीशचंद्र त्रिपाठी भी मौके पर पहुंचे। लोगों मे घटना को लेकर आक्रोश बढ़ा नजर आने पर प्रशासन की घिघ्घी बंध आयी। डीएम-एसपी के आश्वासन पर परिजन अंतिम संस्कार करने को राजी हुए। इधर बाबागंज विधायक विनोद सरोज, ऑल इण्डिया रूरल बार एसोशिएसन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व सांसद प्रमोद तिवारी के मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल, बाबागंज ब्लाक प्रमुख हितेश सिंह आदि अश्विनी के घर पहुंचे और परिजनों से मिलकर घटना पर दुख जताया। इधर मृतक के घर बड़ी संख्या मे महिलाओं का भी रूदन व विलाप देख लोगों की आंखे भर आयीं दिखी। राजापुर बाजार से भी बड़ी संख्या मे व्यापारियों का समूह मृतक अश्विनी के घर आक्रोशित जमा देखा गया। वहीं मृतक अश्विनी के भाई तथा समाज कल्याण विभाग के विशेष सचिव राकेश शुक्ल को भी लोग ढांढस बंधाते दिखे। करीब बारह बजे डीएम व एसपी के आने के बाद मृतक के परिजन शव का अंतिम संस्कार करने को तैयार हुये। तब कहीं जाकर प्रशासन ने राहत की सांस ली। तथा एसपी सतपाल जब मृतक की पत्नी प्रमिला से मिलने स्वयं पहुंचे तो वहां माहौल बेहद भावुक हो उठा। इधर मंगलवार की सुबह ही मृतक अश्विनी के घर हजारों लोगों का जमावड़ा हो उठा। जानकारी होने पर जिले के एएसपी पश्चिमी रोहित मिश्र, सीओ पवन त्रिवेदी तथा एसओ आशुतोष त्रिपाठी भारी फोर्स के साथ मौके पर पहुंच गये।

कहला व नमक शायर के सौन्दर्यीकरण के लिये प्रथम किश्त स्वीकृत

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। विधायक रानीगंज अभय कुमार उर्फ धीरज ओझा के प्रयास से रानीगंज विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत अवस्थित भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विरासत शहीद स्थल कहला व नमक शायर में पर्यटन विकास की दृष्टि से पर्यटन विभाग द्वारा सौंदर्यीकरण कार्य स्वीकृत किया गया है।

क्षेत्रीय विधायक धीरज ओझा के प्रस्ताव पर रानीगंज विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत उपेक्षित पड़े भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी ऐतिहासिक विरासत कहला के सौंदर्यीकरण हेतु पर्यटन विभाग द्वारा कुल 35.50 लाख रुपये की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति के साथ 17.50 लाख रुपये प्रथम किश्त के रूप में जारी हुआ है। इसी तरह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान चन्द्र शेखर आजाद, भगत सिंह एवं अन्य अमर क्रांतिकारियों की शरण स्थली रहे नमक शायर के सौंदर्यीकरण कार्य हेतु विधायक धीरज ओझा के ही प्रस्ताव पर पर्यटन विभाग द्वारा राज्य योजनान्तर्गत 21.77 लाख की प्रशासकीय एवं वित्तीय स्वीकृति के साथ पांच लाख रुपये प्रथम किश्त के रूप में स्वीकृत किया गया है। शहीद स्थल कहला एवं नमक शायर के सौंदर्यीकरण एवं पर्यटन विकास कार्यों की स्वीकृति मिलने पर क्षेत्रीय विधायक धीरज ओझा ने प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं पर्यटन मंत्री डॉ नीलकंठ तिवारी का आभार जताया है। बता दें कि कहला, नमक शायर व गांधी चबूतरा दांदूपुर का सौंदर्यीकरण होने से जनपद में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी इन ऐतिहासिक धरोहरों की धुंधली होती स्मृतियां हमारी आने वाली पीढ़ियों में पुनः जीवंत हो सकेंगी।

चार आरोपियों के खिलाफ मारपीट का मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। जमीनी विवाद मे मारपीट को लेकर कोतवाली पुलिस ने चार आरोपियो के खिलाफ केस दर्ज किया है। कोतवाली के कैथौला तिगुनाइत निवासी संतोष की पत्नी सुधा यादव ने दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती छः नवंबर को बारह बजे दिन जमीनी विवाद मे गांव के श्यामशंकर यादव, सदाशिव यादव, शान्तनु यादव व पीयूष ने पीड़िता के देवर को लाठी डंडे से मारपीट कर चुटहिल कर दिया। विरोध करने पर आरोपियो ने पीड़िता के घर मे चारपाई व टिनशेड आदि मे तोडफोड कर नुकसान पहुंचाया। पुलिस ने सोमवार की रात आरोपी श्यामशंकर समेत चार के खिलाफ केस दर्ज किया है।

चोरी की घटनाओं पर रिपोर्ट दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने चोरी की घटना को लेकर सोमवार की रात अज्ञात बदमाश के खिलाफ केस दर्ज किया है। कोतवाली के सराय बारमती निवासी कालीदीन के पुत्र रामफेर यादव ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती सात नवंबर की रात अज्ञात चोर उसके घर तथा पडोसी तुलसीराम के घर चोरी की घटना अंजाम दी। अज्ञात बदमाशो ने पीडित के घर से दस हजार की नकदी व जेवरात चुरा लिये। वहीं पडोसी तुलसीराम के घर भी घटना मे कीमती सामान चोरी चला गया। इसी रात बदमाशों ने बगल के सुनील के घर मे भी चोरी की घटना अंजाम देते हुए हजारों का माल साफ कर दिया।

मारपीट तथा तोडफोड को लेकर क्रास केस दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने मारपीट तथा तोडफोड को लेकर आधा दर्जन आरोपियो के खिलाफ क्रास केस दर्ज किया है। जेठवारा थाना के महेशगंज विक्रम निवासी अतहर हुसैन के पुत्र मो. हसन ने दी गई तहरीर मे कहा है कि लालगंज कोतवाली के ढिगवस निवासी अकबर अली तथा समीर उर्फ टीपू एवं समीर की पत्नी बानो ने बीती आठ नवंबर को सुबह सात बजे उसकी बहन रेशमा बानो को मारापीटा। समीर के रेशमा पर चाकू से हमले मे वह गंभीर रूप से घायल हो गयी। पुलिस ने तीनों आरोपियो के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। वहीं ढ़िगवस की समां बानो पत्नी मो. शरीफ ने दी गई तहरीर मे कहा है कि आठ नवंबर को सुबह साढे छः बजे गांव के गुलफान, गुलाम व सन्ने की पत्नी रेशमा बानो ने उसे रंजिशन लाठी डंडे से मारापीटा। आरोपियो ने घर मे रखी चारपाई तोडते हुए गालीगलौज भी की। पुलिस ने तहरीर के आधार पर आरोपी गुलफाम समेत तीन के खिलाफ मारपीट व तोडफोड तथा धमकी का केस दर्ज किया है।

मारपीट को लेकर सात आरोपियो के खिलाफ मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने रंजिशन मारपीट को लेकर सात आरोपियो के खिलाफ मारपीट तथा धमकी व बलवा का केस दर्ज किया है। जेठवारा थाना के गुलाबराय निवासी सुरेश कुमार मिश्र ने दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती छः जून को लालगंज के बाबूगंज बाजार निवासी रियाज अहमद, वदरुद्दीन, मो. आजाद हुसैन, मो. शहजाद, फयाद तथा अयान ने एकराय होकर उसे रास्ते मे मारापीटा। आरोपियो ने पुरानी रंजिश केा लेकर मारपीट मे पीडित की बाइक भी तोडकर नष्ट कर दी। पीड़ित ने कार्रवाई न होने पर अफसरो से शिकायत की। इसके बाद पुलिस ने सोमवार की रात आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया है।

नोटबंदी से पूरी तरह विफल रही मोदी सरकारः संजय

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। 249 विधानसभा पट्टी प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य और प्रसिद्ध समाजसेवी संजय मिश्रा ने नोटबंदी पर तंज कसते हुए कहा की सरकार ने जनता को परेशानी में डाल कर सिर्फ ख्याली पुलाव का सपना दिखाया जबकि हकीकत में नोटबन्दी से नुकसान छोड़ कोई फायदा नहीं हुआ काले धन के नाम पर पूरे देश को लाइन में लगाने वाली भाजपा सरकार आज तमाम मुद्दों पर सिर्फ फेल दिखाई दे रही है। भारतीय जनता पार्टी के नेता जातिवादी राजनीति पर उतर आए हैं उन्हें भूल जाना चाहिए कि ब्राह्मण किसी की जेब में नहीं रहता है। भाजपा जाति धर्म के नाम पर समाज में नफरत फैलाकर वोट पाना चाहती है लेकिन 2022 के विधानसभा चुनाव उत्तर प्रदेश में जनता भाजपा को पटखनी देने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी का जनाधार धीरे धीरे बढ़ता जा रहा है। उन्होंने कहा कि पट्टी की आराध्य जनता के लिए वह हमेशा उनके कदम से कदम कंधे से कंधा मिलाकर चलने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

रामपुरखास में योजनाबद्ध विकास योजनाओं का जारी रहेगा संचालनः मोना

कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता व क्षेत्रीय विधायक ने सुनीं जनसमस्याएं

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने मंगलवार को स्थानीय कैम्प कार्यालय पर जनसमस्याओं की सुनवाई की। विधायक मोना ने बिजली तथा अन्य विभागों से जुडी समस्याओं के समाधान कराए जाने का लोगों को भरोसा दिलाया। इसके बाद उन्होंने कार्यकताओं के साथ क्षेत्र मे संचालित विकास योजनाओं की प्रगति को लेकर विचार विमर्श किया।

विधायक मोना ने कहा कि रामपुरखास को विकसित क्षेत्र बनाने के लिए यहां हर जरूरी योजनाओं को इसी मजबूती के साथ योजनाबद्ध तरीके से संचालित कराया जाता रहेगा। उन्होंने कार्यकताओं से कहा कि वह क्षेत्र मे जारी विकास कार्यो को जनता के बीच पहुंचाएं। वहीं उन्होंने कहा कि प्रदेश की भाजपा सरकार अब लोगों का रंच मात्र भी विश्वास कायम नहीं रख पा रही है।

कैम्प कार्यालय पर जनसमस्याओं की सुनवाई करती विधायक आराधना मिश्रा मोना

सीएलपी नेता मोना ने कहा कि सरकार की हठवादिता से किसानों को उनके फसल तक की सही कीमत नहीं मिल पा रही है। विधायक आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि सरकार के दावे के विपरीत ग्रामीण अंचलों में धान क्रय केन्द्रों का समुचित संचालन बिल्कुल नहीं हो पा रहा इस मौके पर प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी, मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल, प्रमुख अमित प्रताप सिंह, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, ददन सिंह, महमूद आलम, केडी मिश्र, आशीष उपाध्याय, रोहित शुक्ल, छोटेलाल सरोज, पप्पू तिवारी, राजू पाण्डेय, हृदय नारायण मिश्र, बृजेश द्विवेदी, सुरजीत कोरी, पप्पू जायसवाल, राहुल सिंह आदि रहे।

विधायक ने हत्या पर जताई संवेदना, सहायता की मांग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। महेशगंज के पूरे हरिकेश गांव मे अश्विनी कुमार शुक्ल की हत्या की घटना पर बाबागंज विधायक विनोद सरोज ने स्वयं तथा जनसत्ता दल लोकतांत्रिक के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजा भइया की ओर से संवेदना जताई। विधायक विनोद सरोज ने मौके पर पहुंचे जिलाधिकारी से मृतक के परिजनों के लिए शासन से एक करोड़ रुपए शासकीय सहायता अनुमन्य कराये जाने को कहा। विधायक ने कहा कि वह स्वयं भी मुख्यमंत्री से मिलकर मृतक के परिवार के लिए आर्थिक सहायता मंजूर करये जाने का प्रयास करेगें। विधायक के साथ

किसानों की समस्याओं को लेकर किसान कांग्रेस ने डीएम को सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले में किसानों की धान की खरीद ना होने से जहां किसान परेशान हैं, वहीं पर रवि की बुवाई कर पाना किसानों के लिए मुश्किल हो रहा है। रबी की फसल की बुवाई के लिए किसानों को ना तो समय से खाद मिल पा रही है ना प्रमाणित बीज मिल पा रहा। इन्हीं समस्याओं को लेकर किसान कांग्रेस के जिला अध्यक्ष करुण पांडे ने मुख्यालय पर प्रदर्शन कर राज्यपाल को संबोधित पांच सूत्रीय ज्ञापन जिला अधिकारी को सौंपा।

किसानों की समस्या को लेकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का मुख्य अनुषांगिक संगठन किसान कांग्रेस अपने संगठन के साथ जिला अधिकारी को ज्ञापन सौंपा जिसमें किसानों की फसल को खरीदने के लिए पूरे जनपद में कहीं भी किसान क्रय केंद्रों का संचालन नहीं हुआ है जो ज्ञापन का मुख्य बिंदु था और समय से गेहूं की बुवाई ना होने के कारण किसान मायूस हैं। सरकार किसानों को खाद और प्रमाणित बीज उपलब्ध नहीं करा पा रही है। किसानों की फसल जो असमय जल वृष्टि होने के कारण नष्ट हो गई है। उक्त फसल का जिसका बीमा हुआ हो बीमा न हुआ हो क्षति पूर्ति देने की मांग किसान कांग्रेस ने की है ज्ञापन देते समय कांग्रेस पार्टी के जिला अध्यक्ष डॉ लाल जी त्रिपाठी ने जिलाधिकारी से मांग किया कि बीज बिक्री केंद्र पर बीज उपलब्ध कराया जाए जिससे किसानों को समय से बुवाई करने का मौका मिले। इस मौके पर

शहर अध्यक्ष इरफान अली, पवन द्विवेदी, रामजी चौबे, हरिप्रसाद मिश्रा, रामजीत सरोज, मोहम्मद यूसुफ, दिलीप गौतम, नूरजहां, राज तिवारी विद्रोही, हरकेश नारायण, अशोक सिंह, दिलशाद, फतेह बहादुर सिंह, कमला प्रसाद फौजी, शिवम मिश्रा, इश्तियाक अहमद, जिला प्रवक्ता वेदांत तिवारी उपस्थित थे।

जिला मुख्यालय पर किया प्रदर्शन

ताला तोड़कर हजारों की चोरी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश जेठवारा थाना अंतर्गत पुलिस चौकी कटरा गुलाब सिंह में अज्ञात चोरों द्वारा डॉक्टर एसएन सक्सेना, जय नारायण लाल सक्सेना निवासी कटरा गुलाब सिंह थाना जेठवारा दीपावली मनाने के लिए परिवार के साथ लखनऊ गए हुए थे। चिकित्सक जब अपने घर आए तो दरवाजे की सिकड़ी टूटी हुई थी। अंदर घुसे तो दूसरे दरवाजे की सिकड़ी व ताले टूटे हुए थे और चोरों द्वारा दो कारतूस और सिंगल बैरल बंदूक मकान से चोरी कर ले गए। बदमाश जांच कर रही है।

अध्यक्ष राजेश सिंह ने सहयोग के लिए बढ़ाया हाथ

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी नगर में 16 नवंबर को आयोजित एकता कलात्मक झांकी और विद्युत मंडल कार्यक्रम में ई मानापुर फाउंडेशन के अध्यक्ष राजेश सिंह फिर से एक बार सामाजिक क्षेत्र में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने जा रहे हैं। लगातार पांच वर्षों से हर बार वह एकता कलात्मक झांकी तथा विद्युत मंडल को अपना सर्वश्रेष्ठ सहयोग प्रदान करते हैं। पट्टी तहसील क्षेत्र के मानापुर गांव के रहने वाले राजेश सिंह समाजसेवी के रूप में लोकप्रिय हैं और सामाजिक क्षेत्रों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हैं और जब जब पट्टी नगर में ऐतिहासिक दशहरा मेला लगता है और एकता कलात्मक झांकी निकाली जाती है तथा विद्युत मंडल से की तरफ से कार्यक्रम आयोजित होता है हर बार बढ़-चढ़कर सहयोग प्रदान करते हैं इस बार भी आर्थिक रूप से सहयोग देने का उन्होंने वादा किया है जिसके लिए एकता कलात्मक जांच और विद्युत मंडल के सभी पदाधिकारी उनके प्रति आभार प्रकट करते हुए उनका धन्यवाद किया है।

-एमडीपीजी कालेज में फार्म लेने के लिये लगी भीड़

एमडीपीजी कालेज में टैबलेट/स्मार्ट फोन के आवेदन के लिये उमड़ी भीड़

छात्र-छात्राओं की भीड़ से राजमार्ग पर जाम की स्थिति बनी रही

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर के एमडीपीजी कालेज में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं में टैबलेट/स्मार्ट फोन के लिये मंगलवार को छात्र-छात्राओं की भीड़ उमड़ पड़ी जिसके लिये महाविद्यालय में कई काउंटर बनाकर विश्वविद्यालय से आए फार्मेट की कापी छात्र-छात्राओं को वितरित की गई। महाविद्यालय में पंजीकृत लगभग पांच हजार छात्र-छात्राओं का आवेदन विश्वविद्यालय आनलाइन भेजना है।

इसके लिये महाविद्यालय के प्राचार्य डा0 मनोज मिश्रा व उनके सभी सहयोगी प्राध्यापकगण व्यवस्था को सुचारु रुप से चलाने के लिये डटे रहे। इस बारे में पूछने पर महाविद्यालय के जनसूचना अधिकारी डा0 सी0एन0 पाण्डेय ने बताया कि आज मंगलवार को एमडीपीजी कालेज के मुख्य भवन में तथा जोगापुर स्थित महाविद्यालय के भवन में आवदेन पत्र छात्र-छात्राओं को वितरित किया गया। जोगापुर के बीकाम व एमकाम की छात्राएं थी जबकि महाविद्यालय में बीए, बीएसएसी तथा एमए के छात्र-छात्राओं को आवेदन पत्र वितरित किया गया। एमडीपीजी कालेज में हजारों छात्र-छात्राओं की भीड़ से प्रयागराज-अयोध्या राजमार्ग पर दिन में जाम की स्थिति भी बनी रही।

खबर संक्षेप

डिप्टी सीएम के पुत्र ने समस्या निवारण का अधिकारियों को दिया आदेश

कौशाम्बी। सिराथू विधानसभा के कसिया मंडल में उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या के पुत्र योगेश कुमार मौर्य ने रामचौरा गरीब का पूरा सिंधिया आदि गांव में जन चौपाल लगाकर आप जनमानस की समस्या सुनी और तत्काल निवारण के लिए अधिकारियों को आदेश दिया। योगेश मौर्या ने सरकार की योजनाओं के बारे में वा पार्टी के बारे में विस्तार से चर्चा की इस मौके पर जिला मंत्री जगदीश सरोज पूर्व क्षेत्रीय उपाध्यक्ष रामू विश्वकर्मा सूरज विश्वकर्मा मीडिया प्रभारी जिला अध्यक्ष युवा मोर्चा रिंकू मौर्या राजू सरोज मुलायम सिंह यादव आदि रहे।

सड़क हादसे में बाइक सवार युवक की मौत

कल्यानपुर कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के पुलिस चौकी सिंधिया के अंतर्गत बिसारा टावर पेट्रोल पंप के पास अज्ञात वाहन की टक्कर से पल्सर बाइक सवार युवक की दर्दनाक मौत हो गई। सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। बताया जाता है कि मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के अम्बावा पश्चिम गांव निवासी इंद्रपाल सरोज उम्र लगभग 30 वर्ष पुत्र जगन्नाथ सरोज मंगलवार की सुबह बाइक से भरवारी बाजार जा रहे थे जैसे ही बाइक सवार बिसारा टावर पेट्रोल पंप के पास पहुंचे कि तेज गति अनियंत्रित वाहन ने उन्हें टक्कर मार दिया जिससे बाइक समेत सड़क पर गिर पड़े, गंभीर दशा में मंझनपुर जिला अस्पताल पहुंचाया गया लेकिन हालत गंभीर होने के चलते मौत हो गई है।

आंगनवाड़ी कर्मचारियों ने धरना प्रदर्शन कर किया आवाज बुलंद

सरकार ने लापरवाही की तो आने वाले विधानसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशियों को भी भुगतना पड़ सकता है खामियाजा

अखंड भारत संदेश

आंगनवाड़ी के धरना सभा में उपस्थित कर्मचारी

कौशांबी। विभिन्न मांगों को लेकर महिला आंगनवाड़ी कर्मचारी संघ लंबे समय से धरना प्रदर्शन कर आवाज बुलंद कर रहा है लेकिन बार-बार सरकार द्वारा केवल आंगनवाड़ी कर्मचारी संघ को आश्वासन दिया जा रहा है जिससे आंगनवाड़ी संघ का आक्रोश बढ़ता जा रहा है और उत्तर प्रदेश सरकार का चुनाव 2022 नजदीक आते ही एक बार फिर आंगनवाड़ी कर्मचारी लामबंद हो गयी हैं और अपने विभिन्न मांगों को पाने के लिए उन्होंने धरना प्रदर्शन आंदोलन सभा शुरू कर दिया है आंगनवाड़ी कर्मचारी संघ की मांगों में यदि योगी सरकार ने तनिक लापरवाही की तो इसका खामियाजा आने वाले विधानसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशियों को भी भुगतना पड़ सकता है।

योगी की सरकार उत्तर प्रदेश में आते ही आंगनवाड़ी केंद्रों में संचालित पुष्टाहार पंजीरी पोषाहार और दोपहर भोजन हाट कुक्ड दोपहर भोजन योजना भी बंद कर दी गई अब केंद्रों में 3 वर्ष से ऊपर के बच्चों को आधा किलो महीना दाल आधा किलो दलिया और कभी-कभी गेहूं चावल दे दिया जाता है और 0 से 3 साल के बच्चे और उनके मां को संयुक्त रूप से 1 किलो दाल 1 किलो दलिया एक डिब्बे में आधा लीटर तेल और कभी-कभी गेहूं चावल दे दिया जाता है आंगनवाड़ी केंद्रों की अन्य योजनाएं योगी सरकार द्वारा बंद कर दी गई हैं जिससे आंगनवाड़ी केंद्रों के लाभार्थियों को लाभ नहीं मिल रहा है सरकार द्वारा कोटेदारों के जरिए खाद्यान्न का वितरण कराया जाता है लेकिन कोटेदारों के लगातार धांधली से लाभार्थियों को गेहूं चावल नहीं मिल पाता जिससे आंगनवाड़ी केंद्र में लाभ पाने वाले लोग आंगनवाड़ी कर्मचारियों से अभद्रता करते हैं स्वयं सहायता समूह द्वारा राशन वितरण में बड़ी धांधली की जा रही है अक्टूबर 2017 का 2 महीने का वेतन मानदेय आंगनवाड़ी को नही दिया गया है उसे दिलाए जाने की मांग भी आंगनवाड़ी संघ ने की है योगी सरकार ने आंगनवाड़ी कर्मचारियों का मानदेय बढ़ाने की घोषणा की थी लेकिन लागू नहीं हो सका जिससे आंगनवाड़ी कर्मचारियों में आक्रोश व्याप्त है तमाम मांगों को लेकर महिला आंगनवाड़ी कर्मचारी संघ एक बार फिर आंदोलनरत हो गया और धरना प्रदर्शन नारेबाजी सभा कर अपने अधिकार की लड़ाई लड़ रहा है जनपद मुख्यालय मंझनपुर के ब्लॉक परिसर में प्रदेश कार्यवाहक अध्यक्ष माया सिंह के नेतृत्व में सैकड़ों आंगनवाड़ी कार्यकत्री एकत्रित हुई और आवाज बुलंद की है इस मौके पर सुषमा सिंह संजना दीक्षित अनीता देवी सुनीता देवी रेनू प्रजापति बबीता देवी सोफिया स्वयंप्रभा सहित तमाम आंगनवाड़ी कार्यकत्री मौजूद रही।

न्यूज झरोखा

किसान महिला मजदूर मजलूमों की आवाज बनकर उतरेगी कांग्रेस : राघवेंद्र सिंह

कौशाम्बी। कांग्रेस सदैव ही देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति आस्था रखती रही है और उसके प्रति समर्पित रही आज देश में लोकतंत्र को कमजोर करने का प्रयास किया जा रहा है ऐसे में कांग्रेस के सिपाही आजादी मैं अपने क्रांतिकारी भावना को साथ में लेकर किसान महिला मजदूर और मजलूमो के आवाज बन कर मैदान में उतरने का काम करेंगे। उक्त बातें पार्टी के प्रदेश महासचिव जिला प्रभारी राघवेंद्र सिंह ने जनपद के प्रथम आगमन के अवसर पर आयोजित पार्टी के कार्यालय में कार्यकताओं से वार्ता करते हुए कही इसके पूर्व पार्टी के कार्यकताओं ने उनका जिले में पहली बार पहुंचने पर माला फूल से लादकर उनका भव्य स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पार्टी के जिला अध्यक्ष अरुण विद्यार्थी ने किया विशिष्ट अतिथि प्रदेश सचिव राम किशुन पटेल मौजूद रहे। इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि अब वह समय आ गया है जब पार्टी के प्रत्येक कार्यकर्ता को गांव गांव पहुंचकर पार्टी के नेताओं के द्वारा किए जा रहे संघर्षों को व पार्टी के किए गए कार्यों को बताना होगा और उनको यह भी बताना होगा कि मौजूदा सरकार देश की अर्थव्यवस्था को चौपट करने में लगी हुई है। कार्यक्रम को प्रमुख रूप से प्रदेश सचिव रामकिशुन पटेल, पूर्व विधायक राम सजीवन निर्मल, जिलाध्यक्ष अरुण विद्यार्थी, वेद प्रकाश पाण्डेय सत्यार्थी, शाहिद सिद्दीकी, रमेश अग्रहरी, हर्षवर्धन दुबे, अमित द्विवेदी आजाद, जितेन्द्र शर्मा, कौशलेश द्विवेदी, अंकुर शुक्ला, मिसबहुल ऐन, पुष्करनाथ, अजय पाण्डेय, इजहार अब्बास, मथुरा दुबे, सचिन शुक्ला, मो गुलाम, बरसाती लाल पाण्डेय, अमृत लाल, भारत गौतम, कमलकांत शुक्ला, संजीव पाण्डेय, तमजीद, सरफराज आलम, नरेन्द्र परमार, राम प्रकाश, छितानीलाल, पवन दिवाकर, लालचंद हेला, विनोद चौधरी, धर्मेंद्र, फैसल अली, भागीरथी पटेल, शकील कुरैसी, सफीक अहमद, देशराज पटरिया, सुमन, मंजीत कैथवास, सुभाष रंजन, अरविन्द सिंह, अमन पाण्डेय, असगर मदनी, हेमन्त रावत सहित सैकड़ों कांग्रेसी मौजूद रहे।

विश्व पत्रकार महासंघ के जिलाध्यक्ष का हाल-चाल लेने पहुंचे पत्रकार साथी

कौशाम्बी। विश्व पत्रकार महासंघ के जिला अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार प्रदीप कुशवाहा कुछ दिन पहले किसी कार्यक्रम में सरीक होने गए थे। उसी कार्यक्रम के दौरान उनका पैर फिसल गया जिसके कारण उनका एक हांथ फैक्चर हो गया है। जिसके चलते उनका हांथ कार्य करने में असमर्थ है और उनका इलाज प्रयागराज के एक हॉस्पिटल में चल रहा है। प्रदीप कुशवाहा सरल स्वभाव एवं लोकप्रिय पत्रकार के रूप में जाने जाते हैं। उनका एक हांथ फैक्चर होने की खबर जैसे ही उनके चाहने वालों के कानों तक पहुंची उनका हाल चाल लेने के लिए प्रतिदिन दर्जनों लोग उनके गृह आवास पहुंचकर जल्द से जल्द स्वस्थ होने की कामना ईश्वर से कर रहे हैं इसी क्रम में मंगलवार के दिन राजकुमार पत्रकार अपने सहयोगी मित्र राहुल कुमार के साथ प्रदीप कुशवाहा के गृह आवास पहुंचकर उनका हाल चाल जाना और जल्द ही ईश्वर की कृपा से उनका हांथ ठीक होने की कामना की है।

मौर्या धर्मशाला को बर्बाद करने में लगे हैं अधिशासी अधिकारी

कौशाम्बी। आदि शक्ति मां शीतला देवी के नगर पंचायत कड़ा धाम स्थिति मौर्य धर्मशाला को अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत अनिल मौर्या बर्बाद करने में लगे हैं इसके पीछे किसी राजनीतिक दबाव की बात प्रकाश में आ रही है अधिशासी अधिकारी के निर्देश पर मौर्य धर्मशाला के अंदर कूड़ा जलाया जा रहा हैं। धर्मशाला के अंदर कूड़ा जलाए जाने से या धर्मशाला बर्बाद हो रहा है लेकिन मना किए जाने के बाद भी नगर पंचायत के सफाई कर्मी और अधिशासी अधिकारी मानने को तैयार नहीं है जिससे समाजिक सहयोगियों द्वारा उक्त धर्मशाला का जो मरम्मती करण कराकर पेंट सफाई कराया गया वह खराब हो रहा है। अधिशासी अधिकारी के कारनामे के चलते यह सफाई कर्मचारियों की मनमानी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि नगर पंचायत कड़ा के अधिशासी अधिकारी अनिल मौर्या समाज के दुशमन है नगर वासियों ने बताया कि एक स्थानीय नेता खुन्नस के चलते उक्त धर्मशाला को बर्बाद करना चाहते हैं और नेता के दबाव में अधिशासी अधिकारी ने धर्मशाला को कूड़ा जलाने का स्थान बना दिया है स्थानीय लोगों का कहना है कि अधिषासी अधिकारी के कारनामे पर उनके साथ आने वाले समय में नेता को भी करारा जवाब दिया जाएगा स्थानीय लोगों ने उत्तर प्रदेश सरकार के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्या से मौर्या धर्मशाला बचाए जाने की अपील की है।

सड़क दुर्घटना में बाइक सवार दो युवक गम्भीर घायल

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के नगर पंचायत अझुवा टाण्डा रोड पर कमला देवी इंटर कालेज के पास सोमवार की देर शाम बाइक सवार 2 युवक सड़क हादसे में गंभीर घायल हो गए।जिन्हें मौके पर पहुंची अझुवा पुलिस ने इलाज के लिए स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया है एक युवक सोनू की गभीर स्थिति देखते हुए पुलिस ने 108 एम्बुलेंस से उसे जिला अस्पताल भेज दिया है जानकारी के अनुसार रिंकू उम्र लगभग 35 वर्ष पुत्र लालता निवासी ग्राम सभा टाण्डा अपने रिश्तेदार सोनू उम्र लगभग 23 वर्ष पुत्र स्व बाबूलाल के साथ कहीं गया था कमला देवी इंटर कालेज के पास अज्ञात कारणों से सड़क किनारे दोनो घायल पड़े थे राहगीरों ने देखा तो अझुवा चौकी में सूचना दी है लोगों के अनुसार दोनों युवक नशे में थे।

महिला जागरूकता कार्यक्रम में महिलाओं का छलक पड़ा दर्द

अखंड भारत संदेश

महिला उत्थान एवं जागृति संस्थान के सौजन्य से महिला एवं बालिका जागरूकता अभियान का कार्यक्रम आयोजित

अंजना मिश्रा ने कहा कि जिले के प्रत्येक गांव में महिला एवं बालिका जागरूकता अभियान का आयोजन कर महिलाओं बालिकाओं के उत्थान का किया जाएगा प्रयास

महिला जागरूकता कार्यक्रम में उपस्थित संगठन पदाधिकारी व ग्रामीण महिलाएं

कौशांबी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के यमुना नदी के किनारे गढ़वा गांव स्थित जैन मंदिर परिसर में मिशन शक्ति योजना के तहत महिला उत्थान एवं जागृति संस्थान के सौजन्य से महिला एवं बालिका जागरूकता अभियान का कार्यक्रम सोमवार को आयोजित किया गया महिला एवं बालिका जागरूकता कार्यक्रम के आयोजन की जानकारी मिलते ही यमुना नदी किनारे क्षेत्र की सैकड़ों महिलाएं और बालिकाएं कार्यक्रम में उपस्थित हुईं और उन्होंने सरकार की योजनाएं गांव ग्रामीणों तक ना पहुंचने का दर्द बया किया कार्यक्रम में गांव गांव से आई महिलाओं ने बताया कि गांव में राशन कार्ड नहीं बनाया जा रहा है जिससे प्रधानमंत्री की निशुल्क राशन योजना का लाभ वर्षो बीत जाने के बाद भी नहीं मिल रहा है इस भीड़ में मौजूद तमाम महिलाओं ने बताया कि उनके कच्चे घर बारिश के चलते गिर गए हैं बार-बार शिकायत करने के बाद और आवासीय फार्म जमा करने के बाद भी उन्हें आवासीय योजना का लाभ सरकार से नहीं मिल रहा है महिलाओं की शिकायत पर महिला उत्थान एवं जागृति संस्थान की अध्यक्ष अंजना मिश्रा ने मौके पर लेखपाल को बुलाने का प्रयास किया लेकिन मौके पर लेखपाल नहीं मौजूद हो सके। कार्यक्रम में मौजूद महिलाओं ने बताया कि यमुना तराई क्षेत्र में पशुओं की संख्या अधिक है लेकिन सरकार द्वारा इस क्षेत्र में गौशाला नहीं स्थापित किया गया है जिससे आवारा पशु किसानों की फसलों को बर्बाद कर रहे हैं बार-बार ग्रामीणों की मांग के बाद भी इस क्षेत्र में गौशाला नहीं स्थापित हो सका है इस मौके पर उपस्थित महिला उत्थान एवं जागृति संस्थान की अध्यक्ष अंजना मिश्रा ने कहा कि जिले के प्रत्येक गांव में महिला एवं बालिका जागरूकता अभियान का आयोजन कर महिलाओं बालिकाओं के उत्थान का भरसक प्रयास किया जाएगा उन्होंने कहा कि कौशांबी जिले के दूरदराज के इलाके के गांव में विकास का आभाव है जिससे गांव क्षेत्र की महिलाओं बालिकाओं को सरकारी योजनाओं का लाभ नही मिल पाता है जागरूकता की कमी के चलते सरकारी योजनाओं में लिप्त लोग योजनाओं का लाभ उठा लेते हैं महिला उत्थान एवं जागृति संस्थान के सहयोग से कार्यक्रम आयोजित कर महिलाओं के उत्थान और उनके विकास का भरसक प्रयास किया जाएगा। इस कार्यक्रम में बाल कल्याण समिति से निधि त्रिपाठी जिला प्रोबेशन कार्यालय से पूनम पाल अंजू दुबे महिला उत्थान समिति से लीना अवस्थी उच्च न्यायालय की वरिष्ठ अधिवक्ता निशा त्रिपाठी अलका त्रिपाठी स्वाति यादव हेमलता निशु ग्राम प्रधान मुन्नू लाल सहित तमाम आशा बहू आंगनवाड़ी कार्यकत्री गांव क्षेत्र की महिलाएं बालिकाएं मौजूद रही

सेल्फी के चक्कर मे ट्रेन से कटकर युवक की गई जान

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के नगर पंचायत अझुवा के पास स्थित भैरम बाबा के पास दिल्ली हावड़ा रेल मार्ग पर खंभा न .8 91/14/16 डाउन लाइन पर एक युवक की ट्रेन की टक्कर से मौत हो गयी है। जानकारी के अनुसार ग्राम सभा धुमाई निवासी राजकुमार उम्र लगभग 23 वर्ष पुत्र छेदु रैदास भैरम बाबा में लगने वाले विशाल मेला को देखने आया था रेलवे ट्रैक पार करते समय वह ट्रेन की चपेट में आ गया जिससे राजकुमार की दर्दनाक मौत हो गयी सूचना पर परिजन मौके पर पहुंच गए माता पिता परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है वहीं कुछ प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया मृतक के साथ एक दो युवक और थे ट्रेन आने की सेल्फी ले रहे थे सुपरफास्ट ट्रेन उड़ीसा सम्पर्क क्रांति ट्रेन की टक्कर से युवक दूर जा गिरा और युवक की मौके पर ही मौत हो गयी है। सूचना पर सैनी कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है।

सरकारी खजाना लूटने वाले मंद बुद्धि के अफसरों को आखिर जेल भेजने में हीला हवाली क्यों

अखंड़ भारत संदेश

सड़क के दोनों तरफ पेड़ का विखराव हो जाने से दुर्घटना बढ़ेगी लोगों की मौत का इंतजाम करने वाले अधिकारियों पर नरम दिली क्यों

कौशांबी। नगर पालिका परिषद मंझनपुर द्वारा कस्बे के चौराहे से समदा रोड की सड़क के छोटे डिवाइडर में बड़े पेड़ की डाल खोंसकर पौधारोपण कराए जाने के नाम पर सरकारी खजाने में बड़ा घोटाला अफसरों द्वारा किया जा रहा है नगरपालिका का यह कारनामा सार्वजनिक होने के बाद भी नगर पालिका के मंदबुद्धि के अफसरों को जेल भेजने में आखिर क्यों हीला हवाली की जा रही है छोटे डिवाइडर में बड़े पेड़ का पौधारोपण के नाम पर सबकुछ जानबूझकर सोची-समझी कुटिल मानसिकता के चलते बड़े कमीशन खोरी के लालच में गलत किया जा रहा है और डिवाइडर में पौधारोपण के नाम पर केवल सरकारी खजाने से धन लूटने की मंशा नगरपालिका के अधिकारियों की है आखिर कब तक नगर पालिका मंझनपुर के सरकारी खजाने में भ्रष्ट अधिकारी द्वारा झूठे विकास कार्य योजना के नाम पर डाका डाल कर सरकारी खजाना लूटा जाता रहेगा वर्षो से भ्रष्टाचार में लिप्त अधिशासी अधिकारी को सत्ता पक्ष के किस नेता का संरक्षण मिला है जिससे भ्रष्ट अधिकारी पर मुकदमा दर्ज करा कर उसकी गिरफ्तारी कराए जाने में बार बार हीला हवाली हो रही है।

बताते चलें कि मंझनपुर चौराहे से समदा सड़क पर 2 फीट के डिवाइडर लोक निर्माण विभाग द्वारा बनाया गया है जिस पर पूर्व से लोक निर्माण विभाग द्वारा पौधारोपण किया जा चुका है लेकिन इस डिवाइडर में कनेर के पेड़ की डाल खोंस दी गई है कनेर का पेड़ लग जाने के बाद 10 फीट से अधिक जगह में बिखराव लेता है मंझनपुर के मुख्य सड़क में आवागमन अधिक है और इस सड़क को जंगल बनाया जा रहा है सड़क के दोनों तरफ पेड़ का विखराव हो जाने से दुर्घटना भी बढ़ेगी और लोगों की मौत का इंतजाम होगा इस बात का खुलासा होने के बाद भी डिवाइडर में पेड़ खोसकर रकम निकालने वाले अधिकारियों ने अब डिवाइडर में लगे कनेर को पेड़ की डाल को उखाड़कर फेंकने के बजाय उस पौधे को तैयार करने के लिए कई कर्मचारियों को लगा दिया है नगरपालिका के टैंकर से पौधे को पानी दिया जा रहा है जिससे नगरपालिका का बड़ा बजट खर्च हो रहा है। आखिर जिस सड़क के डिवाइडर में बड़े पेड़ लगाए जाने का स्थान नहीं था उस सड़क में मौत को दावत देने वाले कनेर जैसे बड़े पौधे क्यों लगाए गए हैं सड़क को जंगल क्यों बनाया जा रहा है यह कार्य योजना किस मंदबुद्धि अधिकारी इंजीनियर ने बनाई है 2 फुट के डिवाइडर में 10 फुट का पेड़ तैयार करने की योजना बनाए जाने वाले अधिकारी मंदबुद्धि हो सकते हैं और इन मंदबुद्धि अधिकारियों का कुर्सी पर रहने की आवश्यकता क्या है छोटे डिवाइडर में क्षमता से बड़े कनेर के पौधे का रोपण कर अधिकारियों ने नगर वासियों की मौत का इंतजाम कर लिया है इसके पीछे नगर पालिका के जिम्मेदारों का केवल कमीशन खोरी का खेल है नगर के छोटे डिवाइडर में बड़े पेड़ लगाकर मौत का इंतजाम करने के मामले की जांच कराकर जानबूझकर सरकारी खजाने की रकम लूटने वाले अफसरों को गिरफ्तार कर जेल भेजना होगा तभी योगी सरकार का सरकारी खजाना सुरक्षित रह सकता है लेकिन अभी तक सरकारी खजाना लूटने वाले मंदबुद्धि अधिकारियों को गिरफ्तार कर जेल नहीं भेजा गया है जो योगी सरकार की व्यवस्था पर बड़ा सवाल है नगर वासियों ने सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मांग करते हुए कहा है कि नगरपालिका में विकास के नाम पर झूठे दावे कर सरकारी खजाना लूटने और छोटे डिवाइडर में बिना कार्य योजना के बड़े पेड़ का पौधारोपण कर खजाने की रकम निकालने वाले अधिकारियों के कारनामे की उच्च स्तरीय जांच कराते हुए इन पर कठोर कार्यवाही करते हुए मुकदमा दर्ज कराया जाना इन्हें निलंबित किया जाना और सरकारी खजाना लूटने के आरोप में नगरपालिका के जिम्मेदारों को पर मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तारी कराया जाना आवश्यक है।

कौशांबी प्रेसिडेंसी स्कूल एंड कॉलेज में हुआ बैज अलंकरण समारोह

अखंड भारत संदेश

प्रेसिडेंसी स्कूल के शिक्षक और छात्र

कौशाम्बी। भरवारी स्थित कौशांबी प्रेसिडेंसी स्कूल एंड कॉलेज में मंगलवार को बैज अलंकरण समारोह संपन्न हुआ जिसमें छात्र एवं छात्राओं को विभिन्न पदों का बैज पहना कर सम्मानित किया गया इस कार्यक्रम में संस्थान के हेड ब्वॉय के पद पर आदित्य कुमार क्लास 12ई मैथ, हेड गर्ल के पद पर अनन्या जायसवाल क्लास ट्वेल्थ मैथ ग्रुप से चयनित हुए

वही डिसिप्लिन कैप्टन बालक वर्ग मयंक मिश्रा डिसिप्लिन कैप्टन बालिका वर्ग में काजल तिवारी का नाम चयनित हुआ। स्पोर्ट्स कैप्टन बालक वर्ग आर्यन गुप्ता एवं स्पोर्ट्स कैप्टन बालिका वर्ग सारा रुस्तम खान का चयन हुआ। एक्टिविटी कैप्टन बालक वर्ग आयुष्मान त्रिपाठी तथा एक्टिविटी कैप्टन बालिका वर्ग में प्रभा का नाम चयनित हुआ रेड हाउस कैप्टन बालक वर्ग वैभव केसरवानी, रेड हाउस बालिका वर्ग कशिश जायसवाल,ग्रीन हाउस कैप्टन बालक वर्ग निर्मित श्रीवास्तव, ग्रीन हाउस कैप्टन बालिका वर्ग कनक अग्रहरी,येलो हाउस कैप्टन बालक वर्ग अक्षित द्विवेदी,येलो हाउस बालिका वर्ग शैलजा त्रिपाठी ,ब्लू हाउस कैप्टन बालक वर्ग चाहत केशेरवानी,ब्लू हाउस बालिका वर्ग अंशिका रस्तोगी का नाम चयनित हुआ इस कार्यक्रम के चीफ गेस्ट केपीएस किडजी फाउंडर मास्टर देव बाबू गुप्ता ने अपने संदेश में सभी बैज होल्डर्स को उनके उज्जवल भविष्य की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दिया कार्यक्रम में कौशांबी प्रेसिडेंसी स्कूल एंड कॉलेज की प्रधानाचार्य श्रीमती सीमा पवार आरके सिंह अकांत गुप्ता रामपूजन तिवारी अनुपमा जयसवाल सहित समस्त शिक्षक एवं शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

कैंप आयोजित कर यातायात पुलिस ने कराया चालको का नेत्र परीक्षण

कौशाम्बी। यातायात पुलिस ने कैम्प आयोजित कर वाहन चालकों का नेत्र परीक्षण कराया है नेत्र परीक्षण के दौरान उन्होंने वाहन चालकों को यातायात नियमों की जानकारी दी है मंझनपुर चौराहे में अपर पुलिस अधीक्षक समर बहादुर, क्षेत्राधिकारी यातायात डॉ0 कृष्ण गोपाल सिंह, क्षेत्राधिकारी अवधेश कुमार, यातायात निरीक्षक रविंद्र त्रिपाठी एवं आर0 आई0 चंद्रशेखर शर्मा की उपस्थिति में यातायात पुलिस टीम द्वारा निशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया जिसमें बस, ट्रक, मेटाडोर, यूटिलिटी, टैक्सी-टेंपो एवं ई-रिक्शा चालको का नेत्र परीक्षण कराया गया। नेत्र परीक्षण का कार्य डॉ0 मनोज यादव एवं डॉ0 जे0के0 साहू, नेत्र परीक्षण अधिकारी, राजकीय जिला चिकित्सालय मंझनपुर द्वारा संपादित किया गया। शिविर में 112 वाहन चालकों का नेत्र परीक्षण किया गया जिनमें से 78 वाहन चालकों कि आई साइट सही पाई गई तथा 34 वाहन चालकों को उपचार एवं चश्मा पहनने हेतु चिकित्सकों द्वारा निर्देशित किया गया। शिविर में आए हुए वाहन चालको एवं आम जनमानस को यातायात के नियमों से जागरूक किया गया तथा समय-समय पर नेत्र परीक्षण, शारीरिक परीक्षण एवं अपने वाहनों का फिटनेस परीक्षण कराए जाने हेतु प्रेरित किया गया ताकि सड़क दुर्घटनाओं में कमी आ सके। शिविर में नेत्र परीक्षण के दौरान 21 यातायात कर्मियों का भी नेत्र परीक्षण कराया गया। यातायात प्रवर्तन की कार्यवाही के क्रम में मंगलवार को विशेष रूप से वाहनों में प्रदूषण प्रमाण पत्र की चेकिंग करते हुए मोटर वाहन अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों के उल्लंघन पर 86 वाहन चालकों के विरुद्ध ई-चालान की कार्यवाही संपादित की गई तथा मौके पर 2000 का शमन शुल्क भी वसूल किया गया साथ ही वाहन चालकों को यातायात नियमों के अनुपालन एवं सुरक्षित यात्रा हेतु निर्देश दिए गए।

भाजपा सरकार में चौपट कानून व्यवस्था त्राहि त्राहि कर रही जनता : ऊषा मौर्या

अखंड भारत संदेश

युवा नेता शिव शक्ति कुशवाहा के नेतृत्व में समाजवादियों ने उषा मौर्य का किया जोरदार स्वागत, भाजपा सहित तमाम राजनीतिक दल को छोड़कर तमाम लोगों ने ली समाजवादी पार्टी की सदस्यता

मंच पर मौजूद समाजवादी पार्टी के नेता

अझुवा कौशाम्बी। नगर पंचायत अझुवा में समाजवादी पार्टी की एक सभा में मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए पूर्व मंत्री मुन्ना लाल मौर्या की पत्नी उषा मौर्य पूर्व प्रत्यासी हुसैनगंज फतेहपुर ने कहा कि उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार में कानून व्यवस्था पूरी तरह से चौपट हो चुका है हत्या लूट बलात्कार भ्रष्टाचार से आम जनता का जीना मुहाल है चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई है उन्होंने कहा कि मोदी और योगी सरकार केवल देश की संपत्तियों को बेच रही है उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार में महंगाई चरम पर है डीजल पेट्रोल की बढ़ती कीमत से किसानों की कमर टूट गई है उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के झूठ से जनता ऊब चुकी है और आने वाले दिनों में भाजपा सरकार को सत्ता से उखाड़ फेंके गी उन्होंने कहा कि आने वाले समय में प्रदेश की जनता समाजवादी पार्टी की सरकार सत्ता में देखना चाहती है कार्यक्रम की शुरूआत में सपा नेता उषा मौर्या का युवा नेता शिव शक्ति कुशवाहा के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी के नेताओं ने जोरदार तरीके से स्वागत किया है। कार्यक्रम में पूर्व चेयरमैन कैलास केसरवानी आनन्द मोहन पटेल विक्की साहू डॉ असलम ,कासिम, ज्ञान दत्त यादव अशोक गौतम हुसैन फैसल भाई, धर्मेंद्र सिंह ज्ञान पाल विमल मौर्य अजय सिंह,विक्की केसरवानी मज्जन अली अंकित विश्वकर्मा सहित सैकड़ों सपा नेता आम कार्य कर्ता सहित तमाम लोग मौजूद रहे। मुख्य अतिथि ऊषा मौर्या की उपस्थिति में विभिन्न पार्टियों को त्यागपत्र दे कर आए हुए नेताओ को समाजवादी पार्टी में शामिल कराया गया अन्य राजनैतिक दल छोड़कर सपा में शामिल हुए लोगों में मुख्य रूप से भारतीय जनता पार्टी के पूर्व सभासद जुगराज सिंह बालकृष्ण मौर्य अरविंद मौर्य सहित 51 लोग समाजवादी पार्टी में शामिल हुए हैं।वहीं आयोजक शिव शक्ति कुशवाहा ने सभी का आभार प्रकट किया है।

सम्पादकीय

पुलिस पर सवाल

उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में पिछले महीने हुई हिंसा की जांच के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने गंभीर टिप्पणी की है। इस मामले में पुलिस ने जिस तरह से कदम उठाए और जांच प्रक्रिया को जिस तरह से आगे बढ़ाया, उस पर शुरू से ही सवाल उठाए जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में पिछले महीने हुई हिंसा की जांच के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने गंभीर टिप्पणी की है। इस मामले में पुलिस ने जिस तरह से कदम उठाए और जांच प्रक्रिया को जिस तरह से आगे बढ़ाया, उस पर शुरू से ही सवाल उठाए जा रहे हैं। जब सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले की सुनवाई शुरू की, तब उसके सामने भी ये सवाल थे। अदालत को पता था कि चूंकि आरोपों की जद में आ रहे लोग केंद्रीय गृहराज्य मंत्री जैसे पद पर बैठे व्यक्ति से सीधे तौर पर जुड़े हैं, इसलिए हो सकता है पुलिस जांच उस रूप में आगे न बढ़ सके, जिस तरह से ऐसे गंभीर मामलों में इसे बढ़ना चाहिए। बावजूद इसके, सुप्रीम कोर्ट ने यूपी पुलिस पर भरोसा करते हुए उसे मौका दिया कि वह इस महत्वपूर्ण मामले की सही ढंग से जांच करके तमाम आशंकाओं को गलत साबित करे। अफसोस की बात है कि यूपी पुलिस ने न तो मौके की अहमियत समझी और न ही वह अपने व्यवहार से देश की सर्वोच्च अदालत को प्रभावित कर पाई।

सुप्रीम कोर्ट ने यूपी पुलिस की ओर से पेश की गई स्टेटस रिपोर्ट को तो निराशाजनक बताया ही, उसकी अब तक की गई कार्रवाई में भी बहुत सारी कमियां पाईं। इन कमियों को देखते हुए कोर्ट की राय बनी कि ऐसे में मामले की सही, विश्वसनीय और पारदर्शी जांच यूपी पुलिस के द्वारा संभव नहीं है। उसके सामने यह दुविधा भी थी कि क्या यह मामला सीबीआई या किसी सेंट्रल एजेंसी को सौंपा जाए? अदालत ने ऐसा नहीं किया। उसने अंततः इस मामले की जांच राज्य से बाहर के किसी हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज की देखरेख में कराने का फैसला किया है। वह डे-टुडे बेसिस पर तब तक इस जांच पर नजर रखेंगे जब तक कि चार्जशीट फाइल नहीं कर दी जाती। मामले की अगली सुनवाई शुक्रवार को होनी है और देखना होगा कि उस दिन राज्य सरकार इस बारे में क्या कहती है, लेकिन यह पूरा मामला देश की पुलिस व्यवस्था पर सख्त टिप्पणी है। इससे पहले भी अदालतें कई तरह के मामलों में पुलिस की जांच व्यवस्था पर सवाल उठाती रही हैं, लेकिन इसके बावजूद इस मामले में स्थिति बहुत बेहतर नहीं हुई है। यहां तक कि सीबीआई सहित दूसरी केंद्रीय जांच एजेंसियों पर भी राजनीतिक दबाव में काम करने के आरोप लगते रहे हैं। पुलिस और केंद्रीय जांच एजेंसियों को राजनीतिक दबाव से मुक्त करने के उपाय समय-समय पर सुझाए गए हैं, लेकिन अभी तक इस मामले में ठोस पहल कम ही सामने आई है। अच्छा हो कि सरकार पुलिस सुधार को लागू करे और इसके साथ केंद्रीय जांच एजेंसियों को भी स्वायत्त बनाए। इससे सबको न्याय दिलाने का दायित्व पूरा करने में मदद मिलेगी।

कश्मीर में इस्लामी कट्टरवाद को देना होगा माकूल जवाब

उमेश चतुर्वेदी

यूं तो राजनीति अक्सर अपनी पार्टी लाइन के हिसाब से ही बयान देती है। अगर कोई राजनीतिक शख्स अपनी पार्टी लाइन के खिलाफ कोई संदेश देता है तो उसे या तो नजरंदाज कर दिया जाता है या फिर उसे उस पार्टी में जाने के संदेश के तौर पर देखा जाता है, जिसकी घोषित राजनीतिक लाइन के हिसाब के नजदीक वह बयान होता है। लेकिन यह भी सच है कि राजनेता भी इन्सान ही होता है और कई बार ना चाहते हुए भी उसके दिल की आवाज निकल ही आती है। बीते सत्रह अक्टूबर को कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री मनीष तिवारी ने ट्वीटर पर जो बयान दिया, उसके भी इसी तरह राजनीतिक अर्थ निकाले गए। लेकिन यह मानना होगा कि उन्होंने जो कहा, दरअसल कश्मीर घाटी पर पड़ रहे अंतरराष्ट्रीय नापाक निगाहों का ही खुलासा है। हाल ही में गैर कश्मीरी लोगों की आतंकियों के हाथों हुई हत्याओं के संदर्भ में मनीष तिवारी ने ट्वीटर पर कहा था, ह्लक्या कश्मीर में गैर-मुसलमानों की हत्या, बांग्लादेश में हिंदुओं की हत्या और पुंछ में बड़े पैमाने पर घुसपैठ में नौ जवानों की मौत के बीच कोई संबंध है शायद ऐसा है। दक्षिण एशिया में एक बड़ा पूरा इस्लामवादी एजेंडा काम कर रहा है। यह सच है कि कश्मीर पर अरसे से नापाक निगाह गड़ाए बैठा पाकिस्तान हर मुमकिन मौके पर उसे अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक रंग देने की कोशिश करता है। 15 अगस्त को अफगानिस्तान में तालिबान के कब्जे के बाद वह तुर्की के साथ दक्षिणी एशिया में लगातार इस्लामी आतंकवाद को बढ़ावा देने की कोशिश करता नजर आ रहा है। अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद आतंकवाद के जरिए कट्टर इस्लाम को बढ़ावा देने का मंसूबा रखने वाली ताकतें इन दिनों कुछ ज्यादा ही तेजी में हैं। तुर्की के राष्ट्रपति एदुर्गान संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच से फरवरी में इस्लामवाद को बढ़ावा देने की कोशिश कर ही चुके हैं। गाहे-बगाहे वे भी पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान के कश्मीर राग में अपना सुर भी शामिल करते रहे हैं। इसका ही असर है कि इन दिनों कश्मीर में पिछली सदी के नब्बे के दशक की तरह की हिंसा तेजी से फैलाई जा रही है।

पिछली सदी के नब्बे के दशक में कश्मीरी पंडितों को निशाना बनाया गया, ठीक वैसा ही नजर आ रहा है। साल 2010 में जम्मू-कश्मीर विधानसभा में प्रस्तुत किए गए आंकड़ों के अनुसार उस दौरान आतंकवादियों ने 209 कश्मीरी पंडितों को निशाना बनाया। हालांकि कश्मीरी पंडितों के अधिकारों के लिए संघर्षरत कश्मीर पंडित संघर्ष समिति यानी केपीएसएस के प्रमुख संजय टिक्कू के अनुसार 677 पंडितों को तब आतंकवादियों ने निशाना बनाया था। उस दौरान कश्मीरी पंडितों को निशाना बनाने का मकसद घाटी से गैर मुस्लिम लोगों में दहशत फैलाना था, ताकि वे घाटी को छोड़कर भाग सकें। इससे घाटी में मुस्लिम जनसंख्या का वर्चस्व हो सके। पाकिस्तानपरस्त इस्लामी ताकतों को ऐसा लगता है कि अगर घाटी से गैर मुस्लिम आबादी बाहर निकल जाएगी तो उसके लिए वह हालात मुफीद होगी। कुछ इसी अंदाज में इन दिनों गैर मुस्लिम आबादी को निशाना बनाया जा रहा है। हाल के दिनों में ऐसी हत्याओं से एक बार फिर कश्मीर में गैर मुस्लिम लोगों के बीच दहशत फैलाने की योजना पर आतंकी काम कर रहे हैं। सात अक्टूबर को आतंकियों ने श्रीनगर के सफाकदल हायर सेकेंडरी स्कूल के सभी शिक्षकों को एक साथ लाइन में खड़ा किया। उसके बाद उनके पहचान पत्र और मोबाइल फोन की जांच की। आतंकियों ने उनसे पूछताछ भी की और उनमें से उन लोगों को छोड़ दिया गया, जो मुस्लिम थे। इसके बाद सिख समुदाय की अध्यापिका सतिंदर कौर और हिंदू समुदाय के शिक्षक दीपक चंद को गोली मार दी। इसके पहले पांच अक्टूबर को श्रीनगर के इकबाल पार्क में फामेर्सी मालिक कश्मीरी पंडित माखन लाल बिंदरू को मारा गया। अक्टूबर महीने की 18 तारीख तक आतंकियों ने 12 लोगों की हत्या कर दी। उनमें उत्तर प्रदेश और बिहार से गए मजदूर और ठेला लगाने वाले लोग भी शामिल थे। इस हमले में एक व्यक्ति घायल भी हुआ। इसके पहले श्रीनगर में दो लोगों की गोली मारकर हत्या कर दी थी. श्रीनगर में बिहार के रहने वाले अरविंद कुमार को निशाना बनाया गया। आतंकवादियों के हमले में मारे गए ज्यादातर लोग गैर मुस्लिम थे। कश्मीर में बीती सदी के नब्बे के दशक के आखिरी दिनों में इसी तरह गैर कश्मीरियों को निशाना बनाया गया। इसी तरह साल 2000 में 18 नवंबर को अनंतनाग जिले के छत्तीसिंहपुरा में आतंकवादियों ने 35 सिखों की हत्या कर दी थी। तब अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन भारत आने वाले थे। कश्मीर घाटी में गैर कश्मीरी और गैर मुस्लिम लोगों का यह पहला बड़ा आतंकी नरसंहार था। जाहिर है कि इसके बाद कश्मीर से पलायन बढ़ा। गृहमंत्रालय के आंकड़े के मुताबिक तब कश्मीर घाटी को दहशत के चलते 62 हजार परिवार छोड़कर चले गए थे। उनमें से करीब चालीस हजार परिवार जम्मू और करीब बीस हजार परिवार दिल्ली में रह रहे हैं।

दरअसल, पांच अगस्त 2019 को कश्मीर से संविधान के अनुच्छेद 370 का प्रावधान हटाने और उसके बाद घाटी में मेलमिलाप की कोशिशें बढ़ाना आतंकी और कश्मीर राग अलापने वाली इस्लामिक ताकतों को रास नहीं आ रहा था। गैर कश्मीरी लोगों पर आतंकियों का हमला माना जा रहा है कि इस कोशिश को ही रोकना है। हाल में की गई हत्याओं का असर भी हुआ है। गैर कश्मीरी परिवार और लोग घाटी छोड़कर अपने राज्यों उत्तर प्रदेश और बिहार जाने लगे हैं। ये वे लोग हैं, जिनका घाटी के विकास और आर्थिक गतिविधियों में प्रत्यक्ष योगदान है। इनमें से ज्यादातर स्ट्रीटवेंडर, मजदूर और कर्मचारी हैं, जिन्हें यहां विकास कार्यों में लगी कंपनियों और योजनाओं में काम मिला हुआ था, जो वहां की बस्तियों के स्ट्रीट कारोबार में हिस्सेदारी कर रहे थे, और कश्मीरी लोगों को जरूरी सौदा-सुलफ मुहैया करा रहे थे।

ऐसा नहीं है कि कश्मीर घाटी में आतंकी नहीं मारे जा रहे हैं। अक्टूबर में ही चौदह आतंकी मारे जा चुके थे। गृहमंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक अफगानिस्तान में तालिबान शासन स्थापित होने के बाद घाटी में पचास के करीब विदेशी इस्लामिक आतंकी आ गए हैं। उन्हें घाटी में घुसाने में पाकिस्तानी सेना और उसकी कुख्यात खुफिया एजेंसी आईएसआई ने मदद दी है। कश्मीर घाटी में लोगों की हत्याओं के खिलाफ राज्य के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा का गुस्सा स्वाभाविक है। उन्होंने कहा है कि निदोर्षों के हत्यारों को बख्शा नहीं जाएगा। सेना और अर्धसैनिक बलों के जवान ऐसा कर भी रहे हैं। जब से अफगानिस्तान में तालिबान राज की दोबारा स्थापना हुई, तभी से माना जा रहा था कि आने वाले दिन कश्मीर घाटी के लिए खतरनाक होंगे। वैसा ही होता दिख रहा है। आर्थिक जंजाल में फंसे होने के बावजूद पाकिस्तान अपनी कारस्तानी से बाज नहीं आ रहा है। वह अपनी कोशिश में जुटा हुआ है। आतंकी घटनाएं उसी का प्रतीक हैं। ऐसे में सुरक्षा बलों की चुनौतियां बढ़ गई हैं। लेकिन जैसा कि मनीष तिवारी ने कहा है, दरअसल कश्मीर घाटी में गैर मुस्लिमों पर बढ़े हमले सिर्फ कश्मीर घाटी को प्रभावित करने की ही कोशिश नहीं है, बल्कि इस्लामी आतंकवाद की बरसों पुरानी मंशा का भी प्रतीक है। ऐसी ताकतें दक्षिण एशिया में इस्लामी कट्टरता को बढ़ावा देने की कोशिश में लगी हैं। इसलिए चुनौती और भी ज्यादा बढ़ जाती है। इसका मुकाबला सिर्फ सुरक्षा बलों के जरिए ही नहीं किया जा सकता, बल्कि इस्लामी आतंकवाद और मजहबी कट्टरता के खिलाफ लोगों को भी जागरूक करना होगा। आतंकवादियों को गोली का जवाब गोली से सुरक्षा बल दे ही रहे हैं। लेकिन अब उन्हें मौका देने की बजाय उन्हें पहले ही ध्वस्त करने की रणनीति पर भी काम करना होगा। तभी खौफ का वातावरण दूर होगा।

कितने हैं जो गऊ माता को रोटी देते हुए सेल्फी शेयर करते हैं..

कौशल मूंदड़ा

अभी कल ही एक मित्र ने बताया कि एक नवम्बर को घर पर दूध देने वाले ने दूध देने के साथ ही कहा कि अब दूध पर 2 रुपये प्रति लीटर बढ़ा रहा हूं। उसने पूछा नहीं था, सूचित किया था। उसके इस कथन का न तो आप प्रतिकार कर सकते हैं, न ही आप दूध का ही त्याग कर सकते हैं। सुबह उठते ही बड़ों ने भले ही चाय की आदत डाल ली हो, लेकिन बच्चों के लिए तो दूध ही अमृत है। और सवेरे-सवेरे चाय भी कौन सी नींबू वाली या काली पी जाती है, चाय भी दूध वाली ही चाहिए। कुल मिलाकर दूध दिन की शुरूआत की पहली वस्तु है जो हर घर हर व्यक्ति की आवश्यकता है। लेकिन, उसका महंगा होना पूरे रसोई के बजट को प्रभावित कर देता है। सिर्फ दूध ही 2 रुपये महंगा नहीं होता, इसके बाद दूध से बनने वाला दही, फिर देसी घी, फिर मावा, पनीर, कुल्फी, बटर आदि के महंगे होने का अंदाजा लगना शुरू हो जाता है। अकेले दूध से आधी से ज्यादा रसोई जुड़ी है, यह सभी जानते हैं। व्यक्ति दूध के महंगे होने के साथ ही आटे-दाल का भाव लगाने लग जाता है। अब हम आते हैं असल सवाल पर कि भारतवर्ष जहां कान्हाजी हमारे आराध्य है और गैया जिसे हम गऊ माता कहते हैं, उस देश में दूध के भाव इतने बढ़ते जा रहे हैं कि झुग्गी झोंपड़ियों में रहने वाले कई लोग बच्चों को दूध में पानी पिलाकर यही समझा देते हैं कि दूध ऐसा ही होता है। जबकि, हम अक्सर सुना करते हैं कि हमारे देश में घी-दूध की नदियां बहती थी। अब सामान्य दृष्टिकोण से भी कोई यह नहीं मान सकता कि ऐसा होता था, हां नदियों की स्वच्छता और निर्मलता को यह उपमा दी गई हो, यह हो सकता है। लेकिन, मूल अर्थ यह भी नहीं होकर यह जरूर माना जाता रहा है कि भारतवर्ष इतना समृद्ध था कि यहां घी-दूध की कोई कमी नहीं थी। हर घर में घी-दूध पर्याप्त रहा होगा, अनजान राहगीरों की आवभगत भी उसी से हुआ करती होगी, उसकी गुणवत्ता और स्वाद भी उत्तम रहा होगा, तभी यह उक्ति स्थापित हुई कि हमारे देश में घी-दूध की नदियां बहती थीं।

आखिर अब ऐसा क्यों नहीं। इसके कारण ढूंढ़ने जाएंगे तो हर दिशा से घूम कर यही बात सामने आएगी कि हमने अपनी गऊ माता का महत्व कम कर दिया। आधुनिकता की चकाचौंध में घर से गऊमाता तो बाहर हो गई, श्वान जरूर पाले जाने लगे। शहरी क्षेत्र से तो गायों को बाहर रखे जाने जैसे आदेश हो रहे हैं। जब घर-घर गाय होती थी तो दूध की कमी नहीं होती थी, और जिस वस्तु की कमी नहीं होती, उसके भाव सामान्य ही रहते हैं, यह बाजार का सिद्धांत है। हमारी परम्पराओं में पहली रोटी गाय के लिए होने का मतलब ही यही है कि गऊ माता हमारे जीवन का आधार है। इसे हमारे पूर्वजों ने इस तरह से समझाने के लिए यह परम्परा स्थापित की, लेकिन अब हम श्वानों को बिस्किट खिलाने, दुलारने की सेल्फी लेना पसंद करते हैं। गाय को रोटी खिलाने, दुलारने की सेल्फियां सोशल अकाउंट्स पर कितनी नजर आती हैं, हमें स्वयं अंदाजा लगा लेना चाहिए। संक्रांति हो या बड़ी एकादशी, दान-पुण्य के लिए सिर्फ एक दिन गऊमाता को रिचका डालने से कुछ नहीं होगा, उस दिन बड़ी मात्रा में रिचका खराब हो जाता है। अब तो गऊमाता के महत्व को वैज्ञानिक आधार भी मिलना शुरू हो गया है, इसे आधुनिक दुनिया का वैज्ञानिक आधार कहा जाए तो ज्यादा सटीक होगा क्योंकि भारतीय परम्पराओं और शास्त्रों में तो गऊमाता के दूध सहित गोमूत्र, गोबर के आयुर्वेदिक और पर्यावरणीय महत्व पहले से उल्लेखित हैं। यहां यह भी बता दें कि हमारे यहां गाय के गोबर को कभी ह्यमलह्ल नहीं कहा गया, अलबत्ता गोबर के बने कण्डे भी शुद्ध माने गए हैं जो नैवेद्य, यज्ञ आदि के समय धूप में काम में आते हैं। बाटियां को कण्डे पर बनी सभी ने खाई हैं, ओवन और कण्डे की बाटियों के स्वाद में अंतर बताने की जरूरत ही नहीं है। महानगरों में बसे परिवारों को जब कण्डे मिलना मुश्किल होने लगे हैं तो कुछ को कण्डों का ऑनलाइन व्यापार भी मिला है। अब तो गोबर से बिजली बनाने पर काम हो रहा है। गोमूत्र के औषधीय उपयोग के लिए नवीन शोध निरंतर प्रगति पर हैं। पिछले कुछ सालों में यूरिया से हटकर ऑर्गेनिक खेती की भी चर्चा बढ़ी है। ऑर्गेनिक नाम नया आ गया है, लेकिन बात तो वही पुरानी और पारम्परिक खेती और खाद की है जब यूरिया नाम की चीज नहीं हुआ करती थी, तब गोवंश से खेत जोते जाते थे, उनके गोबर से बनी खाद खेतों को उपजाऊ बनाती थी, वह भी बिना किसी नुकसान के। ऑर्गेनिक के ठप्पे वाली खाद्य वस्तुएं भले ही दोगुने दाम में मिल रही हैं, लेकिन सक्षम लोग उसे प्राथमिकता देने लगे हैं, यहां तक कि किटी पार्टियों में ऑर्गेनिक फूड के इस्तेमाल की चर्चा स्टेटस सिम्बल बनने लगी है। आखिर आज हम फिर से इस तरफ लौट रहे हैं, क्यों

सात दशक के बाद घने जंगलों में बना एक स्वास्थ्य केंद्र

मधुरेंद्र सिन्हा

छत्तीसगढ़ के सुकमा और दंतेवाड़ा के घने जंगलों में नक्सली अपना शासन चलाते हैं। यहां के रास्ते दुर्गम हैं और मीलों-मील तक सड़कों का नामों-निशान नहीं है। यहां विकास और प्रशासन ज्यादातर हिस्सों से नदारद है। गांवों का यह हाल है कि सुकमा जिले के कई गांव तो सरकारी कागजों में हैं ही नहीं। जो हैं वह कहां हैं, यह भी जानना मुश्किल है। उनका पता लगाना टेढ़ी खीर है। इस बारे में विस्तार से बता रहे हैं। क्या आप सोच सकते हैं कि आजादी के 74 वर्षों के बाद भी देश के कई हिस्सों में स्वास्थ्य सेवाएं हैं ही नहीं। वहां लोग अस्पताल, डॉक्टर, नर्स कुछ भी नहीं जानते। वहां बैगा यानी झाड़-फूंक करने वाला ही उनका डॉक्टर है। सैकड़ों साल पुरानी परंपराएं हैं जिन पर उनका अगाध विश्वास है। मॉडर्न मेडिसिन सिस्टम से ये बेखबर हैं।

बात हो रही है छत्तीसगढ़ के सुकमा और दंतेवाड़ा की, जहां घने जंगलों में नक्सली अपना शासन चलाते हैं। यहां के रास्ते दुर्गम हैं और मीलों-मील तक सड़कों का नामों-निशान नहीं है। यहां विकास और प्रशासन ज्यादातर हिस्सों से नदारद है। गांवों का यह हाल है कि सुकमा जिले के कई गांव तो सरकारी कागजों में हैं ही नहीं। जो हैं वह कहां हैं, यह भी जानना मुश्किल है। उनका पता लगाना टेढ़ी खीर है। सुकमा के दूरदराज के गांव मेंः लेकिन पिछले दिनों सुकमा के दूर-दराज के एक गांव मिनपा में जो हुआ वह किसी बड़ी उपलब्धि से कम नहीं है। वहां स्थानीय आदिवासियों से मिलकर साम्य भूमि फाउंडेशन और यूनिसेफ ने एक उप स्वास्थ्य केंद्र बनाया है। कोंटा ब्लॉक के 150 गांवों में यह भी एक गांव है जहां कोई स्वास्थ्य केंद्र नहीं था लेकिन अब वह गर्व से कह सकते हैं कि वहां स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हैं। यह झोपड़ी में बना केंद्र है क्योंकि इस इलाके में पक्का ढांचा खड़ा करना नक्सलियों को जरा भी पसंद नहीं है। हालत यह है कि उन्होंने स्कूलों के कई भवन उड़ा दिये हैं और सरकारी भवनों को भी क्षति पहुंचाई है। विकास उनके अस्तित्व के लिए खतरा है। वे यह मानते हैं कि अगर बच्चे पढ़-लिख जाएंगे तो उनके सामने नई चुनौती खड़ी हो जाएगी। इसलिए वह न केवल स्कूलों के पक्के ढांचे नहीं बनने देते बल्कि मौका मिलने पर 10-12 साल के बच्चों को घरों से उठाकर ले जाते हैं और उन्हें बंदूक चलाना सिखाते हैं। कई गांवों में तो आदिवासियों ने अपने चार-पांच साल के बच्चों को दूर के रिश्तेदारों के पास भेज देते हैं। अस्पतालों की अनुमति नक्सली इसलिए नहीं देते क्योंकि उससे वे बाहर के लोगों से घुलने-मिलने लग जाएंगे। यह उनके लिए खतरा है। मिनपा गांव कहने को तो सुकमा से लगभग 90 किलोमीटर दूर है लेकिन वहां पहुंचने में तीन घंटे से भी ज्यादा का समय लगता है। थोड़ी दूर तक सड़क ठीक है लेकिन बाद में वह टूटी हुई है। रास्ते में सीआरपीएफ के दर्जन भर कैंप हैं जहां चाक-चौबंद जवान अपने ऑटोमैटिक हथियारों के साथ खड़े मिलेंगे। जैसे-जैसे गांव के निकट पहुंचेंगे तो देखेंगे कि ज्यादातर पुलिया बारूद से उड़ा दी गई है। छुपकर किए गए उनके हमलों में सैकड़ों जवान और बेगुनाह लोग मारे जा चुके हैं। ध्यान रहे कि इसी सुकमा के पास झीरम घाटी में घात लगाकर किये हमले में पूर्व केंद्रिय मंत्री विद्याचरण शुक्ला सहित 28 लोगों की मौत हो गई। इनमें महेंद्र करमा भी थे जो सलवा जुडुम के संस्थापक भी थे। उन्हें भी नक्सलियों ने बेरहमी से मार डाला था। इस हमले के अलावा भी घात लगाकर कई हमले हुए जिनमें पुलिसकर्मियों के अलावा बेगुनाह लोग भी मारे गये। यहां के घने जंगलों और पहाड़ियों में छुपना आसान है। जब पुलिस की कार्रवाई होती है तो ये नक्सली लुंगी-गंजी पहनकर ग्रामीण बन जाते हैं। कई बार ये मारे जाते हैं तो इन्हें बेगुनाह ग्रामीण बता दिया जाता है। फिर मानवाधिकार का मामला खड़ा हो जाता है। साम्य भूमि फाउंडेशन के आदर्श कुमार कहते हैं कि यहां काम करने का अपना ही आनंद है हालांकि यह इलाका खतरनाक है। यहां काम करना एक जुनून जैसा है और इस बात का सबूत वह खुद हैं। वह एक मेकेनिकल इंजीनियर हैं और पुणे में नौकरी करते थे जिसे छोड़कर वह इन जंगलों में अब आदिवासियों के साथ काम करते हैं। सिर्फ वह ही नहीं बल्कि वहां काम करने वाली एएनएम और उनकी सहायक भी इस काम में हाथ बंटा रही हैं।

राजनीतिक इच्छा शक्ति की कमीः ऐसा इसलिए है कि यहां राजनीतिक इच्छा शक्ति की कमी है। सीआरपीएफ के पुराने ऑफिसर कहते हैं कि राज्य सरकारें दिल से चाहें तो इस समस्या पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है। लेकिन कोई इस चुनौती को स्वीकार नहीं करना चाहता है। कोई नेता इस पचड़े में पड़ना चाहता है। महेंद्र करमा की नृशंस हत्या के बाद तो ज्यादातर नेता चाहे वे किसी भी पार्टी के हों, कन्नी कटाते फिरते हैं। राज्य सरकारें वोट की राजनीति करती हैं सो वे इस तरह का कोई काम करना नहीं चाहतीं जिससे लोगों में कोई आक्रोश पैदा हो या लॉ एंड ऑर्डर की समस्या खड़ी हो। इसलिए वे केंद्र सरकार द्वारा चलाए जाने वाले किसी भी इस तरह के अभियान में भाग नहीं लेती हैं।

वे तटस्थ रहते हैं। नक्सलियों के इस आतंक के कारण वहां पर विकास के कार्य ठप हो गये हैं। स्कूल-अस्पताल बनाना सरकार के लिए बेहद कठिन हो गया है। सरकार के पास पर्याप्त फंड है लेकिन उन इलाकों में पहुंचना खतरे से खाली नहीं है। रास्ते दुर्गम हैं। दंतेवाड़ा का उदहारणः लेकिन जहां संभव हुआ वहां स्थानीय प्रशासन ने प्रयास किया है। इसका बढ़िया उदाहरण है दंतेवाड़ा। इस जिले के लगभग 40 प्रतिशत हिस्से पर नक्सलियों का आतंक है। लेकिन शेष इलाकों में अब विकास के कई कार्य हो रहे हैं। जिला कलेक्टर दीपक सोनी बताते हैं कि इधर कुछ वर्षों से जिले में विकास कार्यों में तेजी आई है। शिक्षा और स्वास्थ्य के कई कार्य हुए हैं। ग्रामीण अब सरकारी सामानों को लेने से हिचकिचाते नहीं हैं। आदिवासियों और अन्य ग्रामीणों के लिए पौष्टिक आहार कार्यक्रम भी चलाया गया है। इन्हें अपने बच्चों के खाने में ज्यादा से ज्यादा प्रोटीन देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह प्रोटीन उन्हें दवाओं के जरिये नहीं दालों के जरिये मिलता है और ये दालें यहां की उपज हैं। यह एक अच्छी पहल है और इसे यूनिसेफ का सहारा भी मिला हुआ है। ग्रामीणों को प्रोत्साहित करने के लिए कठपुतली नृत्य-गीत के जरिये कार्यक्रम किये जाते हैं। विलासपुर का एक एनजीओ कठपुतली एवं नाट्य कला मंच बिना सरकारी मदद के खुद यहां लोगों को कठपुतली नृत्य और स्थानीय भाषा के गीतों के जरिये संतुलित आहार की शिक्षा देता है। यह पहल बहुत ही सफल रही है। इस तरह के कार्यक्रमों में भारी भीड़ जुड़ती है और मधुर संगीत के कारण लोग स्वास्थ्य संबंधी निर्देश समझ जाते हैं। पिछले तीन वर्षों में प्राइमरी हेल्थ सेंटरों की संख्या में भारी बढ़ोतरी हुई है। इसका नतीजा है कि कुपोषण में 35 प्रतिशत की कमी देखी गई है।

कोविड टीकाकरण अभियान सफलः सबसे बड़ी बात यह है कि दंतेवाड़ा और सुकमा में कोविड का टीकाकरण कार्यक्रम सफल रहा है। शुरू में प्रतिरोध हुआ और नक्सलियों ने भी धमकी दी। सुकमा जिले के कोंटा ब्लॉक के मेडिकल ऑफिसर डॉक्टर कपिल बताते हैं कि हमें पहले चरण में काफी प्रतिरोध का सामना करना पड़ा लेकिन दूसरे चरण में नहीं। इसका मुख्य कारण यह रहा कि जब नक्सली बिना टीका लगाये कोविड से मरने लगे तो उन्हें समझ में आया कि यह कितना जरूरी है। फिर उन्होंने कोई प्रतिरोध नहीं किया और खुद भी नाम बदलकर टीका लेने आ गये। इसकी सफलता का बड़ा उदाहरण इस बात से मिलता है कि शहर से कटे हुए मिनपा गांव के लगभग 2700 लोगों में कमोबेश सभी को टीका लग चुका है। लेकिन इसके लिये साम्य भूमि फाउंडेशन और यूनिसेफ ने भी बड़ी भूमिका निभाई। स्वास्थ्यकर्मी आइस बॉक्सों में टीकों को लेकर पैदल मीलों चले और उन्होंने टीके लगाये। उन दुर्गम इलाकों में यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। झोपड़ी में बना मिनपा गांव का यह उप स्वास्थ्य केंद्र इस मायने में अद्भुत है कि इसने उस दुर्गम इलाके में जहां जिंदगी और मौत के बीच का फासला बहुत कम है, एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। यह आदिवासियों, स्वैच्छिक संगठन, चुनिंदा स्वास्थ्य कर्मियों और यूनिसेफ की पहल से बन पाया है और आगे के लिए रास्ते खोलता है। भविष्य में इस मॉडल पर कई और ऐसे केंद्र बन सकते हैं।

मीथेन पर काबू पाना फायदेमंद बनाइए, उत्सर्जन कम करने के कई तरीकों से आर्थिक लाभ

भरत झुनझुनवाला

सभी जीवों के शरीर में कार्बन और हाइड्रोजन होते हैं। मृत्यु के बाद इन तमाम जीवों का शरीर सड़ने लगता है। सड़ते समय आसपास ऑक्सिजन उपलब्ध हुई, तो शरीर में मौजूद कार्बन से कार्बन डायॉक्साइड और हाइड्रोजन से ल्ह2ड यानी पानी बन जाता है। इसके विपरीत अगर सड़ते समय ऑक्सिजन उपलब्ध नहीं होती, तो वही पदार्थ मीथेन गैस यानी उल्ह4 बन जाते हैं। यह गैस कार्बन डायॉक्साइड की तुलना में ग्लोबल वॉर्मिंग की बड़ी वजह है। धरती से जब गर्मी की किरणें निकलती हैं तो वे कार्बन और हाइड्रोजन के परमाणुओं के बीच कंपन पैदा करती हैं। वह ऊर्जा अंतरिक्ष में नहीं जा पाती। वह हमारे वातावरण में टिक जाती है और धरती को गरम करती है। ध्यान रहे, कार्बन डायॉक्साइड की तुलना में मीथेन के अणुओं में कंपन बहुत ज्यादा होता है। इसलिए मीथेन 28 से 80 गुना ज्यादा नुकसान पहुंचाती है। ग्लासगो में हो रहे उडढ26 सम्मेलन में लगभग 100 देशों ने मीथेन उत्सर्जन को सीमित करने का समझौता किया है।

टिहरी झील से भी मीथेन

कृषि और पशुपालन से भारी मात्रा में मीथेन गैस निकलती है। धान के खेतों को पानी से भर दिया जाता है। इस पानी में पर्याप्त मात्रा में ऑक्सिजन नहीं रहती, जिससे पौधों के नीचे गिरे हुए पत्ते के सड़ने से मीथेन गैस बनती है। गाय के श्वास से भी मीथेन गैस निकलती है। बड़ी पनबिजली परियोजनाओं के तालाबों में जो टहनी, पत्ते और मृत पशु बह कर आते हैं, वे तालाब की तलहटी में पड़े-पड़े सड़ते रहते हैं। इससे भी बड़ी मात्रा में मीथेन पैदा होती है। नैशनल एनवायरमेंटल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टिट्यूट ने पाया कि टिहरी झील से भी मीथेन का उत्सर्जन हो रहा है। भारत का कहना है कि धान, पशुपालन और पनबिजली को बढ़ाना हमारी अर्थव्यवस्था के लिए जरूरी है। इसलिए मीथेन उत्सर्जन सीमित करने को स्वीकार करना हमारे लिए मुश्किल है। धान की खेती कम करेंगे तो देश की खाद्य सुरक्षा भी प्रभावित होगी। इसीलिए भारत ने इस ग्लासगो समझौते पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया है। लेकिन संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अनुसार मीथेन उत्सर्जन कम करने के आधे तरीके ऐसे हैं, जिनसे आर्थिक लाभ होता है। उदाहरण के लिए, धान के खेत में लगातार ज्यादा समय तक पानी भरा रखने के स्थान पर यदि कुछ समय तक पानी भर के रखा जाए, फिर उसे बहा दिया जाए और कुछ समय बाद पुनः नया पानी भर दिया जाए तो मीथेन उत्सर्जन कम हो जाता है। पानी के अभाव में पत्तियों का सड़ना रुक जाता है और नए पानी में ऑक्सिजन भी उपलब्ध रहती है। इससे फसल की मात्रा तो पूर्ववत रहती है, लेकिन मीथेन गैस कम उत्सर्जित होती है। गोबर से पूर्व में अपने देश में गोबर गैस बनाई जाती थी। गोबर के सड़ने से मीथेन गैस उत्सर्जित होती थी, लेकिन उसे ट्रैप कर लिया जाता था और उससे लाइट, रसोई पकाने जैसे काम लिए जाते थे। ऐसा करने से मीथेन कार्बन डायॉक्साइड में बदलकर उत्सर्जित होती थी। बाद में एलपीजी के सस्ता होने और दूर के गांवों में उपलब्ध होने से गोबर गैस का उपयोग कम होते-होते शून्यप्राय हो गया। इससे मीथेन उत्सर्जन का नुकसान रोकते हुए उसका लाभ उठाने का एक तरीका हमसे छिन गया। एक अध्ययन में पाया गया कि गाय की तुलना में बैल द्वारा मीथेन का उत्सर्जन ज्यादा होता है। हम गोबर गैस का उपयोग करें और गाय की ऐसी प्रजातियां बढ़ाएं, जो कि दूध ज्यादा दें और मीथेन कम उत्सर्जित करें, तो यह भी हमारे लिए लाभ का सौदा होगा। हमें शाकाहारी भोजन पर भी विचार करना चाहिए। मांसाहारी भोजन में मीथेन उत्सर्जन ज्यादा होता है क्योंकि मांस को बनाने में पशु द्वारा मीथेन का उत्सर्जन होता है। यदि हम शाकाहार को अपनाएं तो मीथेन उत्सर्जन को कम कर सकते हैं और भोजन की लागत में भी बचत कर सकते हैं। पनबिजली पर भी पुनर्विचार करना चाहिए। वर्तमान में सरकार दक्षिण में पोलावरम और उत्तर में लखवाड़ ब्यासी जैसी बड़ी पनबिजली परियोजनाओं के निर्माण को बढ़ावा दे रही है। इनसे पैदा होने वाली बिजली की लागत 10 रुपये प्रति यूनिट या अधिक होगी। यदि यही रकम सौर ऊर्जा में लगाई जाए तो कार्बन उत्सर्जन कम होगा और 4 रुपये प्रति यूनिट पर बिजली मिल जाएगी। मीथेन उत्सर्जन कम करने के ये उपाय काफी महत्वपूर्ण हैं। इनके मद्देनजर कहा जा सकता है कि सरकार मीथेन समझौते पर दस्तखत करे या ना करे, उसे इन गतिविधियों को बढ़ाने पर जरूर ध्यान देना चाहिए, जिनमें कार्बन उत्सर्जन कम होने के साथ-साथ आर्थिक विकास भी होता है।

क्या करे सरकार

इस दिशा में सरकार थोड़ा मौलिक नजरिया अपनाते हुए चले तो काफी कुछ किया जा सकता है। उसे खेती में उपयोग किए जाने वाले पानी का मूल्य बढ़ा देना चाहिए। एक अन्य उपाय यह है कि पानी को आयतन के हिसाब से बेचने की व्यवस्था की जाए। इससे किसान सस्ते पानी के लालच में धान में लगातार पानी भरकर रखना बंद कर देंगे। सरकार को एलपीजी का दाम बढ़ाना चाहिए, जिससे गोबर गैस बनाना लाभप्रद हो जाए। मांसाहारी भोजन पर भारी टैक्स लगाना चाहिए, जिससे शाकाहारी भोजन का विस्तार हो। यही नहीं, बड़ी पनबिजली परियोजनाओं पर भारी पर्यावरण टैक्स लगाना चाहिए, जिससे सौर ऊर्जा का विस्तार हो। पानी, एलपीजी, मांसाहारी भोजन और पनबिजली पर लगाए गए टैक्स से अर्जित रकम को सरकारी कर्मियों के बढ़े हुए वेतन पर खर्च करने के बजाय आम लोगों के बीच सीधे वितरित करे। ऐसा करने से आम आदमी पर इस टैक्स का तनिक भी भार नहीं पड़ेगा। जितना भार महंगे चावल और एलपीजी से पड़ेगा, उतनी ही रकम की सब्सिडी मिल जाएगी। सरकार को इस दिशा में कदम उठाने चाहिए, जिससे हमारा आर्थिक विकास हो और हम ग्लोबल वॉर्मिंग बढ़ाने वाले देशों की कतार में न खड़े हों।

पाकिस्तान के आसिफ अली आईसीसी महीने के बेस्ट क्रिकेटर पुरस्कार के लिए चुने गए

नई दिल्ली, एजेंसी। पाकिस्तान के आक्रामक बल्लेबाज आसिफ अली को अक्टूबर महीने के लिए आईसीसी के बेस्ट खिलाड़ी पुरस्कार के लिए चुना गया है। आसिफ अली ने मौजूदा आईसीसी टी20 विश्व कप 2021 में न्यूजीलैंड और अफगानिस्तान के खिलाफ जीत में अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने न्यूजीलैंड के खिलाफ 12 गेंद में 27 रन बनाए थे और अफगानिस्तान के खिलाफ अगले मैच में 19वें ओवर में चार छक्के लगाए थे। आसिफ के शानदार प्रदर्शन के दम पर पाकिस्तान की टीम ग्रुप चरण में अपने सभी पांच मैच जीतकर पहले ही सेमीफाइनल में पहुंच चुकी है। टीम को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दुबई में सेमीफाइनल मुकाबला खेलना है।

मैच के बाद विराट कोहली की कप्तानी को लेकर मैन ऑफ द मैच रविंद्र जडेजा ने कहा कुछ ऐसा

नई दिल्ली, एजेंसी। टी20 वर्ल्ड कप 2021 में भले ही टीम इंडिया सेमीफाइनल में जगह ना बना पाई हो, लेकिन टीम ने आखिरी के तीन मैचों में जबर्दस्त प्रदर्शन किया और जीत की हैट्रिक लगाई। सोमवार को नामीबिया के खिलाफ टीम इंडिया ने लीग राउंड का आखिरी मैच खेला और नामीबिया को 28 गेंद शेष रहते हुए नौ विकेट से हराया। रविंद्र जडेजा ने इस मैच के बाद विराट की कप्तानी को लेकर अहम बात कही। जडेजा ने इस मैच में चार ओवर में महज 16 रन खर्चे और तीन विकेट लिए। मैन ऑफ द मैच बने रविंद्र जडेजा ने कहा, एक गेंदबाज के तौर पर मैंने मैच का मजा लिया, बॉल सूखी थी और

यह स्पिनर के लिए हमेशा अच्छी बात होती है। कुछ गेंद टर्न कर रही थीं और कुछ नहीं तो बल्लेबाज को बार-बार अंदाजा लगाना पड़ रहा था। मैं अश्विन के साथ 10 साल से खल रहा हूं, वाइट बॉल से उसने आईपीएल में अच्छा प्रदर्शन किया था, तो उसको यहां खेलने का मौका मिला। विराट शानदार कप्तान रहे हैं।रविंद्र जडेजा ने आगे कहा, मैं उनके साथ 10-12 सालों से खेल रहा हूं, वह हमेशा पॉजिटिव और एग्रेसिव कप्तान रहे हैं और आप खिलाड़ी के तौर पर ऐसा ही चाहते हैं। भरत अरुण, आर श्रीधर और रवि शास्त्री भाई शानदार रहे और हमें सपोर्ट किया। जो भी अगला आएगा, हम उनके साथ इस लय को कायम रखना चाहेंगे। मैच की बात करें तो टीम इंडिया ने टॉस जीता और पहले गेंदबाजी का फैसला लिया। नामीबिया ने 20 ओवर में आठ विकेट पर 132 रन बनाए, जवाब में भारत ने 15.2 ओवर में एक विकेट गंवाकर 136 रन बनाकर मैच अपने नाम कर लिया।

रवि शास्त्री-विराट कोहली युग में टीम इंडिया की इन उपलब्धियों को कभी नहीं भुला पाएंगे फैन्स

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय टीम के लिए भविष्य में 8 नवंबर 2021 की तारीफ काफी मायने रखेगी, क्योंकि इस एक दिन में कई चीजें घटित हुईं। इस दिन ऑफिशियल तौर पर भारतीय टीम का यूएई और ओमान में खेले जा रहे टी-20 वर्ल्ड कप में अभियान खत्म हो गया और टीम सुपर 12 राउंड से आगे नहीं बढ़ सकी। भारत को सुपर 12 के आखिरी लीग मैच में बेशक नामीबिया के खिलाफ जीत मिली थी, लेकिन शास्त्री-कोहली युग समाप्त होने से फैन्स निराश ही हुए। इस मैच के खत्म होने के साथ ही विराट टी-20 टीम की कप्तानी से हट गए हैं, साथ ही शास्त्री का भी कार्यकाल समाप्त हो गया है। भारत ने उनकी जगह राहुल द्रविड़ को टीम का नया हेड कोच बनाया है। भारत बेशक शास्त्री-कोहली युग में एक भी आईसीसी टूर्नामेंट्स पर कब्जा नहीं कर सका, लेकिन इसके बावजूद दोनों की उपलब्धियों की लिस्ट इतनी लंबी है कि फैन्स इन्हें चाहकर भी नहीं भूल सकेंगे।

न्यूजीलैंड के हेड कोच गैरी स्टीड ने कहा- इंग्लैंड के खिलाफ 2019 वर्ल्ड कप फाइनल का अनुभव मायने नहीं रखता

अबुधाबी, एजेंसी। इंग्लैंड बनाम न्यूजीलैंड एक बार फिर एक वर्ल्ड कप में आमने सामने होंगे। 2019 वर्ल्ड कप के फाइनल में दोनों देशों के बीच का फासला इतना कम था कि विजेता का फैसला बाउंड्री काउंटबैक पर इंग्लैंड के हित में आया। दो साल बाद एक और वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल के मंच पर दोनों टीमें आमने सामने होंगी। न्यूजीलैंड की मौजूदा टीम में टीम के ऐसे 8 खिलाड़ी हैं, जो 2019 में उस टीम के सदस्य थे। इनमें चोटिल लॉकी फर्ग्युसन भी शामिल हैं। लेकिन मुख्य कोच गैरी स्टीड मानते हैं 2019 के मैच का आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप 2021 के सेमीफाइनल मुकाबले पर कोई असर नहीं होगा।

स्टीड ने कहा, उस मैच की चर्चा होते हुए मैंने तो नहीं सुनी।

मुझे लगता है यह खिलाड़ी एक बार फिर इंग्लैंड से भिड़ने के लिए उत्साहित हैं। उनकी टीम बहुत मजबूत है और आप हमेशा सर्वश्रेष्ठ टीमों से मुकाबला करना चाहते हैं। इसलिए मुझे लगता है सुपर ओवर के अलावा इस मैच और उस मैच में कोई तुलना नहीं होगी।

न्यूजीलैंड के पास एक ही साल में दो आईसीसी खिताब जीतने का अनोखा मौका है। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप जीतने के बाद टी20 वर्ल्ड कप में सेमीफाइनल के सफर पर स्टीड ने संतोष जताते हुए कहा, मैं इस टीम पर बहुत गर्व महसूस करता हूं। कैसे यह खिलाड़ी हर बड़े मंच पर अपने गेम को ढालने में सफल रहते हैं। अगर आप हमारी टीम की तुलना बड़ी टीमों से करें तो आपको अंदाजा होगा कि यह कितना कठिन और तारीफ के काबिल है। हम एक इकाई बनकर लड़ना जानते हैं। अगर आप छोटी चीजें लगन के साथ करेंगे तो सफलता मिलते देर नहीं लगती।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल मुकाबले से पहले बाबर आजम ने दो खिलाड़ियों को बताया बड़े मैच के प्लेयर्स

दुबई, एजेंसी। पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने खराब फॉर्म से जूझ रहे बल्लेबाज फखर जमां और तेज गेंदबाज हसन अली का सपोर्ट करते हुए मंगलवार को कहा कि वे मौजूदा टी20 विश्व कप 2021 के सेमीफाइनल में अच्छा प्रदर्शन करेंगे क्योंकि वे बड़े मैच के खिलाड़ी हैं। मीडिया से आनलाइन बातचीत में बाबर ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल में फखर और हसन दोनों फॉर्म में वापसी करेंगे। पाकिस्तान टूर्नामेंट की एकमात्र ऐसी टीम ने जिसने कोई मुकाबला नहीं गंवाया है लेकिन टीम पावरप्ले में काफी रन नहीं बना पाई है और टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ इसमें सुधार करना चाहेगी।

टूर्नामेंट में फखर के खराब प्रदर्शन के बारे में पूछे जाने पर बाबर ने कहा, आप चाहते हैं कि सभी 11 खिलाड़ी प्रदर्शन करें। क्रिकेट में ऐसा नहीं होता, एक मैच में तीन

या चार खिलाड़ी ही अच्छा प्रदर्शन करते हैं। एक मैच में दो बल्लेबाज अच्छा प्रदर्शन करते हैं। एक मैच में सभी खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकते। फखर जिस तरह खेल रहा है, उसके पास आत्मविश्वास है। वह जिस दिन अच्छा प्रदर्शन करेगा उस दिन अकेले दम पर मैच का पासा पलट सकता है और मुझे पूरा भरोसा है कि वह आगामी मैचों में ऐसा करेगा।

फखर ने भारत के खिलाफ 2017 चैंपियन्स ट्रॉफी के फाइनल में शतक जड़कर पाकिस्तान को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। गेंदबाजी विभाग की सबसे कमजोर कड़ी हसन पर बाबर ने कहा कि उन्हें प्लेइंग इलेवन से बाहर करने का ख्याल कभी उनके मन में नहीं आया। उन्होंने कहा, मैं उसे बाहर करने के बारे में नहीं सोच सकता। वह मेरा मुख्य गेंदबाज है। उसने हमें मैच जिताए हैं, टूर्नामेंट जिताएं हैं। उतार-चढ़ाव किसी के भी करियर का हिस्सा होते हैं और जब आपका मुख्य खिलाड़ी अच्छा नहीं कर रहा होता तो आपको उसका समर्थन करना होता है और पूरी टीम उसके साथ है। वह मानसिक रूप से काफी मजबूत है और मेरा मानना है कि वह बड़े मैच का खिलाड़ी है और सेमीफाइनल में अच्छा प्रदर्शन करेगा।

तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट को उम्मीद, इंग्लैंड के खिलाफ उलटफेर कर सकती है कीवी टीम

नई दिल्ली, एजेंसी। न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाजी आक्रमण के अगुआ ट्रेंट बोल्ट को उम्मीद है कि उनकी टीम बुधवार को टी-20 वर्ल्ड कप के पहले सेमीफाइनल में इंग्लैंड की बेहद संतुलित टीम के खिलाफ बड़ा उलटफेर कर सकती है। इंग्लैंड की टीम ने मौजूदा टूर्नामेंट के सुपर 12 स्टेज में शानदार प्रदर्शन से दबदबा बनाते हुए जीत दर्ज की, लेकिन आखिरी ग्रुप मैच में उसे दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। दूसरी तरफ न्यूजीलैंड ने अपने अभियान की शुरूआत पाकिस्तान के खिलाफ पांच विकेट की हार के साथ की और फिर लय हासिल करते हुए लगातार चार मुकाबले जीते। फिलहाल सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड के खिलाफ इंग्लैंड का पलड़ा भारी माना जा रहा है। न्यूजीलैंड क्रिकेट द्वारा पोस्ट किए गए वीडियो में बोल्ट ने कहा, इंग्लैंड की टीम मैच विजेता खिलाड़ियों से भरी पड़ी है। उनकी टीम काफी संतुलित है और वे अभी लिमिटेड ओवरों में अच्छा क्रिकेट खेल रहे हैं। उन्होंने कहा, इसलिए उम्मीद करते हैं कि हम बड़ा उलटफेर कर पाएंगे। लिमिटेड ओवरों के क्रिकेट में दोनों टीमों के बीच अच्छा इतिहास है। इसलिए मुझे यकीन है कि स्वदेश में काफी लोग दिलचस्पी के साथ इस मुकाबले को देखेंगे।

भारत-पाकिस्तान वर्ल्ड कप मैच ने बनाया नया रिकॉर्ड, बना सबसे ज्यादा देखे जाना वाला मुकाबला

मुंबई, एजेंसी। भारत और पाकिस्तान के बीच मौजूदा टी-20 वर्ल्ड कप में खेले गए बहुप्रतीक्षित मुकाबले को रिकॉर्ड 16 करोड़ 70 लाख दर्शकों ने देखा, जिससे यह अब तक का सबसे अधिक देखा जाने वाला टी-20 इंटरनेशनल क्रिकेट मुकाबला बन गया है। टूर्नामेंट के ऑफिशियल ब्रॉडकास्टर ने यह दावा किया है। स्टार इंडिया के अनुसार, पिछले हफ्ते तक यानी क्वालीफायर और सुपर 12 स्टेज के शुरूआती 12 मैचों में टी-20 वर्ल्ड कप की कुल पहुंच 23 करोड़ 80 लाख दर्शकों तक थी। भारत और वेस्टइंडीज के बीच खेला गया 2016 टी-20 वर्ल्ड कप का सेमीफाइनल इससे पहले सबसे अधिक देखा जाने वाला टी-20 मुकाबला था, जिसे 13 करोड़ 60 लाख दर्शकों ने देखा था। इसके अनुसार, 16 करोड़ 70 लाख दर्शकों के साथ 24 अक्टूबर को हुआ बहुप्रतीक्षित भारत-पाकिस्तान मुकाबला अब सबसे अधिक देखा जाने वाला टी-20 इंटरनेशनल मैच है। इसने भारत-वेस्टइंडीज के बीच 2016 आईसीसी वर्ल्ड टी-20 सेमीफाइनल के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ा। बता दें कि भारत और पाकिस्तान की चिर प्रतिद्वंद्वी टीमें आईसीसी टूर्नामेंट में दो साल बाद आमने-सामने थीं। इस बार भारत और पाकिस्तान ने अपने अभियान की शुरूआत 24 अक्टूबर को एक दूसरे के खिलाफ की थी, जिसमें बाबर आजम की टीम ने विराट कोहली की टीम को 10 विकेट से हराया था। यह वर्ल्ड कप में 29 सालों में भारत की पाकिस्तान के हाथों पहली हार थी। पाकिस्तान ने इस बार आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल में जगह बना ली है, जबकि भारत ग्रुप स्टेज से ही बाहर हो गया है।

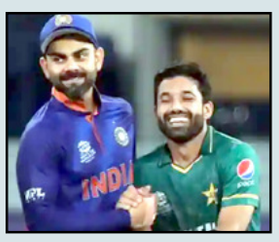

न्यूजीलैंड के पूर्व क्रिकेटर ने टी20 वर्ल्ड कप में भारतीय टीम की शेड्यूलिंग पर उठाए सवाल, बोले- इसमें अहंकार दिखता है

नई दिल्ली, एजेंसी। पहले शुरूआती दो मैचों में मिली हार के चलते भारतीय क्रिकेट टीम आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप 2021 के सेमीफाइनल की रेस से बाहर हो गई। भारत ने टी20 वर्ल्ड कप में 24 अक्टूबर को पाकिस्तान के खिलाफ मुकाबले से अपने अभियान की शुरूआत की थी। इसके बाद टीम का अगला मैच एक हफ्ते बाद 31 अक्टूबर को न्यूजीलैंड के खिलाफ था। इन दोनों में भारतीय टीम को हार झेलनी पड़ी थी। पहले मुकाबले के बाद दूसरे मुकाबले में एक सप्ताह का अंतर होने के बाद न्यूजीलैंड के पूर्व क्रिकेटर और दिग्गज कमेंटेटर साइमन डूल ने टी20 वर्ल्ड कप में भारतीय टीम की शेड्यूलिंग पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि

भारतीय टीम का शेड्यूल इस प्रकार से किया गया था जिससे उनके मैच छुट्टियों के आसपास ही पड़ें। डूल ने क्रिकबज के साथ बातचीत के दौरान कहा कि भारतीय टीम का आखिरी मुकाबला नामीबिया की बजाय न्यूजीलैंड से होना चाहिए था ताकि सेमीफाइनल के लिए रोमांच बना रहता। उन्होंने कहा, भारतीय टीम की इस शेड्यूलिंग में अहंकार की झलक मिलती है। ब्रॉडकास्टर्स यही चाहते थे कि भारत के मैच दीवाली के आसपास छुट्टियों के दौरान पड़ें ताकि उन्हें ज्यादा से ज्यादा व्यूअरशिप मिल सके। पाकिस्तान और भारत के बीच पहला ही मैच होना चाहिए था लेकिन न्यूजीलैंड के खिलाफ उन्हें सबसे आखिर में खेलना चाहिए था। भारत बनाम न्यूजीलैंड का मैच सेमीफाइनल के लिए होना चाहिए था। भारत ने शुरूआती दोनों मुकाबले हारने के बाद अगले तीन मुकाबलों में जीत दर्ज की। लेकिन पहले दो मैचों में बड़े अंतर से हारने के कारण उसका नेट रन रेट सही नहीं रहा और टीम सेमीफाइनल की दौड़ से बाहर हो गई। भारत के ग्रुप से पाकिस्तान और न्यूजीलैंड की टीम सेमीफाइनल में पहुंचने में सफल रही। भारत ने अपने आखिरी लीग मुकाबले में नामीबिया को नौ विकेट से हराकर जीत के साथ टूर्नामेंट में अपने अभियान का समापन किया।

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ कार्यक्रम में 110 मानसिक मरीजो का स्वास्थ परीक्षण कर परामर्श और निःशुल्क दवाएं दी गई

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोपीगंज में मंगलवार को राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ कार्यक्रम में 110 मानसिक मरीजो का स्वास्थ परीक्षण कर परामर्श और निःशुल्क दवाएं दी गईं। सुबह नौ बजे से दोपहर 2 बजे तक परीक्षण चला। डा.राकेश जायसवाल ने विभिन्न रोगो को लेकर मरीजों को जागरुक भी किया। कहा मानसिक रोग की समस्या में लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। मरीजों को झाड़ फूंक, ओझाई, मौलवियों के चक्कर में न पड़े, यह एक मानसिक बीमारी होती है जिसका इलाज ही संभव है। शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष प्रहलाद दास गुप्ता ने किया। अध्यक्ष ने कहा कि शासन स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर शासन गंभीर है। प्रयास हो रहा है की गरीब असहायों को आसानी से स्वास्थ्य सुविधाएं दी जा सकें। इस तरह के शिविरों का

आयोजन किया जा रहा है। मानसिक समस्याएं दिनों दिन बढ़ती जा रही हैं। जिला अस्पताल में तीन दिनों तक जांच का काम कर रही है। लोग इसका भरपूर लाभ उठाएं। डाक्टरों ने शिविर में आए लोगों को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया। कहा कि मानसिक बीमारी के कारण उत्तेजना एवं अत्यधिक क्रोध आना जैसे लक्ष्णों पर प्रकाश डाला गया। मरीजों एवं तीमारदारों को परामर्श दिया। मनोचिकित्सकीय सामाजिक कार्यकर्ता डा. शांति ने जिला चिकित्सालय में संचालित जिला मानसिक स्वास्थ्य प्रकोष्ठ एवं जिला परामर्श केंद्र के बारे में जानकारी दी। डाक्टर असलम, डॉ अशोक पाराशर डॉ आशुतोष डॉ राकेश जायसवाल डॉ स्वप्निल विपिन कुमार समा फिरदौस आदि लोग मौजूद रहे।

न्याय पंचायत स्तरीय खेलकूद बच्चों ने दिखाया दम खम

ज्ञानुपर। विकास खंड औराई के न्याय पंचायत माधो रामपुर में न्याय पंचायत स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी औराई आशीष कुमार मिश्र ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर किया। प्रतियोगिता मे न्याय पंचायत स्तर के सभी विद्यालय के बच्चे प्रतिभागी रहे। कबड्डी,दौड़, गोला फेक आदि प्रतियोगिता में बच्चों ने दम खम के साथ प्रतिभा का प्रदर्शन किया। विजेता बच्चों को खंड शिक्षा अधिकारी ने पुरस्कृत किया। विशिष्ट अतिथि के रुप में ग्राम प्रधान रविंद्र यादव, पूर्व प्रधान रमाशंकर यादव, सतीश चंद्र पाठक, नोडल शिक्षक संकुल नरेंद्र कुमार मिश्रा, शिक्षक संकुल एवं इंचार्ज प्रधान अध्यापिका पुष्पा अग्रवाल, प्रधानाध्यापक लाल जी शुक्ला, सतीश तिवारी, नवीन कुमार श्रीवास्तव, सभी अध्यापक एवं प्रतिभागी छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

पूर्व चेयरमैन ने अपना जन्मदिन वृद्धाश्रम में मनाया, बृद्धो का लिया आशीर्वाद

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज। ज्ञानपुर के पूर्व चेयरमैन घनश्याम दास गुप्ता ने अपने जन्मदिवस के अवसर पर वृद्धाश्रम पहुंच कर आश्रम में रह रहे बुजुर्गो के साथ अपना जन्मदिन मनाया। ताकि उन्हें भी महसूस होने वाला एकाकीपन थोड़ा कम हो सके। उन्होंने कहा कि यहां ऐसे लोग हैं जिन्हें अलग-अलग कारण से उनके परिवार ने छोड़ दिया है।ऐसे भी लोग है जिनका अब इस दुनिया में कोई नहीं है। लेकिन फिर भी कुछ अनजान उनके भोजन,रहने खाने पीने की व्यवस्था करवाते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो अपना जन्मदिन की खुशी इन्हीं के साथ मनाते हुए इनका आशीर्वाद प्राप्त करने इच्छुक रहते हैं। साथ वृद्धाश्रम में जन्मदिन मनाते हुए घनश्याम दास गुप्ता ने वृद्धजनो को फल मिठाई और का वितरण कर आश्रम में रह रहे बुजुर्गो का आशिर्वाद लिया। साथ में नगर अध्यक्ष श्रीकांत जायसवाल, आदि लोग उपस्थित रहे।

सपा की विधानसभावार समीक्षा बैठक आज

अखंड भारत संदेश

भदोही। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व के निर्देश पर मतदाता सूची को को लेकर 10 नवंबर दिन बुधवार को जिले के तीनों विधानसभा क्षेत्रों में पार्टी द्वारा समीक्षा बैठक की जाएगी। भदोही विधानसभा क्षेत्र में नगर के अजीमुल्लाह चौराहे पर स्थित पार्टी के कैंप कार्यालय में 11 बजे बैठक होगी। इसी तरह ज्ञानपुर विधानसभा क्षेत्र की बैठक एक बजे पार्टी की वरिष्ठ नेत्री डा.नीलम मिश्रा के गोपीगंज स्थित आफिस में होगी।

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के बाद भाजपा में बदल सकती हैं ये चीजें

नई दिल्ली, एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में अगले साल की शुरूआत में 5 राज्यों के साथ होने वाले विधानसभा चुनावों को 2024 के आम चुनाव के लिए भी अहम माना जा रहा है। खुद गृह मंत्री अमित शाह ने पिछले दिनों लखनऊ में आयोजित एक कार्यक्रम में 2024 में मोदी सरकार के सत्ता में वापस आने के लिए इसे अहम बताया था। लेकिन यूपी चुनाव के परिणाम इससे कहीं दूरगामी होंगे।

इसका असर एक तरफ देश की सियासत पर देखने को मिलेगा तो वहीं भाजपा की आंतरिक राजनीति में बड़े बदलाव देखने को मिल सकते हैं। पिछले ही सप्ताह दिल्ली में पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में हुई भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक में भी इस बात के संकेत मिल चुके हैं। इस बैठक में सीएम योगी आदित्यनाथ ने

पार्टी लीडरशिप ने पहले ही दिए संकेत

राजनीतिक प्रस्ताव पेश किया था, जिसे आमतौर पर राष्ट्रीय नेता ही पेश करते रहे हैं। उनकी ओर से प्रस्ताव पेश किए जाने को पार्टी में उनके बढ़ते कद के तौर पर देखा गया।

इसकी एक वजह यह भी थी कि मीटिंग में चुनावी राज्यों से आने वाले वह अकेले सीएम थे, अन्य सभी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ही जुड़े थे। मीटिंग के बाद इस बाबत पूछने पर वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी कहा था कि सीएम योगी देश की सबसे ज्यादा आबादी वाले सूबे के मुखिया हैं। इसके अलावा मुख्यमंत्री के तौर पर भी उनका रिकॉर्ड काफी अच्छा रहा है। साफ है कि सीएम योगी आदित्यनाथ का कद भाजपा में बीते कुछ सालों में बढ़ा है। भाजपा शासित दूसरे राज्यों के मुख्यमंत्रियों के मुकाबले वह देश भर में ज्यादा चर्चित दिखे हैं और बंगाल से लेकर असम तक चुनावों में स्टार प्रचारक के तौर पर उन्हें बुलाया जाता रहा है। यही नहीं हैदराबाद के नगर निगम तक में स्टार प्रचारक के तौर पर उनकी मांग ने दिखाया है कि उनकी लोकप्रियता यूपी के बाहर भी है। ऐसे में यदि वह अपनी लीडरशिप में यूपी में भाजपा को जीत दिलाते हैं तो इससे उनका सियासी कद काफी बढ़ जाएगा। यही नहीं भाजपा में वैकल्पिक नेतृत्व के लिहाज से भी वह एक बड़ा चेहरा होंगे। यूपी में बीते कई महीनों से मोदी, योगी, जय श्रीराम जैसे नारों की गूंज दिखाई देती है। मोदी के साथ योगी का नाम लिया जाना बताता है कि कार्यकताओं में उनकी किस हद तक स्वीकार्यता है। ऐसे में मोदी के बाद भाजपा में वैकल्पिक नेतृत्व की जब चर्चा होती है तो दबी जुबान ही सही, लेकिन अकसर लोग योगी का नाम लेते दिखते हैं। ऐसे में यूपी का चुनाव बेहद अहम हो गया है और यहां मिली जीत योगी आदित्यनाथ के कद को बढ़ा देगी।भाजपा ने 2017 का यूपी विधानसभा चुनाव बिना किसी चेहरे के ही लड़ा था। लेकिन इसके बाद लंबी चली जद्दोजहद के बाद योगी आदित्यनाथ को सीएम के लिए चुना गया था। भाजपा ने तब इस फैसले से चौंका दिया था और गोरखपुर के सांसद रहे योगी ने विधान परिषद से आकर मुख्यमंत्री की कुर्सी संभाली। बिना विधानसभा लड़े वह तब सीएम तो बन गए थे, लेकिन यह पहला मौका है, जब उनके चेहरे पर चुनाव लड़ा जाना है। ऐसे में 2022 का विधानसभा चुनाव भाजपा के अलावा सीएम योगी के करियर का भी फैसला कर देगा।

देशभर में धूमधाम से मनाया जा रहा आस्था का महापर्व छठ

ब्राह्मणों का कोई माई का लाल भक्षण नहीं कर सकता, अपनी ही पार्टी के नेता पर गरजे अनूप मिश्रा

ग्वालियर, एजेंसी)। मध्य प्रदेश में इन दिनों ब्राह्मण-बनियों को लेकर भाजपा के प्रभारी मुरलीधर राव का बयान सुर्खियों में है। विपक्षी दल कांग्रेस तो इसे कैश कराने जुटी ही है।

साथ ही भाजपा में उपेक्षित चल रहे नेताओं ने भी इस पर सियासी तीर साधने शुरू कर दिए हैं। भाजपा में लंबे समय से उपेक्षित चल रहे अनूप मिश्रा ने इसको लेकर बड़ा बयान दे डाला है।

खास बात यह है कि अनूप मिश्रा ने जिस सम्मेलन में यह बयान दिया, उसके चीफ गेस्ट केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ही थे। बता दें कि ग्वलियर के अनूप मिश्रा रिश्ते में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के भांजे हैं। अनूप ने कहाकि कितने आक्रांता आए लेकिन सनातन धर्म को खत्म नहीं कर पाए। उसी तरह ब्राह्मणों का भी कोई माई का लाल भक्षण नहीं कर सकता। कोई यह ना भूले कि हम सुदामा हैं, लेकिन वक्त आने पर हमें परशुराम बनने में भी देर नहीं लगेगीं।

भाजपा व सपा चुनाव को हिंदू और मुसलमान बनाने में जुटी : मायावती

लखनऊ, एजेंसी)। बसपा सुप्रीमो मायावती ने मंगलवार को भाजपा और सपा पर हमला बोलते हुए कहा है कि दोनों पार्टियां चुनाव को हिंदू-मुसलमान बनाने के लिए जिन्ना के साथ अयोध्या गोली बारी का मुद्दा उठा रही हैं। सपा और भाजपा अंदुरुनी रूप से ध्रुवीकरण करने की कोशिश कर रही हैं। दोनों पार्टियों का नेचर जातिवादी और साम्प्रदायिक है। उन्होंने यह भी कहा कि जनता मुझे पांचवी बार मुख्यमंत्री बनाना चाहती है। मायावती ने मंगलवार को पार्टी मुख्यालय पर पत्रकारों से बातचीत में परिवारवाद के मुद्दे पर कहा कि उनके ऊपर परिवारवाद का आरोप लगाया जाना गलत है। मैं मुख्यमंत्री को बताना चाहती हूं कि उनकी तरह मेरा भी परिवार नहीं है, लेकिन उनका परिवार केवल आरएसएस है और मेरा परिवार सर्वसमाज है। भाजपा को जनहित और आम जनता की परवाह होती तो हर दिन पेट्रोल व डीजल की कीमतें नहीं बढ़ाती।

जनता महंगाई भूलने वाली नहीं है और समय आने पर ब्याज सहित सब वसूलेगी।

उन्होंने कहा कि पेट्रोल व डीजल की कीमतें भले ही अभी कम कर दी गई हैं, लेकिन चुनाव बाद वापस ले लिया जाएगा। इसी तरह मुफ्त राशन देने की प्रक्रिया रोक दी जाएगी। उन्होंने कहा कि भाजपा और सपा एक दूसरे पूरक हैं। सपा जब भी सत्ता में होती है भाजपा मजबूत होती है, जबकि बसपा के सत्ता में होने पर भाजपा कमजोर होती है। उन्होंने कहा कि यूपी में सपा और भाजपा जिस तरह से सीटें जितने का दावा कर रही है। उससे चुनाव आयोग को यूपी की सीटें 403 से बढ़ाकर 1000 कर देना चाहिए। उन्होंने कहा कि यूपी विधानसभा चुनाव नजदीक देखकर प्रदेश की जनता को लुभाने और बरगलाने का नाटक शुरू हो गया है। भाजपा सरकार द्वारा आधे अधूरे कामों का शिलान्यास और लोकार्पण से उनकी हताशा साफ दिखाई दे रही है।

कोयला घोटाला केस में ईडी का बड़ा ऐक्शन, जब्त की टीएमसी नेता विनय मिश्रा की 9 करोड़ की संपत्ति

नई दिल्ली, एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बड़ा ऐक्शन लेते हुए तृणमूल कांग्रेस के नेता विनल मिश्रा की 9 करोड़ रुपए की संपत्ति जब्त कर ली है। ईडी के अधिकारियों ने बताया कि पश्चिम बंगाल में अवैध कोयला खनन और मनी लॉन्ड्रिंग रोधी कानून के तहत ये कार्रवाई की गई है। ईडी के अधिकारियों ने मंगलवार को बताया कि टीएमसी नेता विनय मिश्रा, उनके भाई विकास और मुख्य आरोपी अनूप मांझी की 9.28 करोड़ रुपये की संपत्ति कुर्क की गई है। जांच एजेंसी ने संपत्तियों को कुर्क करने के लिए धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत दो आदेश जारी किए थे। ईडी ने एक बयान में कहा कि पहली कुर्की में उत्तर प्रदेश के अमेठी और पश्चिम बंगाल के कोलकाता में विनय मिश्रा और विकास मिश्रा के सात भूखंड और दो फ्लैट शामिल हैं, जिनकी कीमत तकरीबन 48.57 लाख रुपये है।

श्रीनगर यूनेस्को की क्रिएटिव सिटीज नेटवर्क की सूची में हुआ शामिल, पीएम मोदी ने दी बधाई

श्रीनगर, एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी श्रीनगर दुनियाभर के उन 49 शहरों में से एक है जिन्हें सोमवार को यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज नेटवर्क (यूसीसीएन) में शामिल किया गया। इस सूची में 246 शहर पहले से हैं। इन 49 शहरों को इस सूची में यूनेस्को के महानिदेशक ऑद्रे अजॉले द्वारा विकास के केंद्र में संस्कृति और रचनात्मकता को बनाए रखने की उनकी प्रतिबद्धता और ज्ञान एवं अच्छी प्रथाओं को साझा करने संबंधी मान्यता देने के बाद शामिल किया गया।

यूनेस्को की वेबसाइट पर जारी एक विज्ञप्ति के मुताबिक अब ऐसे शहरों की संख्या 295 है जो 90 देशों से हैं। यहां संस्कृति और रचनात्मकता, हस्तशिल्प और लोक कलाओं, साहित्य, संगीत आदि में सतत शहरी विकास के लिए निवेश किया जाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शिल्प और

लोक कला श्रेणी में यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज नेटवर्क (यूसीसीएन) में शामिल होने के लिए श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर को बधाई दी है।

यूनेस्को के साथ सहयोग के लिए भारतीय राष्ट्रीय आयोग (आईएनसीसीयू) ने इस सूची में शामिल करने के लिए श्रीनगर के साथ ग्वालियर का नाम भी भेजा था। श्रीनगर के महापौर जुनैद आजिम मट्टू ने श्रीनगर को प्रतिष्ठित सूची में शामिल किए जाने की खबर ट्विटर के जरिए दी। इस सूची में मुंबई और हैदराबाद को अक्टूबर 2019 में शामिल किया गया था।

किसानों के लिए सीएम योगी का बड़ा ऐलान, सरकार जल्द भेजेगी खातों में पैसा

बदायूं, शाहजहांपुर, एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को प्रदेश की पिछली सरकारों पर जोरदार हमला बोला। कहा कि पहले परिवार के लोगों ने नौकरी को वसूली का माध्यम बना लिया था। भाजपा सरकार ने साढ़े चार साल में साढ़े चार लाख नौकरियां दीं। किसी भी बेरोजगार को एक भी पैसा नहीं देना पड़ा। 2012 में सपा सरकार बनने के बाद हर जिले में दंगा होता था। हमने प्रदेश को दंगा मुक्त बनाया। बहन-बेटियां सुरक्षित नहीं थीं। गरीबों- किसानों के बारे में कभी नहीं सोचा गया। भाजपा किसानों के सम्मान की लड़ाई लड़ रही है। बारिश-बाढ़ से बर्बाद फसल का मुआवजा दिया जाएगा। जल्दी ही किसानों के खातों में पैसा आएगा। मुख्यमंत्री ने बदायूं जिले में 1328 करोड़ और शाहजहांपुर में 495 करोड़ की परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया।

चार लाख युवाओं को नौकरियों दी, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाओं की भी भागीदारी है। पहले त्योहारों पर दंगे होते थे, कर्फ्यू लगता था। सपा की सरकार आते ही रामजन्मभूमि पर हमला करने वालों से मुकदमा वापस लिया गया था। शासन के फरमान जारी हो जाते थे कि होली बारह बजे के बाद नहीं खेलोगे, दीपावली पर दस बजे के बाद पटाखे नहीं छोड़ोगे। अयोध्या जाने से लोग घबराते थे। आज आपने देखा होगा कि साढे. चार साल में पर्व और त्योहार शांतिपूर्वक मनाए जा रहे हैं। कोई आतंकी वारदात नहीं है, कोई दंगा नहीं है। त्योहारों पर अब दीये जलाये जाते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को पहले कोई नहीं पूछता था। आज हमारे विधायक, सांसद 24 घंटे में मदद देते हैं। हमारी सरकार में गन्ना भुगतान हो रहा है। मिलें शुरू हो गई हैं। किसानों के साथ कोई अन्याय नहीं होने देंगे। इस बार धान केंद्र पिछले साल से ज्यादा बनाए गए हैं। अगर किसानों की शिकायत मिली तो कड़ी कार्रवाई होगी। 24 घंटे बिजली देने की बात कही। बाढ़-बारिश से बर्बाद फसल का मुआवजा शीघ्र किसानों के खाते में डाल दिया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत को बदलते सबने देखा है। एक समय वह था, जब सरकारें दुश्मन से आंख चुराती थीं, सरकारें चुप रहती थीं।

यूपी में पहले दंगे होते थे, अब त्योहार शांतिपूर्वक मनाए जाते हैं : योगी आदित्यनाथ

बदायूं , एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को आरोप लगाया कि राज्य की पूर्ववर्ती समाजवादी पार्टी सरकार में दंगे होते थे और आतंकवादियों के मुकदमे वापिस होते थे लेकिन अब सभी त्योहार एवं पर्व शांतिपूर्वक मनाये जाते हैं। सीएम ने कहा कि अयोध्या हमारी पहचान है, जिस अयोध्या में लोग जाने से घबराते थे आज वहां मनाये गये दीपावली के त्योहार ने देश और दुनिया को अपनी ओर आकर्षित किया है। मुख्यमंत्री ने मंगलवार को बदायूं में विकास योजनाओं के लोकार्पण शिलान्यास कार्यक्रम में कहा कि सरकारों की सोच होती है, याद करिये समाजवादी पार्टी की सरकार 2012 में आयी थी उसने पहला काम क्या किया था? सबसे पहले कोसीकंला का दंगा हुआ था, बरेली का दंगा, मुजफ्फरनगर में दंगा, लखनऊ में दंगा, कानपुर में दंगा। कोई जनपद ऐसा

बुलंदशहर : घोड़ी में मिली ग्लैंडर्स फारसी बीमारी, रिपोर्ट पॉजिटिव आने से हड़कंप

बुलंदशहर, एजेंसी)। पशुओं में तेजी से फैलने ग्लैंडर्स फारसी रोगी ने जिले में दस्तक दे दी है। ऊंचागांव के भड़काऊ गांव में एक पशुपालक की घोड़ी की रिपोर्ट ग्लैंडर्स फारसी पॉजिटिव आई है। रिपोर्ट मिलने के बाद विभाग में हड़कंप मच गया है और गांव में विभाग ने अलर्ट घोषित कर दिया है। एक टीम को घोड़ी की निगरानी के लिए लगा दिया गया है।

हिसार से फिर घोड़ी के ब्लड के सैंपल मांगे गए हैं, फिर से जांच रिपोर्ट आएगी। ग्लैंडर्स फारसी बीमारी गधे और घोड़ों में पाई जाती है, इस बीमारी से पशुओं के शरीर में गलन फैल जाती है और वह सीधे मौत के मुंह में चला जाता है। पशुओं में यह बीमारी फैलने के बाद मनुष्य के शरीर

को भी पकड़ लेती है। पशुपालन विभाग ने गत दिनों जिले के जांच के लिए घोड़ों के सैंपल हिसार लैब भेजे थे, मगर इसमें एक घोड़ी की ग्लैंडर्स फारसी की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है।

विभाग के अनुसार यह सैंपल ऊंचागांव ब्लॉक के भड़काऊ गांव से घोड़ी का भेजा गया था। हिसार से रिपोर्ट मिलने के बाद विभाग ने गांव में अलर्ट घोषित कर दिया है और पशुपालक व उसके परिवार को घोड़ी से दूर रहने के लिए कहा गया है। विभाग की एक टीम ने गांव में पहुंचकर घोड़ी के स्वास्थ्य की जांच की है।

पाकिस्तान में कट्टरपंथियों ने जिस मंदिर में लगा दी थी आग, पुनर्निर्माण के बाद खुद चीफ जस्टिस ने किया उसका उद्घाटन

पेशावर, एजेंसी)। पाकिस्तान में जिस दशकों पुराने हिंदू मंदिर में इस्लामिक कट्टरपंथियो ने तोड़फोड़ कर आग लगा दी थी, अब उसका पुनर्निर्माण कर फिर से भक्तों के लिए खोल दिया गया है। खुद पाकिस्तान के चीफ जस्टिस गुलजार अहमद ने पुनर्निर्माण किए गए इस हिंदू मंदिर का उद्घाटन किया है। बताया जाता है कि इस मंदिर का निर्माण लगभग 100 साल पहले किया गया था। तब से इसमें हिंदू भक्त पूजा-अर्चना करते आ रहे हैं। इस बीच साल 2010 में पाकिस्तान के कुछ स्थानीय कट्टरपंथियों ने खैबर पख्तूनख्वा के कराक जिले के तेरी गांव में सदियों पुराने इस श्री परम हंस जी महाराज मंदिर में तोड़फोड़ करके आग लगा दी थी। घटना के बाद चीफ जस्टिस ने इस मंदिर के पुनर्निर्माण का आदेश दिया था। मंदिर में तोड़फोड़ की घटना के बाद चीफ जस्टिस अहमद ने अधिकारियों को मंदिर के पुनर्निर्माण का आदेश तो दिया ही था साथ में हमला करने वालों से नुकसान की भरपाई के लिए पैसा वसूली का भी निर्देश दिया था। मंदिर तोड़े जाने

को लेकर पाकिस्तान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी शर्मिंदगी झेलनी पड़ी थी। एक्सप्रेस ट्रिब्यून की रिपोर्ट के मुताबिक सोमवार को पाकिस्तान के मुख्य न्यायाधीश अहमद ने दिवाली त्योहार मनाने और हिंदू समुदाय के सदस्यों के साथ एकजुटता व्यक्त करने के लिए पुनर्निर्मित मंदिर में आयोजित एक भव्य समारोह में शामिल हुए। रिपोर्ट के मुताबिक उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए, मुख्य न्यायाधीश अहमद ने कहा कि पाकिस्तान के सर्वोच्च न्यायालय ने हमेशा अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के लिए कदम उठाए हैं और वह भविष्य में भी ऐसा करना जारी रखेगा। उन्होंने कहा कि संविधान के अनुसार, हिंदुओं को पाकिस्तान में अन्य धर्मों के लोगों के समान जैसा ही समान अधिकार प्राप्त है। अल्पसंख्यक समुदायों को धार्मिक स्वतंत्रता की सुरक्षा सुनिश्चित करने का आश्वासन देते हुए चीफ जस्टिस ने कहा कि किसी को भी किसी अन्य समुदाय के धार्मिक पूजा स्थल को नष्ट करने या नुकसान पहुंचाना के अधिकार नहीं है। समुदाय ने मुख्य न्यायाधीश को पगड़ी और डिजिटल कुरान भेंट की।

जिसे दुनिया ने किया संरक्षित उन्हें पाकिस्तान ने दी मारने की इजाजत

नई दिल्ली, एजेंसी)। जिसे दुनिया ने संरक्षित कर रखा है, उसे पाकिस्तान ने मारने की इजाजत दी है। पाकिस्तान ने अरब के 14 शख्सियतों को अनुमति दी है कि वो सोन चिरैया का शिकार कर सकते हैं। पाकिस्तानी अखबार 'डॉन' ने बताया है कि पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय ने प्रांतीय सरकार को सिफारिशें भेजी हैं कि वो वन कानूनों के तहत इन पंक्षियों के शिकार की अनुमति दे। सिंध प्रांत में इन पंक्षियों के शिकार की इजाजत दी है।पाकिस्तानी अखबार ने कहा है कि इस साल संघीय सरकार ने अरब के 14 शख्सियतों को अनुमति दी है कि वो इन पंक्षियों का शिकार कर सकते हैं। जिन 14 शख्सियतों का नाम इस सूची में शामिल है, उसमें कतर के प्रधानमंत्री, यूएई के राष्ट्रपति भी शामिल हैं। सिंध सरकार ने दो हफ्ते पहले प्रांतीय कैबिनेट की एक बैठक भी इस संबंध में की थी। एक वाइल्डलाइफ एक्सपर्ट ने

अरब के 14 अहम शख्सियतों कर सकेंगे सोन चिरैया का शिकार

कहा कि इस विवादित विषय पर कोर्ट में सुनवाई के बाद सोन चिरैया की शिकार की अनुमति दी गई। अब इन पंक्षियों के शिकार की इजाजत देना या ना देना प्रांतीय सरकार पर डिपेंड करता है।

पिछले साल पाकिस्तानी सरकार ने सऊदी अरब के प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान समेंत कुछ अन्य लोगों को सोन चिरैया के शिकार की अनुमति दी थी। शिकारियों ने ब्लूचिस्तान और पंजाब प्रक्षेत्र को सोन चिरैया के शिकार के लिए चुना है। साल 2020 में वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर-पाकिस्तान ने अपने बयान में इन पंक्षियों के शिकार पर तुरंत प्रतिबंध लगाने के लिए कहा था।

अफगानिस्तान के लिए विशेष अमेरिकी प्रतिनिधि जल्द भारत दौरे पर आएंगे, क्यों अहम है यह यात्रा

वॉशिंगटन, एजेंसी)। अफगानिस्तान के लिए अमेरिका के विशेष दूत टॉम वेस्ट ने कहा है कि वह जल्द ही भारत दौरे पर जाने वाले हैं। उन्होंने कहा है कि वह रूस और पाकिस्तान की यात्रा भी करने वाले हैं। रूसी समाचार एजेंसी स्पूतनिक की रिपोर्ट मुताबिक अफगानिस्तान के लिए अमेरिका के नए विशेष प्रतिनिधि टॉम अफगानिस्तान के हालात को लेकर भारत सहित अन्य देशों के दौरे पर जाएंगे। टॉम ने ट्वीट कर कहा है कि वह 9 नवंबर को यूरोप और एशिया के दौरे पर जा रहे हैं ताकि अफगानिस्तान के सहयोगियों और भागीदारों के साथ चर्चा की जा सकी।

अंतरराष्ट्रीय समुदाय को प्रभावी होने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। एक और ट्वीट में उन्होंने कहा है कि अफगानिस्तान के लिए अमेरिका के विशेष प्रतिनिधि की भूमिका निभाना सम्मान की बात है। मैं अमेरिका के महत्वपूर्ण हितों को आगे बढ़ाने और अफगान लोगों का समर्थन करने के लिए उत्सुक हूं। बता दें कि टॉम को अफगानिस्तान के विदेश विभाग के विशेष प्रतिनिधि और उप सहायक सचिव के रूप में नामित किया गया था।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025